51 चालीसा संग्रह आरतियों सहित

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार (उ. प्र.)
फोन : (0133) 426297, 426195

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार (उ. प्र.) फोन : 428510

संस्करण : प्रथम, सन् 2000

शब्द सज्जा : जे के प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली, फोन : 3933995

मुद्रक : राजा ऑफ्सेट प्रिंटर्स, विकास मार्ग, दिल्ली-12

© रणधीर प्रकाशन

51 CHALISA SANGRAH AND ARTIYAN
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (India)
<table>
<thead>
<tr>
<th>चालीसा क्रम</th>
<th>आरती क्रम</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>देवता खण्ड</td>
<td>देवता खण्ड</td>
</tr>
<tr>
<td>१. श्री गणेश</td>
<td>१. श्री गणेश</td>
</tr>
<tr>
<td>२. श्री राम</td>
<td>२. श्री रघुवर</td>
</tr>
<tr>
<td>३. श्री शिव</td>
<td>३. श्री शिव</td>
</tr>
<tr>
<td>४. श्री हनुमान</td>
<td>४. बजरंग बली (हनुमान)</td>
</tr>
<tr>
<td>५. हनुमानाध्यक्ष, बजरंग बाण</td>
<td>५. हनुमान (बजरंग बली)</td>
</tr>
<tr>
<td>६. श्री कृष्ण</td>
<td>६. श्री कृष्ण</td>
</tr>
<tr>
<td>७. श्री विष्णु</td>
<td>७. श्री विष्णु</td>
</tr>
<tr>
<td>८. श्री गोपाल</td>
<td>८. श्री गोपाल</td>
</tr>
<tr>
<td>९. श्री ब्रह्मा</td>
<td>९. श्री ब्रह्मा</td>
</tr>
<tr>
<td>१०. श्री शानि (१)</td>
<td>१०. श्री शानि देव (१)</td>
</tr>
<tr>
<td>११. श्री शानि (२)</td>
<td>११. श्री शानि देव (२)</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>५५ चालीसा संग्रह एवं आरतियाँ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१२. श्री भैरव</td>
</tr>
<tr>
<td>१३. श्री बटुक भैरव</td>
</tr>
<tr>
<td>१४. श्री सूर्य</td>
</tr>
<tr>
<td>१५. श्री नवग्रह</td>
</tr>
<tr>
<td>१६. श्री विश्वकर्मा</td>
</tr>
<tr>
<td>१७. श्री रविदास</td>
</tr>
<tr>
<td>१८. श्री गोरख नाथ</td>
</tr>
<tr>
<td>१९. श्री जाहरवीर</td>
</tr>
<tr>
<td>२०. श्री प्रेतराज सरकार</td>
</tr>
<tr>
<td>२१. श्री बालाजी</td>
</tr>
<tr>
<td>२२. श्री साई</td>
</tr>
<tr>
<td>२३. श्री गिरिराज</td>
</tr>
<tr>
<td>२४. श्री महावीर (तीर्थकर)</td>
</tr>
<tr>
<td>२५. श्री परशुराम</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
</tr>
<tr>
<td>२६</td>
</tr>
<tr>
<td>२७</td>
</tr>
<tr>
<td>२८</td>
</tr>
<tr>
<td>२९</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>३०</td>
</tr>
<tr>
<td>३१</td>
</tr>
<tr>
<td>३२</td>
</tr>
<tr>
<td>३३</td>
</tr>
<tr>
<td>३४</td>
</tr>
<tr>
<td>३५</td>
</tr>
<tr>
<td>३६</td>
</tr>
<tr>
<td>३७</td>
</tr>
<tr>
<td>३८</td>
</tr>
<tr>
<td>३९</td>
</tr>
<tr>
<td>४०</td>
</tr>
<tr>
<td>४१</td>
</tr>
<tr>
<td>४२</td>
</tr>
<tr>
<td>४३</td>
</tr>
<tr>
<td>४४</td>
</tr>
<tr>
<td>४५</td>
</tr>
<tr>
<td>४६</td>
</tr>
<tr>
<td>४७</td>
</tr>
<tr>
<td>४८</td>
</tr>
<tr>
<td>४९</td>
</tr>
<tr>
<td>५०</td>
</tr>
<tr>
<td>५१</td>
</tr>
</tbody>
</table>
श्री गणेश चालीसा

॥ दोहा ॥
जय गणपति सदगुण सदन, करि वर बदन कृपाल।
विभ्र हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

॥ चोपाई ॥
जय जय जय गणपति गणराजूः मंगल भरण करण सुभ काजू।
जय गजबदन सदन सुखदाता, विश्वविनायक बुद्धि विधाता।
वक्र तुष्ण शुचि शुष्ण सुहावन, तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन।
राजत मणि मुक्तन उर माला, स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला।
पुष्कर पाणि कुठार त्रिशूलं, मोदक भोग सुगन्धित फूलं।
सुन्दर पीताम्बर तन साजित, चरण पादुका मुनि मन राजित।
धनि शिव सुवन पडनन भ्राता, गौरी ललन विश्व विख्याता।

श्री गणेश चालीसा

ॠतृकोष तव चंद्र सुधारे, मूषक वाहन सोहत द्वारे।
कह्यां जनम शुभ कथा तुम्हारी, अति शुचि पावन मंगलकारी।
एक समय गिरि राज कुमारी, पुत्र हेतु तप कौन्हें भारी।
भयो जय जय पूर्ण अनुपा, तब पहुँचो तुम धरि द्विज रूपा।
अतिधि जानि के गौरी सुखारी, बहु विधि सेवा करी तुम्हारी।
अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा, मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा।
मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला, बिना गर्भ धारण यहि काला।
गणनायक गुण ज्ञान निधाना, पूजः प्रथम रूप भगवाना।
अस के हि अनतर्धान रूप है, पतना पर बालक स्वरूप है।
बनि शिशु रुद्रन जबहि तुम ठाना, लखि मुख सुख नहि गौरी समाना।
सकल मग भून सुख मंगल गावहि, नभ ते सुरन सुपन वर्षावहि।
शाम्भु उमा बहु दान लुटावहि, सुर मुनिनन सुत देखन आवहि।
लिखि अति आनंद मंगल साजा, देखन भी आए शनि राजा।
निज अवगुण गनि शनि मन माहीं, बालक देखन चाहत नाहीं।
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो, उत्सव मोर न शनि तुहि भायो।
कहन लगे शनि मन सकुचाई, का करिहें शिशु मोहि दिखाई।
नाहि विश्वास उमा उर भयं, शनि सौं बालक देखन कहाँ।
पड़ताहि शनि तृणकोण प्रकाशा, बालक सिर उड़ि गयो अकाशा।
गिरिजा गिरी विकल है धरणी, तो दुःख दशा गयो नाहि वरणी।
हाहाकार मच्छो कैलाशा, शनि कीन्हें लिखि सुन का नाशा।
तुरंत गरुड चढ़ि विष्णु सिधाये, काटि चंकु सो गजशिर लाये।
बालक के धड़ ऊपर धारयो, प्राण मन पढ़ि शंकर डारयो।
नाम ‘गणेश’ शम्भु तब कीन्हें, प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीनें।
बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा, पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा।

चले षडानन, भरमि भुलाई, रचे बैठि तुम बुद्धि उपाई।
चरण मातू पितु के धर लीनें, तिनके सात प्रदक्षिणा कीन्हें।
धनि गणेश कहि शिव हिय हथ्यों, नभ ते सुरन सुमान बहु वस्त्रों।
तुम्हारी महिमा बुद्धि बढ़ाई, शेष सहस मुख सके न गई।
मैं मति हीन मलिन दुखारी, करुँ कौन विधि विनय तुम्हारी।
भजत ‘राम सुन्दर’ प्रभुदासा, जग प्रयाग ककर दुर्वासा।
अब प्रभु दया दीन पर कीजे, अपनी भक्ति शक्ति कुछ दीजे।
॥ लोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धर ध्यान।
नित कव मंगल गृह बसैं, लहै जगत सनमाण।
सम्बन्ध अपना सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूर्ण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश।
॥
आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
पान चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा, लड़वन का भोग लगे सत्त करे सेवा।
एकदर्द दयावन्त चार भुजा धारी, मस्तक सिंदूर सोहे मूसे की सवारी।
अन्धन को आंख देन कोढ़न को काया, बांझन को पृथ के भुज निर्धन को माया।
दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी, कामना को पूरा करो जग बलिहारी।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,

सूरश्रयाम शरण आये सुफल कीजे सेवा।

श्री राम चालीसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी, सुनि लीजे प्रभु अरज हमारी।
निशि दिन ध्यान धरे जो कोई, ता सम भक्त और नहीं होई।
ध्यान धरे शिवजी मन माहीं, ब्रह्मा इन्द्र पार नहीं पाहीं।
जय जय जय रघुनाथ कुपाला, सदा करो सत्तन प्रतिपाला।
दूत तुम्हार बीर हनुमान, जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना।
तव भुज दण्ड प्रचण्ड कुपाला, रावण मारि सुर्य प्रतिपाला।
तुम अनाथ के नाथ गोसाई, दीनन के हो सदा सहाई।
ब्रह्माण्डिक तव पार न पावैं, सदा ईश तुम्हारो यश गावैं।
चारिद वेद भरत हैं साखी, तुम भक्तन की लज्जा राखी।
गुण गावत शारद मन माहीं, सुरपति ताको पार न पाहीं।
नाम तुम्हार लेत जो कोई, ता सम धन्य और नहीं होई।
राम नाम है अपरम्परा, चारिद वेदन जाहि पुकारा।
गणपति नाम तुम्हारे लीन्है, तिनको प्रथम पूज्य तुम कीहै।
शेष रत्न नित नाम तुम्हारा, महि को भार शीश पर धार।
फूल समान रहत सो भारा, पाव न कोठ तुम्हारे पारा।
भरत नाम तुम्हारे उर धारे, तासौं कबहु न रण में हारो।
नाम श्रान्तुह सूचय प्रकाशा, सुनिश्चित होत श्रुथ कर नाशा।
लपन तुम्हारे आजाकारी, सदा करत सत्तन रखारी।
ताते रण जीते नहीं कोई, लुभ जुरे यमहूं किन होई।
महालक्ष्मी धर अवतारा, सब विधि करत पाप को छारा।
सीता नाम पुनिता गायो, भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो।
घट सों प्रकट भई सो आई, जाको देखत चन्द्र लजाई।
सो तुमे नित पाँव पलटत, नवों सिद्धि चरण में लोट।
सिद्धि अठारह मंगलकारी, सो तुम पर जावे बलिहारी।
औरु जो अनेक प्रभुताई, सो सीतापति तुम्हि बनाई।

इच्छा ते कोटिन संसारा, रचत न लागत पल की वारा।
जो तुम्हे चरण चित लावै, ताकी मुक्ति अवसि हो जावै।
जय जय जय प्रभु ज्यौति स्वरुपा, निर्गुण ब्रह्म अर्क्षार्ध अनूपा।
सत्य सत्य सत्य ब्रत स्वामी, सत्य सनातन अन्तर्यामी।
सत्य भजन तुम्हो जो गावै, सो निशच्च चारों फल पावै।
सत्य श्रापठ गौरीपति कीहैं, तुमने भक्तिहिं सब सिद्ध दीहैं।
सुनहु राम तुम तत्त हमारे, तुमहि भरत कुल पूज्य प्रचारे।
तुमहि देव कुल देव हमारे, तुम गुरुदेव प्राण के घारे।
जो कुछ हो सो तुम ही राजा, जय जय जय प्रभु राखो लाजा।
राम आत्मा पोषण होरे, जय जय जय दशरथ दुलारे।
ज्ञान हदय दो ज्ञान स्वरुपा, नमो नमो जय जगापति भूपा।
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा, नाम तुम्हार हरत संतापा।
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया, बजी दुन्दुभी शांत्र बजाया।
श्री राम चालीसा

सत्य सत्य तुम सत्य सनातन, तुम ही हो हमारे तन मन धन।
याको पाठ करे जो कोई, ज्ञान प्रकट ताको उर होई।
आवागमन मिटे तिहि केरा, सत्य वचन माने शिव मेरा।
और आस मन में जो होई, मनवांछित फल पावे सोई।
तीनां हिन्दु काल ध्यान जो ल्यावें, तुलसी दल अरु फूल चढ़ावें।
साग पत्र सो भोग लगावें, सो नर सकल सिद्धता पावें।
अन्त समय रघुवर पुर जाई, जहां जन्म हरि भक्त कहाई।
श्री हरिदास कहै अरु गावे, सो बैकुण्ठ धाम को जावें।

॥ दौष्ट॥

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय।
हरिदास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय॥
राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय।
जो इंचा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय॥

आरती श्री रघुवर जी की

आरती कीजे श्री रघुवर जी की, सत् चितु आनंद शिव सुन्दर की।
दशरथ तनय कौशल्या नन्दन, सुर मुनि रक्षक देह तिकनदन।
अनुगत भक्त भक्त उर चन्दन, मयादा पुरुषोतम वर की।
निर्गुण सुगुण अनूप रूप निधि, सकल लोक वनित विभिन विधि।
हरण शोक-भय दायक नव निधि, माया रहित दिव्य नर वर की।
जानकी पति सुर अधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति।
विश्व वन्ध अवह अमित गति, एक मात्र गति सचाराचर की।
शरणागत वस्त्रल वृत्तारी, भक्त कल्य तक्वर असुरारी।
नाम लेत जग पावनकारी, वार सखा दीन दुःख हर की।

॥ ॥
श्री शिव चालीसा

॥ दोहा ॥

tय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभ्य वरदान॥

॥ चौपाई ॥

tय गिरजापति दीनदयाला, सदा करत सन्तून प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुंडल नागफनी के।
अंग गोर शिर गंग बहाये, मुण्डमाल तन छार लगाये।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे, छवि को देख नाग मुनि मोहे।
मेना मातु कि हवे दुलारी, वाम अंग सोहत छवि न्यारी।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी, करत सदा शत्रु ज्ञान कारी।
नन्द गणेश सोहे तह कैसे, सागर मध्य कमल हैं तैसे।

कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छवि को कहि जात न काऊ।
देवन जबहाँ जाय पुकारा, तबहाँ दुःख प्रभु आप निवारा।
क्या उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिलि तुम्हं जुहारी।
तुरुत गडानन आप पठायड, लव निमेष महं मारि गिरायड।
आप जलन्धर असुर संहारा, सुयश तुम्हार विदित संसारा।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, सबहि कृपा कर लीन बचाई।
क्या तपाहि भागीरथ भारी, पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।
दानिन महं तुम सम कोई नाहि, सेवक अस्तुति करत सदाहि।
वेद नाम महिमा तव गाई, अकथ अनादि भेद नाहि पाई।
प्रगटि उद्धि मंथन में ज्वाला, जे सुरासुर भये विहाला।
कीन्हि दया तह करि सहाई, नीलकण्ठ तब नाम कहाई।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा, जीत के लंक विभीषण दीन्हा।
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी।
एक कमल प्रभु राखे जोई, कमल नयन पूजन चहें सोई।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भए प्रसन दिए इच्छित वर।
जै जै अनन्त अविनाशी, करत कुपा सबकी घटवासी।
दुःख सकल नित मोहि सतावे, भ्रमत रहें मोहि चैन न आवें।
त्राहि त्राहि में नाथ पुकारो, यहि अवसर मोहि आन उबारो।
लै त्रिशूल श्रवन को मारो, संकट से मोहि आन उबारो।
मातु पिता भ्राता सब कोई, संकट में पृछत नहिं कोई।
स्वामी एक है आस तुम्हारी, आय हरहु नम्म संकट भराई।
धन निधन को देत सदाहें, जो कोई जाँचे वो फल पाहें।
अस्तुति केहि विधि करों तिहारी, क्षमयु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशन, मंगल कारण विच विनाशन।
योगी यति मुनि ध्यान लगावें, नारद शारद शीश नवावें।
नमो नमो जय नमो शिवाये, सुर भ्राह्मादिक पार न पाए।

जो यह पाठ करे मन लाई, तापर होत हैं शाम्भु सहाई।
ऋषिया जो कोई हो अधिकारी, पाठ करे सो पावन हारी।
पुत्रहीन इच्छा कर कोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।
पंडित त्रयोदशी को लावे, ध्यान पूर्वक होम करावे।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा, तन नहिं ताके रहे कलेशा।
धूप दीप नैवेद्य चढ़वें, शंकर समुख पाठ सुनावे।
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन वास शिवपुर में पावे।
कहे अयोध्या आस तुम्हारी, जानि सकल दुःख हरहु हमारी।

|| तोहा ||

नित नेम कर प्रातः ही, पाठ करों चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश।
मगसर छठी हेमन्त त्रहु, संवत चौंसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण।

||
आरती श्री शिव जी की

जय शिव ओंकारा, भज हर शिव ओंकारा, ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अंबर्जी धारा।
एकानन चतुरान्न पंचानन राजे, हंससन गरुड़सन वृषभानि साजे।
दो भूज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे, तीनों रूप निरंगते त्रिभुवन मन मोहे।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, चंदन पूणम चंद चंदा सोहे त्रिपुरारी।
श्वेताम्बर पीताम्बर वाघम्बर अंगे, सन्तातिदिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।
करके मधे कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी, सुखारी दुखारी जगपालन कारी।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।
त्रिगुण शिव जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।

श्री हनुमान चालीसा

|| दोहा ||
श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारिं।
बुद्धहीन तनु जानिके, सुमिरों पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देऊँ मोहि, हरहु क्लेश विकार।

|| चौपाई ||
जय हनुमान ज्वान गुनसागर, जय कपोल तिहुं लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बलभामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमारिन निवार सुमिति के संगी।
कंचन चरण बिराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा।
हाथ ब्रज औ ध्वजा बिराजै, काँधे मूँझ जनेऊ साजै।
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वन्दन।
विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर।
प्रभु चरित्र सुनिवें को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया।
सूक्ष्म रुप धरि सिंयांहि दिखावा, विकट रुप धरि लंक जरावा।
भौम रुप धरि असुर संहरे, रामचन्द्र के काज संवारे।
लाय संजीवन लखन जियाये, श्री रघुबीर हरिष उर लाये।
रघुपति कीन्हि बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत सम भाई।
सहस बदन तुम्हरो जस गावें, अस वाहि श्रीपति केंद्र लगावें।
सनकादिक बहादुर मुनीशा, नारद शारद सहित अहीसा।
यम कुबेर दिगपाल जहाँं ते, कवि कोबिद कहि सके कहाँं ते।
तुम उपकार सुप्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीना।
तुम्हरो मन विभेषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना।
जुग सहस्र योजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांधि गए अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ज़ा बिनु पैसारे।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक कावू को डरना।
आपन तेज सम्हारे आपैं, तीनों लोक हाँक तें काँपैं।
भूत पिषाच निकट नहीं आवैं, महाबीर जब नाम सुनावैं।
नासे रोग हैं सब पीरा, जपत निरंतर हनुमान बीरा।
संकट ते हनुमान छड़ावैं, मन क्रम वचन ध्यान जो लावैं।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा।
और मनोरथ जो कोई लावैं, सोई अमित जीवन फल पावैं।
चारों जुग परताप तुम्हारा, हैं परसिद्ध जगत उजियारा।
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता।
श्री हनुमान चालीसा

राम रसायन तुम्हे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा।
तुम्हे भजन राम को भावे, जनम जनम के दुख बिसरावे।
अतं काल रघुवर पुर जाईं, जहां जनम हरि भक्त कहाईं।
और देवता चिंत न धरहे, हनुमत सेह सर्व सुख करहे।
संकट करे मिटे सब पीरा, जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।
जय जय जय हनुमान गोसाँई, कृपा करहु गुरुदेव की नाँई।
जो शत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा।
तुलसी दास सदा हरि चेरा, कीजे नाथ हदय महां देरा।

॥ दोहा ॥

पवनतन्य संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हदय बसहु सुर भूप॥

संकटमोचन हनुमानाण्डक

बाल समय रचि भक्ति लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी विनती तब, छूँड़ दियो रचि कष्ट निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

को.१
बालि की त्रास कपीस बसै, गिरिजात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि शाप दियो, तब चाहिये कौन विचार विचारे।
के द्विज रूप निवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो॥

को.२
अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहूँ हम सों जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तत सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्राण उबारो॥

को.३
रावण त्रास दर्द सिय को तब, राक्षस सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगिसु, दे प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को. ४
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे मुन रावण मारो।
लै गृह वैद्य सुखेन समेत, तबै गिरि ब्रेन सुबीर उपारो।
आनि संजीवनि हाथ दर्द तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को. ५
रावण युद्ध अजन कियो तब, नाग कि फांस सबे सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेश तबै हनुमान जु, बन्धन काटि के त्रास निवारो।
को. ६
बंधु समेत जबै अहिरावण, लै रघुनाथ पातल सिरहारो।
देविरहि फूजि भलीविधि सों बलि, देऊ सबे मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तवही, अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को. ७

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नयहि जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को. ८

लाल देह लालीं लसे, अभु धरि लाल लंगूर।
बनं देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।

बजरंग बाण

लोहा।

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सन्नाम।
तेहि के कार्ज सकल शुभ, सिद्र करें हनुमान।
जय हनुमान संत हितकारी, सुन लोज़ प्रभु अरज हमारी।
जन के काज विलम्ब न कीजे, आतुर दौरि महासुख दीजे।
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा, सुरसा बदन पैठि विस्तारा।
आगे जाई लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुर लोका।
जाय विभीषण को सुख दीनहा, सीता निरिख परमपद लीनहा।
बाग उजारि सिन्धु माँह बोरा, अति आतुर यम कातर तोरा।
अक्षय कुमार को मार संहारा, लूम लपेट लंक को जारा।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धवनि सुरपुरू में भई।
अब विलम्ब केहि कारन स्थामी, कुपा करहु उर अन्तर्यामी।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होय दुःख हरहु निपाता।
जय गिरधर जय जय सुखसागर, सुर समूह समरथ भटनागर।
श्री हनु हनु हनु हनुमंत हठीले, बैरिहि मारू वश्र को कीले।
गदा वश्र ले बैरिहि मारो, महाराज प्रभु दास उबारो।
ओंकार हुँकार प्रभु धावो, बंज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।

ओं हीं हीं हीं हनुमान कपीशा, ओं हुँ हुँ हुँ हनु आरिह उर श्रीशा।
सत्य होहु हरि शापथ पाय के, रामदूत धरु मारू धाय के।
जय जय जय हनुमंत अगाठा, दुःख पावत जन केहि अपराधा।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहीं जानत हीं दास तुमहारा।
वन उपवन मग, गिरी गृह माँही, तुम्हे बल हम डरपत नाहीं।
पाँघ परी कर जोरि मनावौँ, यहि अवसर अब केहि गोहावौँ।
जय अन्जिन कुमार बलवत्ता, शंकर सुवन वीर हनुमता।
बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय सदा प्रतिपालक।
भूत प्रेत निशाचर निशाचर, अर्जि वैताल काल मारी मर।
इन्हें मारू तोहि शापथ राम की, राखु नाथ मर्यादा नाम की।
जनक सुता हरिदास कहावो, ताकी शापथ विलम्ब न लावो।
जय जय जय धुनि होत अकाशा, सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा।
चरण शरण कर जोरि मनाओँ, यहि अवसर अब केिहि गोहराओँ।
उदु उदु चलू तोहि राम दुहाई, पाँि परेँं कर जोरि मनाई।
ओं चं चं चं चं चपल चलतंता, ओं हनु हुन हुन हनु हनुमनता।
ओं हं हं हाँक देत कपि चंचल, ओं सं सं सहमि पराने खल दल।
अपने जन को तुरत उबारे, सुमिरत होय आनन्द हमारे।
यह बजरङ्ग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिर कौँ उबारे।
पाठ करे बजरङ्ग बाण की, हनुमत रक्षा करै प्राण की।
यह बजरङ्ग बाण जो जापे, तातेभूत प्रेत सब कापे।
धूप देय अफ जपें हमेशा, ताके तन नहीं रहै कलेशा।
॥ दोहाः ॥
प्रेम प्रतीतहि कपि भजे, सदा धैरे उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिन्द्र करैं हनुमान।

आरती बजरङ्ग बली (हनुमान) जी की
आरती कीजे हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गरवर कापे, रोग दोष जाके निकट न झांके।
अंजनी पुजा महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठायें, लंका जारी सिया सुधि लायें।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत वार न लाई।
लंका जारी असुरि सब मारे, सीता रामजी के काज संबारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी में, लाये संजीवन प्राण उबारे।
पैठि पाताल तोरि जप कारे, अहिरावण की भुजा उखारे।
बाई भुजा असुर सहारे, दाई भुजा सब सन्त उबारे।
सुर नर मुनि जन आरती उतारे, जय जय जय हनुमान उचारे।
कंचन थार कपूर की बाति, आरती करि अजना माई।
जो हनुमान जी की आरती गावें, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावें।
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई।
श्री कृष्ण चालीसा

॥ दोः॥

बंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्ब फल, नयन कमल अभिराम॥
पूर्ण इन्द्र अरविंद मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्ण चन्द्र महाराज॥

॥ चीपाई॥

जय यदुनन्दन जय जगवन्दन, जय वसुदेव देवकी नन्दन।
जय यशुदा सुत नन्द दुलारे, जय प्रभु भक्तन के दुःग तारे।
जय नंदनगर नाग नथिया, कृष्ण कन्हैया धेनु चढ़वा।
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारे, आओ दीनन कष्ट निवारे।
बंशी मधुर अधर धरि टेरी, होवे पूर्ण विनय यह मेरी।

श्री कृष्ण चालीसा

आओ हरि पूनि माखन चालो, आज लाज भारत की राखो।
गोल कपोल चिबुक अरुणारे, मूदु मुस्कान मोहिनी डारे।
रंजत राजिव नयन विशाला, मौर मुकुट बैजती माला।
कुण्डल श्रवण पीतपट आछे, कटि फिकंकणी काछन काछे।
नील जलज सुन्दर तनु सोहै, छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहै।
मस्तक तिलक अलक घुम्बङ्गाले, आओ कृष्ण बांसुरी वाले।
करि पय पान, पूतनहि तारयो, अका बका कागा सुर मारयो।
मधुवन जलत अगिन जब ज्वाला, भरे शीतल, लखितहि नदलाला।
सुरपति जब ब्रज चढ़ो रिसाई, मृगर धार वारि वर्षाई।
लगत-लगत ब्रज चढ़ हाण बहाओ, गोवद्धन नखधारि बचाओ।
लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई, मुख मह चौदह भुवन दिखाई।
दुध कंस अति उत्थ मचायो, कोटि कमल जब फूल मंगायो।
नाथि कालियहि तब तुम लीहैं, चरणचिन्ह दे निर्भय कीहैं।
करि गोपिन संग रास विलास, सबकी पूर्ण करि अभिलाश।
केतिक महा असुर संहारियो, कंसहि केस पकड़ि दै माययो।
मात-पिता की बनि छुड़ि, उग्रसेन कहं राज दिलाई।
महि से मृतक छहं सुत लायो, मातु देवकी शोक मिटायो।
भौमासुर मुर दैत्य संहार, लाये घट दस सहस कुमारी।
दें भीमाहि तृणचौर संहारा, जरासिंधु राक्षस कहं मारा।
असुर बकासुर आदिक मायो, भक्तन के तब कष्ट निवारियो।
दीन सुदामा के दुःख टारयो, तंदुल तीन मृति मुख डारयो।
प्रेम के साग विदुर घर माँगे, दुरौधन के मेवा त्यागे।
लखी प्रेमकी महिमा भारी, ऐसे प्रयाम दीन हितकारी।
मारथ के पारध रथ हांके, लिए चक्र कर नहं बल थांके।
निज गीता के ज्ञान सुनायें, भक्तन हदय सुधा वर्षायें।
मीरा थी ऐसी मतवाली, विष पी गई बजा कर ताली।

राणा भेजा साँप पिटारी, शालिग्राम बने बनवारी।
निज माया तुम विरिहित दिखायो, उरते संशाय सकल मिटायो।
तव शत निन्दा करि तकाला, जीवन मुक्त भयो शिष्युपाला।
जबहि ध्रोपदी तेर लगाई, दीनानाथ लाज अब जाई।
तुराहि वसन बने नदलला, बढ़े चीर भये अरि मुंह काला।
अस अनाथ के नाथ कहेया, दूबत भङ्गर बचावत नढ़या।
सुदर्दास आस उर धारी, दयारूप सीजे बनवारी।
नाथ सकल यम कुमति निवारि, क्षम्हुबेगि अपराध हमारी।
खोलो पट अब दर्शन दीजे, बोलो कृष्ण कहेया की जय।
॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करे उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिन्दि फल, लहै पदारथ चारि॥
आरती श्री कृष्ण जी की

ॐ जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय श्री कृष्ण हरे।

भक्ति के दुःख सारे पल में दूर करे।
परमानन्द मुरारी मोहन गिरि, जय रस रास बिहारी जय जय गिरि।
कर कंकन कंग्रे सोहत कानन में बाला, मोर मुकुट पीताम्बर सोहे बनमाला।
दीन सुदामा तारे दरियों के दुःख टारे, गज के फन्द छड़ाए भव सागर तारे।
हिरण्यकश्प संहारे नरहरि रूप धरे, पाहिन से प्रभु प्रगटे जम के बीच पहे।
केशी कंस विदारे नल कूबर तारे, दामोदर छवि सुन्दर भगवत के प्यारे।
काली नाग नथेया नटवर छवि सोहे, फन-फन नाचा करते नागन मन मोहे।
राज्य उग्रसेन पाये माता शोक हरे, दूपद सुता पत राखी करणा लाज भरे।

ॐ जय श्री कृष्ण हरे।

श्री विष्णु चालीसा

॥ दोहा ॥

विष्णु सुनिए विनय सेवक की चितलाय।
कीरत कुछ वर्णन कहूँ दीजे ज्ञान ब्रताय॥

॥ चौपाई ॥

नमो विष्णु भगवान् खरारी, कप नशावन अरिकल बिहारी।
प्रबल जगत में शक्ति तुम्हारी, त्रिभुवन फैल रही उजियारी।
सुन्दर रूप मनोहर सूरत, सरल स्वभाव मोहनी मूल।
तन पर पीताम्बर अति सोहत, बैजनी माला मन मोहत।
शंख चक्र कर गदा बिराजे, देखत देय असुर दल भाजे।
सत्य धर्म मद लोभ न गाजे, काम क्रोध मद लोभ न छाजे।
सत्त्वकत संज्ञन मनरंजन, दुनुज असुर दुष्टन दल गाजन।
सुख उपजाय कष्ट सब भंजन, दोष मिटाय करत जन सजन।
पाप काट भव सिंधु उतारण, कष्ट नाशकर भक्त उबारण।
करत अनेक रूप प्रभु धारण, केवल आप भक्ति के कारण।
धरणे धैरुष बन तुमहि पुकारा, तब तुम रूप राम का धरा।
भार उतार असुर दल मारा, रावण आदिक को संहारा।
आप वाराह रूप बनाया, हिरण्याक्ष को मार गिराया।
धर मतस्य तन सिंधु बनाया, चौदह रतन को निकलाया।
अमिलख असुरन हुन्द मचाया, रूप मोहनी आप दिखाया।
देवन को अमृत पान कराया, असुरन को चर्बी से बहलाया।
कूम रूप धर सिंधु मझाया, मन्द्राचल गिरि तुरं उठाया।
शंकर का तुम फन्द छुड़ाया, भस्मासुर को रूप दिखाया।
वेदन को जब असुर डुबाया, कर प्रबन्ध उहें ढूंढवाया।
मोहित बनकर खलहि नचाया, उसही कर से भस्म कराया।

असुर जलंधर अति बलदाई, शंकर से उन कीन्ह लड़ाई।
हार पार शिव सकल बनाई, कीन सती से छल खल जाई।
सुमिरन कीन तुमहें शिवारानी, बतलाई सब विपत कहानी।
तब तुम बने मुनीश्वर ज्ञानी, वृद्धा की सब सुरति भुलानी।
देखत तीन दनुज शैतानी, वृद्धा आय तुमहें लपटानी।
हो स्पर्श धर्म क्षति मानी, हना असुर उर शिव शैतानी।
तुमने धुरू प्रहलाद उबारे, हिरणपूकुश आदिक खल मारे।
गणिका और अजामिल तारे, बहुत भक्त भव सिंधु उतारे।
हरहु सकल संताप हमारे, कृपा करहु हरि सिकरजन हारे।
देखहुँ में नित दरश तुम्हारे, दीन बशु भक्तन हितकरै।
चहत आपका सेवक दर्शन, करहु दया अपनी मधुसूदन।
जानूँ नहीं योग्य जप पूजन, होय यज्ञ स्तुति अनुमोदन।
श्री विष्णु चालीसा

शीलदया सन्तोष सुलक्षणा, विदित नहीं खरीबोध विलक्षणा।
करहु को सबिधि पूजन, कुमति विलोक व हृद भीषण।
करहु प्रणाम कोन विधिसुपिरण, कोन भांति में करहु समर्पण।
सुर मुनि करत सदा सिवकाई, हरित रहत परम गति पाई।
दीन दुःखिन पर सदा सहाई, निज जन जान लेव अपनाई।
पाप दोष संताप नशाए, भव बन्धन से मुक्त कराओ।
सुत सम्पति दे सुख उपजाओ, निज चरण का दास बनाओ।
निगम सदा ये विनय सुनावे, पढ़ सुनै सो जन सुख पावे।

आरती श्री विष्णु जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे॥ ॐ॥

जो ध्यानं फल पावे, दुःख विनयें मनका।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका॥ ॐ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूर, आस करूं जिसकी॥ ॐ॥
तुम पुरुष परमात्मा, तुम अतन्तर्यामी।
पारंभ परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन करता।
में मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं गोसाई, तुमको में कुमति॥ ॐ॥
दीनकं पुरुष दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वारा पड़ा तेरे॥ ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हस्ते देव।
श्रद्धाभक्ति बढ़ाओ, सतत की सेवा॥ ॐ॥
श्री गोपाल चालीसा

II दोहा II
श्री राधापद कमल रज, सिर धरि यमुना कूल।
वरणों चालीसा सरस, सकल सुंगल मूल।

II चीपाई II
जय जय पूर्ण ब्रह्म बिहारी, दुष्ट दलन लीला अवतारी।
जो कोई तुम्हारी लीला गावै, बिन श्रम सकल पदारथ पावै।
श्री वसुदेव देवकी माता, प्रकट भये संग हलधर भाता।
मधुरा सों प्रभु गोकुल आये, नदि भवन में बजत बधाये।
जो विष देन पूजना आई, सो मुक्ति दे धाम पठाई।
तुषारवर्त राक्षस संहार, पहं बढ़ाय सकटासुर मारू।
खेल खेल में माटी खाईं, मुख में सब जग दिया दिखाई।

गोपिन घर घर माखन खायो, जसुमति बाल केलि सुख पायो।
ऊँखल सों निज अंग बंधाई, यमलाज्री जड़ योंनि छुड़ाई।
बका अशुर की चोंच विदारी, विकट अघासुर दियो सहारी।
ब्रह्मा बालक वस चुरुये, मोहन को मोहन हित आये।
बाल वस सब बने मुरारी, ब्रह्मा विनय करी तब भारी।
काली नाग नाथि भगवाना, दावानल को कीठों पाना।
सखन संग खेलत सुख पायो, श्रीदामा निज कन्ध चढायो।
चीर हरन करी सीख सिखाई, नख पर गिरवर लियो उठाई।
दरश यज्ञ पतलिन को दीनों, राधा प्रेम सुधा सुख लीनों।
नन्दहि वरण लोक सों लाये, ग्वालन को निज लोक दिखाये।
शाद चन्द्र लख वेणु बजाई, अति सुख दीनों रास रचाई।
अजगर सों पितू चरण छुड़ाये, शंखचूड़ को मूड़ गिराये।
हने आरिष्ठा सुर अरु केशी, व्योमासुर मार्यो छल वेणी।
श्री गोपाल चालीसा  

व्याकुल ब्रज तजि मधुरा आये, मारि कंस यदुवंश बसाये।  
मात पिता की बन्दि छुड़ाई, सांदीपन गृह विद्या फाई।  
पुनि पठयो ब्रज उधी ज्ञानी, प्रेम देखि सुधि सकल भुलानी।  
कौहीं कुबरी सुन्दर नारी, हरि लाये रुक्मिणि सुकुमारी।  
भूमासुर हनि भक्त छुड़ाये, सुरन जीति सुरतक महि लाये।  
दन्तवक्र शिरुपाल संहारे, खग मृग नृग अरु बधिक उधारे।  
दीन सुदामा धनपति कीहों, पारथ रथ सारधि यश लीनहों।  
गीता ज्ञान सिखावन हारे, अरुन मोह मिटावन हारे।  
केला भक्त बिदुर घर पायो, युद्ध महाभारत रचवायो।  
ढूपद सुता को चीर बढ़ायो, गर्भ परिक्षित जरत बचायो।  
कच्च मच्छ वाराह अहिष्णा, बावन कल्की बुद्धि मुलीशा।  
है नृसिंह प्रहलाद उबार्यो, राम रूप धारि रावण मार्यो।  
जय मधु कैठभ देत्य हनैया, अमध्रीष प्रिय चक्र धरैया।

श्री गोपाल चालीसा  

व्याध अजामिल दीनें तारी, शाबरी अरु गणिका सी नारी।  
गरुड़ासन गज फन्द निकन्दन, देहु दरश श्रुव नवनानन्दन।  
देहु शुद्ध सन्तन कर सहा, बाढ़ प्रेम भक्ति रस रहा।  
देहु दिव्य बृद्धावन बासा, छूटे मृग तृणा जग आशा।  
तुम्हरो ध्यान धरत शिव नारद, शुक सनकादिक ब्रह्म विशारद।  
जय जय राधारमण कृपाला, हरण सकल संकट भ्रम जाला।  
बिनसं विधन रोग दुःख भारी, जो सुमरें जगपति गिरधरी।  
जो सत बार पढ़े चालीसा, देहि सकल बोधिल फल श्रीशा।

॥ छन्द ॥  

गोपाल चालीसा पढ़े नित, नेम सों चित लावई।  
सो दिव्य तन धारि अनं महें, गोलोक धाम सिधावई।  
संसार सुख सम्पति सकल, जो भक्तजन सन महें चहें।  
'जयरामदेव' सदैव सो, गुरुदेव दाया सों लहें॥
आरती श्री गोपाल जी की

आरती जुगल किशोर की कोजे, राधे धन न्यौछावर कीजे॥ टेक॥
रावि शशि कोटि बदन की शोभा, ताहि निरस्क मेरा मन लोभा।
गौर श्याम मुख निरस्क रीझै, प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजे।
कंचन थार कपूर की बाति, हरि आये निर्मल वहै छाति।
फूलन की सेज फूलन की माला, रतन सिंहसन बैठे नदलाला।
मार मुकुट कर मुली सोहे, नटवर वेष देख देख मन मोहे।
अधा नील पीत पटसारी, कुज्ज बिहारी गिरिवर्धारी।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर्धारी, आरती करें सकल ब्रजनारी।
नन्द लाला वृंघीनु किशोरी, परमानंद स्वामी अविचल जोही।
आरती जुगल किशोर की कोजे, राधे धन न्यौछावर कीजे॥

श्री ब्रह्मा चालीसा

श्री ब्रह्मा चालीसा

|| दोहा ||

जय ब्रह्मा जय स्वयम्भू, चतुरानन सुखमूल।
करहु कृपा निज दास पै, रहहु सदा अनुकूल।
तुम सृजक ब्रह्माण्ड के, अज विधि घाता नाम।
विश्वविद्वाता कीजिये, जन पै कृपा ललाम॥

|| तीँपाई ||

जय जय कमलासान जगमूला, रहहु सदा जनपै अनुकूल।
रूप चतुर्थुजः परम सुहावन, तुहूँ आँ है चतुर्विंद आनन।
रक्तवर्ण तव सुभग शरीरा, मस्तक जटाजुट गंभीरा।
ताकै ऊपर मुकुट बिराज, दाढ़ी श्वेत महाविद्वत छाज।
श्वेतवस्त्र धारे तुम सुन्दर, है यज्ञोपवीत अति मनहर।
कानन कुण्डल सुभग बिराजहि, गल मोतिन की माला राजहि।
चारिह वेद तुम्हें प्रगटायें, दिव्य ज्ञान त्रिभुवनहि सिखायें।
ब्रह्मलोक शुभ धाम तुम्हारा, अर्हत भुवन महं यश विस्तारा।
अन्नागिनि तव है सावित्री, अपर नाम हिये गायत्री।
सरस्वती तब सुता मनोहर, बीणा वाढिनि सब विधि मुदर।
कमलासन पर रहे बिराजे, तुम हरिभक्ति साज सब साजे।
स्त्री सिन्धु सोवत सुभुम्पा, नावि कमल भो प्रगट अनूपा।
तेहि पर तुम आसीन कृपाला, सदा करहु सन्तन प्रतिपाला।
एक बार की कथा प्रचारी, तुम कहँ मोह भयेव भ्रं भारी।
कमलासन लख कीँह विचारा, और न कोउ अही संसारा।
तब तुम कमलनाल गधी लीन्हा, अत बिलोकन कर प्रण कीहा।
कोटिक वर्ष गये यहि भांती, भ्रमत भ्रमत बीते दिन राती।

पै तुम ताकर अनं न पाये, है निराश अतिशय दुःखियाये।
पुनि विचार मन महं यह कीहा, महापव यह अति प्राचीना।
याको जनम भयो को कारन, तबहीं मोहि करयो यह धारन।
अरिख भुवन महं कहँ कोड़ नाहीं, सब कछु अही निहित मो माहीं।
यह निश्चय करि गरब बढ़ायो, निज कहँ ब्रह्म मानि सुखःपाये।
गगन गिरा तब भैंद गंभीरा, ब्रह्म वचन सुनहु धरि धीरा।
सकल सृष्टि कर स्वामी जोई, ब्रह्म अनादि अलख है सोई।
निज इच्छा उन सब निस्मायें, ब्रह्म विष्णु महेश बनायें।
सृष्टि लागि प्रगटे त्रयदेवा, सब जग इनकी करिहे सेवा।
महापव जो तुम्हें आसन, ता पै अही विष्णु को शासन।
विष्णु नाभिं प्रगट्यो आई, तुम कहँ सत्य दीन समुझाई।
भैया है विष्णु हितमानी, यह कहि बन्द भई नभवांनी।
ताहि श्रवण कहि अचरज माना, पुनि चतुरानन कीन्ह पयाना।
कंमल नाल धरि नीर आव्, तहां विष्णु के दर्शन पाव।
शयन करत देखे सुरभूणा, श्यामवर्ण तनु परम अनूप।
सोहत चतुर्भुजा अतिसुन्दर, क्रीटमुकट राजत मस्तक पर।
गल बैंजती माल बिराज़ै, कोटि सूर्य की शोभा लाजै।
शंख चक्र अरु गदा मनोहर, पद शहि आयुध सब सुन्दर।
पार्व पलोटि रमा निरंतर, श्रेष्ठ नाग श्यामा अति मनहर।
दिव्यरूप लखि कीन्ह प्रणाम, हरिति भे श्रीपति सुख धामू।
बहु विधि विनय कीन्ह चतुरानन, तब लक्ष्मी पति कहङ मुदित मन।
ब्रह्मा दूरिका करु अभिमाना, ब्रह्मरूप हम दोउ समाना।
तीजे श्री शिवशंकर आहीं, ब्रह्मरूप सब त्रिभुवन माहीं।
तुम सों होइ सृष्टि विस्तारा, हम पालन करि इं संसारा।

शिव संहार करहिं सब केरा, हम तीनहुं कहङ काज धनेरा।
अगुणरूप श्री ब्रह्म बखानहुं, निराकार तिनकहुं तुम जानहु।
हम साकार रूप त्रियदेवा, करहें सदा ब्रह्मा की सेवा।
यह सुनि ब्रह्मा परम सिहाये, परब्रह्म के यश अति गाये।
सो सब विदित वेद के नामा, मुक्ति रूप सो परम ललामा।
यहि विधि प्रभु भो जनम तुमाहरा, पुनि तुम प्रगट कीन्ह संसार।
नाम पितामह सुदर पायें, जड़ चेतन सब कहङ निर्मायें।
लीन अनेक बार अवतारा, सुदर सुंदर जगत विस्तारा।
देवदुनज सब तुम कहङ ध्यावहि, मनवांछित तुम सन सब पावहि।
जो कोउ ध्यान धरि नर नारी, ताकी आस पुजावहु सारी।
पुंकर तीर्थ परम सुखदाई, तहङ तुम बसहु सदा सुराई।
कुण्ड नहाई करहि जो पूजन, ता कर दूर होइ सब दूरण।
आरती श्री ब्रह्मा जी की
पितु मातु सहायक स्वामी सरखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कुछ और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।
सब भूति सदा सुखदायक हो, दु:ख निर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिमरे जग को, अतिशय करुणा उ हारे हो।
भूति हैं हम तो तुमको, तुम तो हमरी सुधि नाही बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महा महिमा तुमहरी, मुझसे बिरले बुद्धवारे हो।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधि, मन मन्दिर के उजियारे हो।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय ‘प्रताप’ हरे, केहि के अब और सहारे हो।

श्री शनि चालीसा (१)

॥ दोहा ॥
श्री शनिवर देवजी, सुनहु श्रवण ममू टेर।
कोटि विध्वनाशक प्रभो, करो न ममू हित बेर॥

॥ सोहाग ॥
तव स्तुति है नाथ, जोरि जुगल कर करत हैं।
करिये मोहि सनाथ, विन्ध्यहरन हे राव सुखन॥

॥ चोपाई ॥
शनिदेव में सुमिरों तोही, विद्या बुद्धि ज्ञान दो मोही।
तुम्हरो नाम अनेक ब्ररानीं, शुद्धबुद्धि में जो कुछ जानौं।
अन्तक, कोण, रौद्र मगाऊँ, कृष्ण वधू श्निन सबहि सुनाऊँ।
पिङल मन्दसौरि सुख दाता, हित अनहित सब जग के ज्ञाता।
नित जपि जो नाम तुम्हारा, करहु व्याधि दुःख से निस्तारा।
राशि विषमवस असुरन सुनर, पनग शेष सहित विद्याधर।
राजा रंक रहहि जो नीको, पशु पप्परी वनचर सबही को।
कानन किला शिविर सेनाकर, नाश करत सब ग्राम्य नगर भर।
डालत विना सबही के सुख में, व्याकुल होहि पड़े सब दुःख में।
नाथ विनय तुमसे यह मेरी, करिये मोपर दया घनरी।
मम हित विषम राशि महावासा, करिय न नाथ यही मम आसा।
जो गुढ़ उद्य दे बार शानीचर, तिल जव लोह अन धन बस्तर।
दान दिये से होंय सुखारी, सोइ शानि सुन यह विनय हमारी।
नाथ दया तुम मोपर कीजै, कोटिक विना क्षणिक महं छीजै।
वंदत नाथ जुगल कर जोरी, सुनहु दया कर विनाती मोरी।
कबहुँक तीरथ राज प्रयागा, सरयू तोर सहित अनुरागा।
कबहुँ सरस्वती शुद्ध नार महं, या कहुँ गिरी खोह कंदर महं।
ध्यान धरत हैं जो जोगी जनिन, ताहि ध्यान महं सूक्ष्म होहि शानि।

है अगम्य क्या कर्कू बड़ाई, करत प्रणाम चरण शिर नाई।
जो विदेश से बार शानीचर, मुड़कर आयेगा निज घर पर।
रहं सुधी शानि देव दुहाई, रक्षा रवि सुत रखेन बनाई।
जो विदेश जावें शानिवारा, गृह आवें नहीं सहें दुखारा।
संकट देव्य शानीचर तहही, जेते दुखी होई मन माही।
सोई रवि नदन कर जोरी, वंदन करत मूढ़ मति थोरी।
त्रहा जगत बनावेन हारा, विष्णु सबहिं नित देत आहारा।
हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी, विभू देव नृति एक वारी।
इकहोँध धारण करत शानि नित, वंदत सोई शानि को दमनचित।
जो नर पाठ करे मन चित से, सो नर छूटे व्यथा आमित से।
हैं सुपुत्र धन सतति बाढ़े, कल काल कर जोड़े ठाँड़े।
पशु कटुम्ब बांधन आदि से, भरो भवन रहहैं नित सबसे।
नाना भांति भोग सुख सारा, अन्न समय तजकर संसारा।
पावे मुक्ति अमर पद भाई, जो नित शानि सम ध्यान लगाई।।
पढ़े प्रात जो नाम शानि दस, रहें शानीश्चर नित उसके बस।।
पीड़ा शानि की कबहुँ न होई, नित उठ ध्यान धरे जो कोई।।
जो यह पाठ करें चालीसा, होय सुख साखी जगदीशा।।
चालिस दिन नित पढ़े सबेरे, पातक नाशे शानि घनेरे।।
सब नन्दन की अस प्रभुताई, जगत मोहतम नाशे भाई।।
याको पाठ करे जो कोई, सुख सम्पति की कमी न होई।।
निशिदन ध्यान धरे मनमाहीं, अधिवाधि विंग आवे नाहीं।।

॥ दोहा ॥
पाठ शानीश्चर देव को, कोहाँ ‘विमल’ तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार।।
जो सत्तुति दशारथ जी कियो, समुख शानि निहार।।
सरस सुभाषा में वही, ललिता लिखें सुधार।।

आरती श्री शानि देव जी की

जय जय जय श्री शानि देव भक्तन हितकारी,
सूर्य पुत्र प्रभुचाया महतारी।।
श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी,
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी।।
जय।।
क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लिलारी,
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी।।
जय।।
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी,
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी।।
जय।।
देव दुनुज ऋषि मुनि सुपिरत नर नारी,
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं सुमहारी।।
जय जय जय श्री शानि देव।।

ॐ प्रभुनामः
श्री शनि चालीसा (२)

|| दोहा ||

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजे नाथ निहाल।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राख़ु हजन की लाज।

|| वीरांग ||

जयति जयति शनिदेव दयाल, करत सदा भक्तन प्रतिपाला।
चारि भुजा, तनु शयाम विराज़ै, माथे रतन मुकुट छिव्व छाजै।
परम विशाल मनोहर भाला, टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।
कुंडल श्रवण चमाचम चमके, हिये माल मुक्तन मणि दमके।
कर में गदा त्रिशूल कुठारा, पल विच करैं अरिहं संहारा।

पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन, यम, कोणस्थ, रौँद्र, दुःखभंजन।
सौरीमन्द, शनी, दशनामा, भानु पुत्र पूजाहं सब कामा।
जापर प्रभु प्रसन्न हैं जाहीं, रंकहु राव करैं क्षण माहीं।
पर्वतहूँ तृण होइ निहारत, तृणहुँ को परवत करि डारत।
राज मिलत बन रामहिं दीनहयो, कैकेझुँ की मति हरि लीनहयो।
बनहुँ में मृग कपट दिखाई, मातु जानकी गई चुराई।
लक्षणहि शक्ति विकल विकराला, मचिगा दल में हाराकारा।
रावण की गति-मति बौराई, रामचन्द्र सों बैर बढाई।
दियो कीट करि कंचन लंका, बजी बजरंग बीर की डंका।
नुप विक्रम पर तुह पगु धारा, चित्र मगूर निगति मैं हारा।
हार नोलखा लागो चोरी, हाथ पैर दरवायो तोरी।
भारी दशा निकृष्ट दिखायो, तेलइ घर कोल्हू चलवायो।
विनय राग दीपक महँ कीहयों, तब प्रसन्न प्रभु है सुख दीनहयों।
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी, आपहृं भरे डोम घर पानी।
तैसे नल पर दशा सिरानी, भूजी-मीन कूद गईं पानी।
श्री शंकराहं गहो जब जाईं, पारवती को सती कराई।
तनिक विलोकत ही करि रीसा, नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।
पाण्डव पर भें दशा तुम्हारी, बची त्रौपत्री होती उघारी।
कौरव के भी गति मति मारयो, युद्ध महाभारत करि डारयो।
रवि कहं मुख महं धरि तत्कला, लेकर कूदि परयो पाताला।
श्रेष्ठ देव-ललिख विनती लाई, रवि को मुख ते दियो छुड़ाई।
वाहन प्रभु के सात सुजाना, जग दिगज गर्दभ मृग स्वाना।
जम्बुक सिंह आदि नख धारी, सो फल ज्योतिष कहत पुकारी।
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवें, हय ते सुख सम्पति उपजावें।
गर्दभ हानि करै बहु काजा, सिंह सिंधुकर राज समाजा।
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारे, मूग दे कष्ट प्राण संहारे।

जब आवाहं प्रभु स्वान सवार, चौरी आदि होय डर भारी।
तैसहि चारि चरण यह नामा, स्वर्ण लोह चाँदी अरु तामा।
लोह चरण पर जब प्रभु आवें, धन जन सम्पति नष्ट करावें।
समता ताम्र रजत शुभकारी, स्वर्ण सर्व सर्वसुख मंगल भारी।
जो यह शानि चरित्र नित गावें, कबहुं न दशा निकृष्ट सतावें।
अद्भुत नाथ दिखावें लीला, करैं श्राव के नशि बलि ढीला।
जो पण्डत सुरयो बुलवोइ विधिवत शानि ग्रह शांति कराई।
पीपल जल शानि दिवस चढ़वत, दीप दान दे बहु सुख पावत।
कहत राम सुदर प्रभु दासा, शानि सुमिरत सुख होत प्रकाशा।
॥ दोहा ॥
पाठ शानीशर देव को, कीहों ‘भक्त’ तैययार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥
आरती श्री शनिदेव जी की

जय जय शनिदेव महाराज, जन के संकट हरने चाले।
तुम सूर्यपुत्र बलधारी, भय मानत दुनिया सारी जी। साधक हो दुलभ काज।
तुम धर्मराज के भाई, जम कूरता पाई जी। घन गर्जन करत आवाज।
तुम नील देव विकरारी, भैंसा पर करत सवारी जी। कर लोह गदा रहें साज।
तुम भूपति रंक बनाओ, निर्धन सिर छत्र धराओ जी। समरस हो करन मम काज।
राजा को राज मिटाओ, जिन भगतों पेर दिवायो जी। जग में हैं गयी जै जैकार।
तुम हो स्वामी, हम चरन सिर करत नमामि जी। पुजवो जन जन की आस।
यह पूजा देव तिहारी, हम करत दिन भाव ते पारी जी। अंगीकृत करो कृपालु जी।
प्रभु सुधि दृष्टि निहारी, क्षमिये अपराध हमारो जी। हे हाथ तिहारे ही लाज।
हम बहुत विपत्ति घबराए, शरानगति तुमरी आए जी। प्रभु सिद्ध करो सब काज।
यह विनय कर जोर के भक्त सुनावें जी। तुम देवन के सिर ताज।

श्री भेरव चालीसा

॥ दोहा ॥
श्री भेरव संकट हरन, मंगल करन कृपालु।
करहु दया निज दास पे, निशिदिन दीनदयालु।

॥ तीर्थादृश ॥
जय डमभूधर नयन विशाला, श्राम वर्ष, वपु महा कराला।
जय त्रिशूलधर जय डमभूधर, काशी कोतवाल, संकटहर।
जय गिरिजासुत परमकृपाला, संकटहरण, हरहु भ्रमजाला।
जयति बटुक भेरव भयहारी, जयति काल भेरव बलधारी।
अष्टरूप तुम्हे सब गायें, सफल एक ते एक सिघवें।
शिवस्वरूप शिव के अनुग्रामी, गणाधीश तुम सबके स्वामी।
जटाजूट पर मुकूत सुहावें भालचन्द्र अति शोभा पावें।
कठि करधनी युःपुरु बाज़ैः, दर्शन करत सकल भय भाज़ैः।
कर त्रिशूल दमनु आति सुन्दर, मोरपंख को चंद्र मनोहब।
खपर खड़क लिए बलवाना, रुप चतुर्भुज नाथ बखाना।
वाहन श्रवण सदा सुखरासी, तुम अनन्त प्रभु तुम आविसी।
जय जय जय भैरव भय भजन, जय कृपालु भक्तन मनरंजन।
नयन विशाल लाल आति भारी, रक्तवर्ण तुम अहुः पुरारी।
बं बं बोलत दिनराती, शिव कहः भजहु असुर आराती।
एकलुप तुम श्रमभु कहाये, दूजे भैरव रुप बनाये।
सेवक तुमहि तुमहि प्रभु स्वामी, सब जग के तुम अतर्यामी।
रक्तवर्ण वपु अहहि तुमहारा, श्रामवर्ण कहः होढ़ प्रचारा।
श्रेवतर्ण पुनि कहा बखानी, तीनि वर्ण तुमहे गुणार्णान।
तीनि नयन प्रभु परम सुहावहः, सुरनर मुनि सब ध्यान लगावहः।
व्याप्र सर्वधर तुम जग स्वामी, प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी।

चक्रनाथ नकुलेश प्रचंडा, निमिष दिसमबर कीरति चंडा।
क्रोधवत्स भूतेश कालधार, चक्रतुष्ण दशाबाहु व्यालधार।
अहहि कोैः प्रभु नाम तुमहारे, जपत सदा मेठत दुःख भारे।
चौंसठ योगिनी नाचहि संगा, क्रोधवाद तुम अति रणरङ्गा।
भूतनाथ तुम परम पुनीता, तुम भविष्य तुम अहु अतीता।
वर्तमान तुमहे शुचि रुपा, कालमयी तुम परम अनूपा।
ऐलारी को संकट टार्यो, साद भक्त को कारो सार्यो।
कालीपुत्र कहावः नाथा, तब चरणन नावहु नित माथा।
श्रीक्रोधेश कृपा विस्तारः, दीन जानि मोहि पार उतारः।
भवसागर बृहत दिनराती, होहु कृपालु दुःख आराती।
सेवक जानि कृपा प्रभु कीजे, मोहि भगति अपनी अब दीजे।
करहु सदा भैरव की सेवा, तुम समान दूजे को देवा।
अश्वनाथ तुम परम मनोहर, दुष्टन कहः प्रभु अहु भयंकर।
तुम्हारे दास जहाँ जो होई, ताकहँ संकट परे न कोई।
हरहु नाथ तुम जन की पीरा, तुम समान प्रभु को बलवीरा।
सब अपराध क्षमा करि दीजे, दीन जानि आपुन मोहि कीजे।
जो यह पाठ करे चालीसा, तपाई कृपा करहु जगदीश।

|| तोड़ा ||

जय भैरव जय भूतपति जय जय जय सुखकंद।
करहु कृपा नित दास पे, देहु सदा आनंद।

आरती श्री भैरव जी की

सुनो जी भैरव लाड़िले, कर जोड़ कर विनती करहु।
कृपा तुम्हारी चाहिए, में ध्यान तुम्हारा ही धर्म।
में चरण छूता आपके, अजी मेरी सुन लीजिये।
में हूँ मति का मन्द, मेरी कुछ मदद तो कीजिये।

आरती श्री भैरव जी की

महिमा तुम्हारी बहुत, कुछ थोड़ी सी में वर्णन करहु।
सुनो जी भैरवः करते सवारी स्वान की, चारों दिशा में राज्य है।
जितने भूत और प्रेत, सबके आप ही सरताज हैं।
हथियार हैं जो आपके, उसका क्या वर्णन करहु।
सुनो जी भैरवः माता जी के सामने तुम, नृत्य भी करते सदा।
गा गा के गुण अनुवाद से, उनको रिखाते हो न सदा।
एक सांकलित है आपकी, तारीफ उसकी क्या करहु।
सुनो जी भैरवः बहुत सी महिमा तुम्हारी, मेंहदीपुर सरनाम है।
आते जगत के यात्री, बजरंग का स्थान है।
श्री प्रेतराज सरकार के, में शीश चरणों में धर्म।
सुनो जी भैरवः निशादिन तुम्हारे खेल से, माताजी खुश रहें।
सिर पर तुम्हारे हाथ रख कर, आशीर्वाद देती रहें।
कर जोड़ कर विनती करहु, अरु शीश चरणों में धर्म।
सुनो जी भैरवः
श्री बटुक भैरव चालीसा

॥ दोहा ॥
विश्वनाथ को सुमिर मन, धर गणेश का ध्यान।
भैरव चालीसा रचूं, कृपा करहु भगवान॥
बटुकनाथ भैरव भर्जे, श्री काली के लाल।
छीतरमल पर कर कृपा, काशी के कुतवाल॥

॥ चौपाई ॥
जय जय श्रीकाली के लाला, रहो दास पर सदा दयाला।
भैरव भीषण भीम कपाली, क्रोधवन्त लोचन में लाली।
कर त्रिशूल है कठिन कराला, गल में प्रभु मुण्डन की माला।
कृष्ण रूप तन वर्ण विशाला, पीकर मद रहता मतवाला।
रूढ़ बटुक भक्तन के संगी, प्रेत नाथ भूतेश भुजंगी।
त्रैल तेश है नाम तुम्हारा, चक्र तुण्ड अमरेश पियारा।

श्री बटुक भैरव चालीसा

षेखरचंद्र कपाल बिराजे, स्वान सवारी पे प्रभु गाजे।
शिव नकुलेश चण्ड हो स्वामी, बेजनाथ प्रभु नमो नमामी।
अश्वनाथ क्रोधेश बखाने, भैरों काल जगत ने जाने।
गायत्री कहें निमिष दिगम्बर, जगनाथ उनत आंदमंर।
क्षेत्रपाल दसपाण कहाये, मंजुल उमानंद कहलाये।
चक्रनाथ भक्तन हितकारी, कहें चमबक सब नर नारी।
संहारक सुनान तव नामा, करहु भक्त के पूरण कामा।
नाथ निशाचन के हो घरो, संकट मेटहु सकल हमारे।
कृत्यायू सुन्दर आनंदा, भक्त जनन के काठहु फंदा।
कारण लम्ब आप भय भंजन, नमोनाथ जय जनमन रंजन।
हो तुम देव त्रिलोचन नाथा, भक्त चरण में नावत माथा।
त्वं अशतांग रूढ़ के लाला, महाकाल कालों के काला।
ताप विमोचन अरि दल नासा, भाल चन्द्रमा करहि प्रकाशा।
श्री बटुक भैरव चालीसा

श्रेष्ठ काल अरु लाल शरीरा, मस्तक मुकुट शीश पर चीरा।
काली के लाला बलकारी, कहाँ तक शोभा कहूँ तुमहारी।
शंकर के अस्ति वृषाला, रहो चकाचक पी मद प्याला।
काशी के कुलबाल कहाँ, बटुक नाथ भटक दिखलाओ।
रवि के दिन जन भोग लगावें, धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें।
दरशन करके भक्त सिहावें, दारुढ़ की धार पिलावें।
मष में सुन्दर लटकत झावा, सिन्द्र कार्य कर भेरें बाबा।
नाथ आपका यश नहीं थोड़ा, करसे सुभग सुशोभित कोड़ा।
कटि घूंघरा सुरीले बाज़त, कंचनमय सिंहासन राजत।
नर नारी सब तुमको ध्यावैह, मनवांछि इच्छाफल पावह।
भोपा है आपके पुजारी, करें आरती सेवा भारी।
भैरव भात आपका गाँव, बार बार पद शीर्ष नवाँ।
आपकि बारे छीजन धाये, ऐलादी ने सूदन मचाये।

श्री बटुक भैरव चालीसा

बहन त्यागि भाई कहाँ जावे, तो बिन को मोहि भात पिन्हावे।
रोये बटुक नाथ करुणा कर, गये हिवारे में तुम जाकर।
दुखित भई ऐलादी बाला, तब हर का सिंहासन हाला।
समय ब्याह का जिस दिन आया, प्रभु ने तुमको तुरत पठाया।
विरसु कहीं मत विलम्ब लगाओ, तीन दिवस को भैरव जाय।
दल पठान संग लेकर धाया, ऐलादी को भात पिन्हाया।
पूर्ण आस बहन की कीनी, सुख चुंदरी सिर धर दीनी।
भात भरा लौटे गुण ग्रामी, नमो नमामि अन्तर्जामी।

॥ दोहा ॥
जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार।
कुपा दास पर कीजिए, शंकर के अवतार।
जो यह चालीसा पढ़े, प्रेम सहित सत बार।
उस घर सर्वनाद हों, वैभव बढ़े अपार।

॥ दोहा ॥
आरती श्री बटुक भैरव जी की

जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा, सुर नर मुनि सब करते प्रभु तुम्हारी सेवा।
तुम पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक, भक्तों के सुखकारक भीषण वचु धारक।
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी, महिमा अभिकतित तुम्हारी जय जय भयहरी।
तुम बिन शिव सेवा सफल नहीं होवे, चतुर्विंतिका दीपक दर्शन दुःख खोवे।
तेल चटक दधि मिश्रित भाषा विल तेरी, कृपा कीजिये भैरव करिये नहीं देरी।
पाँवों घूंघरु बाजत दमरु दमकावत, बटुकनाथ बन बालक जन मन हरिश्वत।
बटुकनाथ की आरती जो कोई जन गावे,
कहे ‘धरणीधर’ वह नर मन वाचियत फल पावे।

श्री सूर्य चालीसा

॥ दोहा ॥
कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अड़।
पद्मासन स्थित ध्याइये, शंख चक्र के सङ्ग॥
॥ चौपाई ॥
जय सविता जय जयति दिवाकर, सहस्रांशु! सप्ताशव तिमिरहर।
भानु! पतंग! मरीचि! भास्कर! सविता! हंस सुनूर विभाकर।
विवस्वान! आदित्य! विकर्तन, मातृंक हरिरुप विरोचन।
अम्बरमणि! खग! रवि कहलाते, वेद हिरणयगर्भ कह गाते।
सहस्रांशुप्रज्ञोतन, कहि कहि, मुनिगन होत प्रसन मोदलहि।
अरूण सदृश सारथी मनोहर, हाँकत हय साता चढ़ि रथ पर।
मंडल की महिमा अति न्यारी, तेज सुप केरी बलिहारी।
उच्चे:श्रवा सदृश हय जोते! देखि पुरुंदर लगित होते।
मित्र १. मरीचि २. भानु ३. अरुण भास्कर ४. सविता।
५. सूर्य ६. अर्क ७. खग ८. कलिकर पूणा ९. रवि।
१०. आदित्य ११. नाम ले, हिरण्यगळ्य नमः १२. कहिके।
ढादस नाम प्रेम सों गावें, मस्तक बारह बार नवावै।
चार पदारथ सो जन पावै, दुःख दारिद्र अघ पुज्ज नसावै।
नमस्कार को चमकार यह, विधि हरि नाम वृपासार यह।
सेवै भानु तुमहि मन लाई, अद्सिद्धि नवनिधि तेहि पाई।
बारह नाम उच्चार करते, सहस जनम के पालक ढरते।
उपायान जो करते तवजन, रिपु सों जमालहते सोतेहि छन।
छन सुत जुत परिवार बढ़तु है, प्रबलमोह को फँद कटतु है।
अर्क शीश को रक्षा करते, रवि ललात पर नित्य बिहरते।

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत, कर्ण देस पर दिनकर छाजत।
भानु नासिका वास करहु नित, भास्कर करत सदा मुख को हित।
ओण रहें पर्जन्य हमारे, रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे।
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा, निम्मतेजः कांधे लोभा।
पूषा बाहु मित्र पीठहि पर, त्वष्टा-वर्ण रहम सुउपशिकार।
युगल हाथ पर रक्षा कारन, भानुमान उपसम सुउदरचन।
बसत नाभि आदित्य मनोहर, कटि मह हाँस, रहत मन मुदभर।
जंगा गोपति, सविता बासा, गुप्त दिवाकर करत हुलासा।
विवक्षान पद की रखवारी, बाहर बसते नित तम हारी।
सहस्त्रांशु सर्वाग समहैं, रक्षा कवच विचित्र विचारे।
अस जोजन अपने मन माहैं, भय जग बीज कहाँ तेहि नाहीं।
दरिद्र कुष्ठ तेहि कबहुँ न व्यापै, जोजन याको मनमहं जापै।
अंधकार जग का जो हरता, नव प्रकाश से आनन्द भरता।
ग्रह गान ग्रसि न मिटावत जाहि, कोटि बार में प्रनवों ताहि।
मनद सदृश सुतजग में जाके, धर्मराज सम अद्वृत बांके।
धन्य-२ तुम दिनमनि देवा, किया करत सूर्यनि नर सेवा।
भक्त भावयुत पूर्ण नियमसों, दूर उद्वदसो भवके भ्रमसों।
परम धन्य सो नर तनधारी, हैं प्रसन जेहि पर तम हारी।
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन, मध वेदांगनाम रवि उदयन।
भानु उदय वैसाख गिनवे, ज्येष्ठ इत्र आषाढ़ रवि गावे।
एम भादों आशिवन हिमेता, कातिक होत दिवाकर नेता।
अगाहन भिन विष्णु हैं पूसहि, पुरुष नाम रवि हैं मलमासहि।

|| दोहा ||
भानु चालीसा प्रेम युत, गावहि जे नर नित्य।
सुख सम्पत्ति लहे विविध, होंहि सदा कृतकृत्य।

आरती श्री सूर्यदेव जी की

जय जय जय रविदेव, जय जय जय रविदेव।
राजनीति मदहारी शतदल जीवन दाता।
घटपद मन मुदकारी हे दिनमणि ताता।
जग के हे रविदेव, जय जय जय रविदेव।
नभम्पर्ण के वासी ज्योति प्रकाशक देवा।
निज जनहित सुखसारी तेरी हम सब सेवा।
करते हैं रविदेव, जय जय जय रविदेव।
कनक बदनमन मोहित रूपर प्रभा प्राहि।
हे सुरवर रविदेव, जय जय जय रविदेव।
श्री नवग्रह चालीसा

॥ लोहा ॥
श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहित सिरनाय।
नवग्रह चालीसा कहत, शारद होत सहाय॥
जय जय रवि शानि सोम बुध, जय गुरु भूगु शनि राज।
जयति राहु अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आज॥

॥ चोपाई ॥
श्री सूर्य स्तुति
प्रथमहि रवि कहने माथा, करहु कृपा जनि जानि अनाथा।
हे आदित्य दिवाकर भानू, मैं मति दन्द महा अजानू।
अब निज जन कहन हरहु कलेशा, दिनकर द्वादश रूप दिनेशा।
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर, अर्के मित्र अघ मोघ क्षमाकर।

श्री नवग्रह चालीसा

॥ चन्द्र रसुति ॥
शाशि सयंक रजनीपति स्वामी, चन्द्र कलानिधि नमो नमामि।
राकापति हिमांशु राकेशा, प्रणावत जन तत हरहु कलेशा।
सोम इन्दु विद्यु शानि सुधाकर, शीत रशिम ओषधि निशाकर।
तुम्हि शोभित सुंदर भाल महेशा, शरण शरण जन हरहु कलेशा।

श्री मंगल स्तुति
जय जय जय मंगल सुखदाना, लोहित भौमादिक विख्याता।
अंगारक कुज रजु ऋणहारी, करहु दया यहि विनय हमारी।
हे महंसुत छितिसुत सुखरागी, लोहितांग जय जन अघनाशी।
अगम अंगगल अब हर लीजै, सकल मनोरथ पूर्ण कीजै।

श्री वृह रसुति
जय शाशि नदन बुध महाराजा, करहु सकल जन कहु शुभ काज।
दीजै बुझिबल सुमित सुजाना, कठिन कष्ट हरि करि कल्याना।
श्री नवग्रह चालीसा

हे तारासूत रोहिणी नन्दन, चन्द्रसुवन दुःख हन्द्र निकन्दन।
पूजाः आस दास कहुँ स्वामी, प्रणात पाल प्रभु नमो नमामि।
श्री बृहस्पति रतुतित
ज्योति ज्योति जय श्री गुस्देवा, करों सदा तुम्हारी प्रभु सेवा।
देवाचार्य तुम देव गुरु ज्ञानी, इन्हु पुरोहित विद्यादानी।
वाचस्पति बागीश उदारा, जीव बृहस्पति नाम तुम्हारा।
विद्या सिंधु अंगिरा नामा, करो सकल विधि पूर्ण कामा।
श्री शुक्र रतुतित
शुक्र देव पद तल जल जाता, दास निरत ध्यान लगाता।
हे उज्जव भार्गव भृगु नन्दन, देव्य पुरोहित दुस्त निकन्दन।
भृगुकुल भूषण दूषण हारी, हरसु नेष्ट ग्रह करहु सुखारी।
तुह तिघ्वर जोशी सिराताजा, नर शरीर के तुम्हारी राजा।

श्री नवग्रह चालीसा

श्री शानि रतुतित
जय श्री शानिदेव रवि नन्दन, जय कृष्णो सौरी जगवन्दन।
पिंगल मन्द रौंद्र यम नामा, वप्र आदि कोणस्य ललामा।
बन्र दृष्टि पिंगल तन साजा, श्रीण महू करत रंक क्षण राजा।
ललत स्वर्ण पद करत निहाला, हरहु विपत्ति छाया के लाला।
श्री राहु रतुतित
जय जय राहु गगन प्रविष्टया, तुम्हारी चन्द्र आदित्य ग्रस्सिया।
रवि शाशि अर्ण स्वर्णानु धारा, शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा।
सैंहेकेन तुम निशाचर राजा, अर्थकाय जग राखु लाजा।
यदि ग्रह समय पाय काही आवृहु, सदा शान्ति और सुख उपजावृहु।
श्री केतु रतुतित
जय श्री केतु कठिन दुःखारी, करहु सुजन हित मंगलकारी।
ध्वजयु रुप्त रूप विकराला, घोर रौंद्रत अधमन काला।
श्री नवग्रह चालीसा

शिख्री तारिका ग्रह बलवाना, महा प्रताप न तेज ठिकाना।
वाहन मीन महा शुभकारी, दीर्घे शान्ति दया उर धारी।

नवग्रह शान्ति फल
तीरथराज प्रयाग सुपासा, बसै साम के सुन्दर दासा।
ककरा प्रामहि पुरे-तिवारी, दुर्वासाश्रम जन दुख हारी।
नव-ग्रह शान्ति लिख्यो सुख हेतु, जन तन कष्ट उतारण सेतू।
जो नित पाठ करै चित लावै, सब सुख भोगि परम पद पावै।

|| दोहा ||

धन्य नवग्रह देव प्रभु, महिमा अगम अपार।
चित नव मंगल मोद गृह, जगत जनन सुखद्वार।
यह चालीसा नवोग्रह विरचित सुन्दरदास।
पढ़त प्रेम युन बढ़त सुख, सरनानंद हुलास।

नवग्रह मन्त्र

1. सूर्य अं हाँ हँ होँ सं: सूर्याय नम:
2. चन्द्र अं श्री श्री श्री सं: चन्द्रमसे नम:
3. मंगल अं श्री श्री श्री सं: भौमाये नम:
4. बुध अं श्री श्री श्री सं: बुधाये नम:
5. गुरु अं श्री श्री श्री सं: गुरुवे नम:
6. शुक्र अं श्री श्री श्री सं: शुक्राये नम:
7. शनि अं श्री श्री श्री सं: शनये नम:
8. राहु अं श्री श्री श्री सं: राहुवे नम:
9. केतु अं स्त्रां स्त्री स्त्री सं: केतुवे नम:

|| दोहा ||
श्री विश्वकर्मा चालीसा

II दोहा II
विनय करीं कर जोड़कर मन वचन कर्म संभारी।
मोर मनोरथ पूर्ण कर विश्वकर्मा दुष्टारी॥

II चौपाई II
विश्वकर्मा तव नाम अनूप०, पावन सुखद मनन अनूपा।
सुन्दर सुयश भूवन दशचारी, नित प्रति गावत गुण नरारी।
शारद शेष महेश भवानी, कवि कोविद गुण ग्राहक ज्ञानी।
आगम निगम पुराण महाना, गुणातीत गुणवत् सवाना।
जग महँ जे परमारथ वादी, धर्म धुरस्थर शृङ्खू सन्नकादि।
नित नित गुण यश गावत तेरे, धन्य-धन्य विश्वकर्मा मेरे।
आदि सूत्र महँ तू अविनाशी, मोक्ष धाम तज आयो सुपासी।
जग महँ प्रथम लोक शुभ जाकी, भूवन चारि दश कीर्ति कला की।

ब्रह्मचारी आदित्य भयो जब, वेद पारंगत ऋषिष भयो तब।
दर्शन शास्त्र अरु विज्ञ पुराणा, कीर्ति कला इतिहास सुजाना।
तुम आदि विश्वकर्मा कहलायो, चौदह विद्या भू पर फैलायो।
लोह काष्ठ अरु ताप सुवर्ण, शिला शिल्प जो पंचक वर्ण।
दे शिक्षा दुख दारिद्र नाश, सुख समृद्ध जगमहँ परकाशयो।
सनकादिक ऋषि शिव्य तुम्हारे, ब्रह्मादिक जे मुनीश पुकारे।
जगत गुरु इस हेतु भये तुम, तम-अज्ञान-समूह हने तुम।
दिव्य अलौकिक गुण जाके वर, विचन विनाशन भय टारन कर।
सृष्टि करन हित नाम तुम्हारा, ब्रह्मा विश्वकर्मा भय धारा।
विष्णु अलौकिक जगरक्षक सम, शिव्यकल्याणक अति अनुपम।
नमो नमो विश्वकर्मा देवा, सेवत सुलभ मनोरथ देवा।
देव दनुज किंत्र गद्धर्व, प्रणवत युगल चरण पर सर्व।
अविचल भक्ति हृदय बस जाके, चार पदारथ निरल जाके।
सेवत तोहि भुजव दश चारी, पावन चरण भवोभव कारी।
विश्वकर्मा देवन कर देवा, सेवत सुलभ अलौकिक मेवा।
लौकिक कौिति कला भण्डारा, दाता शिष्मुिन यश विस्तारा।
भुजव पुनः विश्वकर्मा ठुव्रिरि, वेद अथवण तत्त मनन करि।
अथवणेद अर शिल्प शास्त्र का, धनुदेद सब कृत्य आपका।
जब जब विपति बड़ी देवन पर, कष्ट हन्नो प्रभु कला सेवन कर।
विष्णु चक्र अर ब्रह्म कम्प्लकल, रुद्र शूल सब रच्यो भूम्प्लकल।
इन्द्र धनुष अर धनुष पिनाका, पुष्पक यान अलौकिक चाका।
बायुवान मय उड़न खटोले, विहृत कला तंत्र सब खोले।
वर्ष चंद्र नवग्रह दिराला, लोक लोकान्तर व्योम पताला।
अनिन वायु क्षिति जल अकाशा, आविष्कार सकल परकाशा।
मनु मय त्वत्ता शिल्पी महाना, देवागम मुनि पंथ सुजाना।
लोक काष्ठ, शिल ताप्र सुकम्रा, स्वर्णकार मय पंचक धर्मा।

शिव दधीिि हरिरीवर भुआरा, कृत युग शिक्षा पालेअु सारा।
परशुराम, नल, नील, सुचेता, रावण, राम शिष्य सब त्रेता।
उपर द्रोणाचार्य हुलासा, विश्वकर्मा कुल कीिह प्रकाशा।
मत्तन शिल्प युर्धिष्ठिर पाणेङ, विश्वकर्मा चरण चित ध्यायेंिो।
नाना विधि तिलस्मी करि लेखा, विक्रम पुतली दृश्य अलेखा।
वर्णात्तित अकथ गुण सारा, नमो नमो भव टारन हारा।

|| दोहा ||

दिव्य ज्योिि दिव्यांश प्रभु, दिव्य ज्ञान प्रकाश।
दिव्य दृष्टि तिहुँ कालमहं विश्वकर्मा प्रभास॥
विनय करो करि जोरि, युग पावन सुयश तुम्हार।
धारि हिय भावत रहे होय कृपा उद्गार॥

|| छंद ||

जे नर स्प्रेम विराग श्रद्धा सहित पदिहःहि सुनि है।
विश्वास करि चालीसा चौपाई मनन करि गूढ़ि है॥
आरती श्री विश्वकर्मा जी की

भवं फंद विद्वानं से उसे प्रभु विश्वकर्मा दूर कर।
योक्ष्म सोख डेंगे अवश्य ही कष्ट विपदा चूर कर॥

आरती श्री विश्वकर्मा जी की

प्रभु श्री विश्वकर्मा घर आवे प्रभु विश्वकर्मा।
सुदामा की विनय सुनी, और कंचन महल बनाये।
सकल पदार्थ देकर प्रभु जी दुखियों के दुःख टोरे॥
विनय करी भगवान कृष्ण ने द्वारिकापुरी बनाये।
स्वाल बालों की रक्षा की प्रभु की लाज बचाये॥ 
वि॥
रामचंद्र ने पूजन की तब सेतु बाँध रचि डारे।
सब सेना को पार किया प्रभु लंका विजय कराये॥ 
वि॥
श्री कृष्ण की विजय सुनो प्रभु आके दर्श दिखायो।
शिल्प विद्या का दो प्रकाश मेरा जीवन सफल बनायो॥

श्री रविदास चालीसा

श्री रविदास चालीसा

॥ दोहा ॥
बन्दौं वीणा पाणि को, देहु आय मोहिं ज्ञान।
पाय बुद्धि रविदास को, करौं चरित्र बखान॥
मातू की महिमा अमित हे, लिखि न सकत है दास।
ताते आयों शरण में, पुरवहु जन की आस॥

॥ चौपाई ॥
जै होवै रविदास तुम्हारी, कृपा करहु हरिजन हितकारी।
राहू भक्त तुम्हारे ताता, कर्म नाम तुम्हारी माता।
काशी ढिंग मादुर स्थान, वर्ण अच्छूत करत गुजाना।
ढादश वर्ष उप्र जब आई, तुम्हारे मन हरि भक्ति समाई।
रामानंद के शिष्य कहाये, पाय ज्ञान निज नाम बढ़ाये।
शास्त्र तक गोबी जी में कीहं, ज्ञानिन को उपदेश है दीनों।
श्री रविदास चालीसा

गंग मातू के भक्त अपारा, कौड़ी दीनह उनहीं उपहारा।
पंडित जन ताको ले जाईं, गंग मातू को दीनह चढ़ाईं।
हाथ पसारी लीन्ह चौगानी, भक्त की महिमा अभिमत बखानी।
चकित भये पंडित कारी के, देखि चरित भव भय नाशी के।
रति जतित कंगन तब दीनहाँ, रविदास अधिकारी कीहाँ।
पंडित दीनी भक्त को मेरे, आदि जन्म के जो हैं चेहे।
पहुँचे पंडित ढिग रविदास, दै कंगन पुसङ अभिलाषा।
तब रविदास कहिं यह बाता, दूसर कंगन लाबु ताता।
पंडित जन तब कसम उठाईं, दूसर दीनह न गंगा माईं।
तब रविदास ने वचन उचारे, पंडित जन सब भये सुखारे।
जो सर्वदा रहे मन चंगा, तो घर बसति मातू है गंगा।
हाथ कठौती में तब डारा, दूसर कंगन एक निकारा।
चित संकोचित पंडित कीहें, अपने अपने मारग लैहें।

श्री रविदास चालीसा

तब से प्रचलित एक प्रसंग, मन चंगा तो कठोती में गंगा।
एक बार फिरि पूर्यो झमेला, मिलि पंडितजन कीहों खेला।
सालिग राम गंग उतरावे, सोई प्रबल भक्त कहलावे।
सब जन गये गंगे के तीर, मूर्ति तैरावन बिच नीरा।
डूब गई सबकी मझाराह, सबके मन भयो दुःख अपारा।
पत्थर मूर्ति रही उतराईं, सुर नर मिलि जयकार मचाई।
रहयो नाम रविदास तुम्हाराह, मचो नगर मह तहाकाराह।
चीरि देह तुम दुःख बहायो, जरम जने�抢抓 आप दिखाओ।
देखि चकित भये सब नर नारी, विद्वान मुधि बिसरी सारी।
ज्ञान तरक कबिरा संग कीहों, चकित उनहुँ का तुम कर दीहों।
गुरु गोरखं ही निध उपदेश, उन मान्यो तरि संत विशेषा।
सदना पीर तरक बहु कीहों, तुम ताको उपदेश है दीहों।
मन मह हार्यो सदन कसाई, जो दिल्ली में खबरि सुनाई।
स्थिर सिंदिर की सुनि कुम्बड़, लोधी सिकन्दर गयो गुस्साई।
अपने नूह तब तुम्हि बुलावा, मुस्लिम होन हेतु समझावा।
मानि नहीं तुम उसकी बानी, बंदीगृह काटी है रानी।
कृष्ण दरश पाये रविदासा, सफल भई तुम्हि सब आशा।
ताले दूरी खुल्यो है कारा, माया सिकन्दर के तुम मारा।
काशिक पूर तुम कहँ पहुँचाई, दे प्रभुता असमान बढ़ाई।
मीता योगावि गुरु तोहों, जिनको श्रविय बंश प्रवीनो।
तिनको दै उपदेश अपारा, कीहों भव से तुम निस्तारा।

॥ दोहा ॥

ऐसे ही रविदास ने, कीहें चरित अपार।
कोई कवि गावै कम्ते, तहूं न पावै पार॥

नियम सहित हरिजन अगार, ध्यान धैर चालीसा।
ताकी रक्षा करेंगे, जगतपति जगदीश॥

आरती श्री रविदास जी की

नामु तेरो आरती भजन मुरारे, हरि के नाम विनु झूठे सगल पसारे।
चारा आसनो नाम तेरा उरसा, नामु तेरा केसरो ले छिटकारे।
नामु तेरा अंधुला नाम तेरा चंदनोमसिस, जपे नाम ले तुझहि कठ चारे।
नामु तेरा दीवा नाम तेरे बाति, नाम तेरे तेल ले माहि पसारे।
नाम तेरे की ज्योति जगाई, भइलो उजारो भवन सगलारे।
नामु तेरो तागा नाम फूल माला, भार अठारह सगल जुठारे।
तेरो कियो तुझ ही किया अरपुर, नाम तेरो तुहि चंबर ठोलारे।
दस अठा अठस्ते चारे खानी, इहे वरति है सगल संसारे।
कहे 'रविदास' नाम तेरो आरती, सतिनाम है हरिभोग तुहारे।

ॐ श्री रविदास जीनः
श्री गोरख चालीसा

॥ दोहा ॥
गणपति गिरजा पुत्र को सुमिस्ते बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करः शारद नाम आधार॥

॥ चौपाई ॥
जय जय गोरख नाथ अविनासी, कृपा करो गुरु देव प्रकाशी।
जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी, इच्छा रूप योगी वरदानी।
अलख निरंजन तुम्हरो नाम, सदा करो भक्तन हित काम।
नाम तुम्हारा जो कोई गावे, जन्म जन्म के दुःख मिट जावे।
जो कोई गोरख नाम सुनावे, भूत पिशाच निकट नहीं आवे।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे, रूप तुम्हारा लख्या न जावे।
निराकार तुम हो निर्वाणी, महिमा तुम्हारी वेद न जानी।

श्री गोरख चालीसा

॥ घट ॥
घट घट के तुम अन्तर्यामी, सिद्ध चौरासी करे प्रणामी।
भस्म अंश गल नाद विराजे, जटा शीश अति सुनदर साजे।
तुम बिन देव और नहीं दूजा, देव मुनि जन करते पूजा।
चिदानन्द सन्तन हितकारी, मंगल करण अमंगल हारी।
पूर्ण भ्रह्म सकल घट वासी, गोरख नाथ सकल प्रकाशी।
गोरख गोरख जो कोई ध्यावे, भ्रह्म रूप के दर्शन पावे।
शंकर रूप धर डमरु बाजे, कानन कुण्डल सुन्दर साजे।
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा, असुर मार भक्तन रक्षावार।
अति विशाल है रूप तुम्हारा, सुर नर मुनि जन पावें न पाया।
दीन ब्रह्मु दीनन हितकारी, हरो पाप हर शरण तुम्हारी।
योग युक्ति में हो प्रकाशा, सदा करो सन्तन तन वासा।
प्रातः काल ले नाम तुम्हारा, सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा।
हठ हठ हठ गोरख हठीले, मार मार वैरी के कीले।
चल चल चल गोरख विकारला, दुश्मन मार करो बेहाला।
जय जय जय गोरख अविनाशी, अपने जन की हरो चौरासी।
अचल अगम है गोरख योगी, सिद्धि देवो हरो रस भोगी।
काटो मार्ग यम को तुम आईं, तुम बिन मेरा कौन सहाई।
अजर अमर है तुम्ही क्रोधी देहा, सन्निकादिक सब जोरहि नेहा।
कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा।
योगी लखे तुम्हारी माया, पार ब्रह्म से ध्यान लगाया।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे, अपसिद्धि नव निधि घर पावे।
शिव गोरख है नाम तुम्हारा, पापी दुष्ट अधम को तारा।
अगम अगोचर निर्भर नाथा, सदा रहो सन्तन के साथा।
शंकर रूप अवतार तुम्हारा, गोपीचन्द, भरतराय को तारा।

सुन लीजो प्रभु अरज हमारी, कृपासिद्धु योगी ब्रह्मचारी।
पूर्ण आस दास की कीजे, सेवक जान ज्ञान को दीजे।
पतित पावन अधम अधारा, तिनके हेतु तुम लेत अवतारा।
अलख निरंजन नाम तुम्हारा, अगम पशु जिन योग प्रचारा।
जय जय जय गोरख भगवाना, सदा करो भक्तन कल्याणा।
जय जय जय गोरख अविनाशी, सेवा करें सिद्ध चौरासी।
जो ये पढ़ि ह गोरख चालीसा, होय सिद्ध साक्षि जागदीशा।
हाथ जोड़कर ध्यान लगावे, और श्रद्धा से भेंट चढ़वें।
बारह पाठ पढ़े नित जोई, मनोकामना पूर्ण होई।

॥ दोहा ॥

सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरखनाथ॥
आरती श्री गोरख नाथ जी की

जय गोरख देवा जय गोरख देवा।
कर कृपा मम उपर नित्य करूँ सेवा॥
शीश जटा अति सुंदर भाल चंद्र सोहे॥
कानन कुण्डल झळकत निरक्त मन मोहे॥
गल सेली विच नाग सुशोभित तन भस्मी धारी।
आदि पुरुष योगीश्वर सन्तन हितकारी॥

आरती श्री गोरख नाथ जी की

नाथ निरंजन आप ही घट-घट के वासी।
करत कृपा निज जन पर मेटत यम फांसी॥
ऋषिद्वार सिद्धि चरणों में लोटत माया है दासी।
आप अलख अवधूता उत्तराखण्ड वासी॥
अगम अगोचर अक्षुद अरुपी सबसे हो न्यारे॥
योगीजन के आप ही सदा हो रखवारे॥
बड़ा विष्णु तुम्हारा निशादिन गुण गावें॥
नारद शारद सुर मिल चरन चित लावें॥
चारों चुम में आप विराजत योगी तन धारी।
सत्युग द्वार त्रेता कल्युग भव टारी॥
गुरु गोरख नाथ की आरती निशादिन जो गावे।
विनवत बाल त्रिलोकी मुक्ति फल पावे॥
श्री जाहरवीर चालीसा

॥ दोहा ॥
सुवन केहरी जेवर सुत महाबली रतनधीर।
बन्दों सुत रानी बांछला विपत्ति निवारण बीर॥
जय जय जय चौहान सन् गूगा बीर अनूप।
अनंगपाल को जीतकर आप बने सुर भूप॥

॥ चौथाई ॥
जय जय जय जाहर रणधीरा, पर दुःख भंजन बागड़ बीरा।
गुरु गोरख का हें वरदानी, जाहरवीर जोधा लासानी।
गोरखरण मुख महा विसाला, माथे मुकट घुंघराले बाला।
कांधे धनुष गले तुलसी माला, कमर कुपान रश्ना को डाला।
जनमें गूगावीर जग जाना, ईस्वी सन हजार दरमियाना।

श्री जाहरवीर चालीसा

॥ दोहा ॥
बल सागर गुण निधि कुमारा, दुःखी जनों का बना सहारा।
बागड़ पति बांछला नदन, जेवर सुत हरि भक्त निकनन।
जेवर राव का पुत्र कहाये, माता पिता के नाम बढ़ाये।
पूर्ण हुई कामना सारी, जिसने बिनती करी तुहारी।
सन्त उबारे असुर संहारे, भक्त जनों के काज संबारे।
गूगावीर को अजब कहानी, जिसको व्याही श्रीविल रानी।
बांछल रानी जेवर राना, महादुखी थे बिन सन्ताना।
भगिन ने जब बोली मारी, जीवन हो गया उनको भारी।
सूढ़ा बाग पड़ नौलक्षा, देख-देख जग का मन दुखा।
कुछ दिन पीछे साधू आये, चेला चेली संग में लाये।
जेवर राव ने कुआ बनवाया, उद्धार जब करना चाहा।
खारी नीर कुए से निकला, राजा रानी का मन पिघला।
रानी तब ज्योतिरी बुलवाया, कौन पाप में पुत्र न पाया।
कोई उपाय हमको बतलाओ, उन कहा गोरख गुरु मनाओ।
गुरु गोरख जो खुश हो जाई, सन्तान पाना मुस्किल नाई।
बाछल रानी गोरख गुन गावे, नेम धर्म को न बिसरावे।
करे तपस्या दिन और राती, एक वक्त खाय रूखी चापाती।
कार्तिक बाह में करे स्नाना, ब्रत इकादसी नहीं भुलाना।
पूर्तमासी खत नहीं छोड़े, दान पुण्य से मुख नहीं मोड़े।
चेलों के संग गोरख आये, नौलखे में तम्बू तनवाये।
मीठा नीर कुए का कीना, सूखा बाग हरा कर दीना।
मेवा फल सब साधु खाए, अपने गुरु के गुन को गावे।
औघड़ भिक्षा मांगने आए, बाछल रानी ने दुख सुनाये।
औघड़ जान लियो मन माहीं, तप बल से कुछ मुस्किल नाहीं।
रानी होवे मनसा यूरी, गुरु शरण है बहुत जसूरी।
बारह बरस जया गुरु नामा, तब गोरख ने मन में जाना।

पुत्र देन की हामी भर ली, पूर्तमासी निर्चय कर ली।
काछल कपटन गजब गुजारा, धोखा गुरु संग किया करारा।
बाछल बनकर पुत्र पाया, बहन का दरद जरा नहीं आया।
औघड़ गुरु को भेद बताया, तब बाछल ने गुगल पाया।
कर परसादी दिया गूगल दाना, अब तुम पुत्र जनो मरदाना।
लीली घोड़ी और पण्डतानी, लूता दानी ने भी जानी।
रानी गूगल बाट के खाई, सब बांझों को मिली दवाई।
नरसिंह पंडित लीला घोड़ा, भज्जु कुतवाल जना रणधीरा।
रूप विकर धर सब ही डरावे, जाहरवीर के मन को भावे।
भादों कृप्ण जब नामी आई, जेवराव के बजी बधाई।
विवाह हुआ गूगा भये राना, संगलदीप में बने मेहमान।
रानी श्रीयल संग परे फेरे, जाहर राज बागड़ का करे।
अरजन सरजन काछल जने, गूगा वीर से रहे वे तने।
दिल्ली गए लड़ने के कारण, अनंग पाल चढ़े महाराज।
उसने घेरी बाग़ड़ सारी, जाहरवीर न हिम्मत हारी।
अरजन सरजन जान से मारे, अनंगपाल ने शस्त्र डारे।
चरण पकड़कर पिण्ड छुड़ाया, सिंह भवन माड़ी बनवाया।
उसीमें गूगावीर समाये, गोरख टीला धूमी रखाये।
पूण्य वान सेवक बहाँ आये, तन मन धन से सेवा लाए।
मन्त्र शूर्य उनकी होई, गूगावीर को सुमेर जोई।
चालीस दिन पढ़े जाहर चालीसा, सारे कष्ठ हरे जगदीसा।
दूध पूत उन्हें दे विधाता, कृपा करे गुरु गोरखनाथ।

आरती श्री जाहरवीर जी की
जय जय जाहरवीर हे जय जय गूगा वीर हे
धरती पर आ करके भक्तों के दुःख दूर करे। जय-जय।

आरती श्री जाहरवीर जी की
जो कोई भक्ति करे प्रेम से हाँ जी करे प्रेम से
भागे दुःख परे विधान हरे, मंगल के दाता तन का कष्ठ हरे।
जेवर राव के पुत्र कहाये रानी बाँधल माता
बाग़ड़ जन्म लिया वीर ने जय-जयकार करे। जय-जय।
धर्म की बेल बढ़ाई निश दिन तपस्या रोज करे
दुष्ट जनों को दण्ड दिया जग में रहे आप खरे। जय-जय।
सत्य आहिसा का ब्रत धारा झूठ से आप डरे
वचन भंग को बुरा समझकर घर से आप निकरे। जय-जय।
माड़ी में तुम करी तपस्या अचरज सभी करे
चारों दिशामें भक्त आ रहे आशा लिये उतरे। जय-जय।
भवन पठारो अटल क्षत्र कह भक्तों की सेवा करे
प्रेम से सेवा करे जो कोई धन के भण्डार भरे। जय-जय।
तन मन धन अर्पण करके भक्ति आप्त करे
भादों कृष्ण नौमी के दिन पूजन भक्ति करे। जय-जय।
श्री प्रेतराज चालीसा

॥ तीर्था ॥
गणपति की कर वंदना, गुरु चरणन चितलाय।
प्रेतराज जी का लिखूँ, चालीसा हरियाल॥
जय जय भूतातिशी प्रबल, हरण सकल दुःख भार।
बीर शिरोमणि जयति, जय प्रेतराज सरकार॥
॥ चोपाई ॥
जय जय प्रेतराज जग पावन, महा प्रबल त्रय ताप नसावन।
विकट बीर करुणा के सागर, भक्त कष्ट हर सब गुण आगर।
रल जतित सिन्हासन सोहे, देखत सुन नर मुनि मन मोहे।
जगमग सिर पर मुकुट सुहावन, कानन कुण्डल अति मन भावन।
भूषुष कुपाण बाण अरु भाला, बीरवेश अति भूष्टिका कराला।
गजारुढ़ संग सेना भारी, बाजत ढोल मृदुंग जुझारी।

छत्र चंद्र पंखा सिर ढोले, भक्त बृद्ध मिलि जय जय बोले।
भक्त शिरोमणि बीर प्रचण्डा, दुष्ट दलन शोभि भुजदण्डा।
चतल सैन कौंट भूतालहूँ, दर्शन करत मिटत कलि मलहू।
घाटा मेहदीपुर में आकर, प्रगटे प्रेतराज गुण सागर।
लाल ध्वजा उड़ रही गगन में, नाचत भक्त मगन ही मन में।
भक्त कामना पूर्ण स्वामी, बजरंगी के सेवक नामी।
इच्छा पूर्ण करने वाले, दुःख संकट सब हरने वाले।
जो जिस इच्छा से आते हैं, वे सब मन वाँछित फल पाते हैं।
रोगी सेवा में जो आते, श्रीग्र स्वस्थ होकर घर जाते।
भूत पिशाच जिन वैतला, भागे देखत रूप कराला।
भौतिक शारीरिक सब पीड़ा, मिटा शीघ्र करते हैं क्रीडा।
कठिन काज जग में हैं जेते, रतन नाम पूर्ण सब होते।
तन मन धन से सेवा करते, उनके सकल कष्ट प्रभु हरते।
हे करणामय स्वामी मेरे, पढ़ा हुआ हूँ चरणों में तेरे।
कोई तेरे सिवा न मेरा, मुझे एक आश्रय प्रभु तेरा।
लग्ना मेरी हाथ तिहारे, पढ़ा हूँ चरण सहारे।
या विधि अरज करे तन मन से, छूटत रोग शोक सब तन से।
मेंढीपुर अवतार लिया हैं, भक्तों का दुःख दूर किया है।
रोगी, पागल सन्तति हीना, भूत व्याधि सुत अफ धन हीना।
जो जो तेरे द्वारे आते, मन वांछित फल पा घर जाते।
महिमा भूतल पर है छाई, भक्तों ने है लीला गाई।
महत गणेश पुरी तपस्थारी, पूजा करते तन मन वारी।
हाथी में ले मुगदर घोटे, दूत खड़े रहते हैं मोटे।
लाल देह सिन्दूर बदन में, काँपत धर-धर भूत भवन में।
जो कोई प्रेतराज चालीसा, पाठ करत नित एक अरु बीसा।
प्रात: कलाम स्मान करावे, तेल और सिन्दूर लगावें।

चन्दन इत्र फुलेल चढ़ावै, पुष्पन की माला पहनावै।
ले कपूर आरती उतारे, करै प्रार्थना जयति उचाई।
उनके सभी कष्ट कट जाते, हरित हो अपने घर जाते।
इच्छा पूर्ण करते जनकी, होती सफल कामना मन की।
भक्त कष्टहर अरिकुल घातक, ध्यान धरत छूटत सब पातक।
जय जय जय प्रेताधिप जय, जयति भूपति संकट हर जय।
जो नर पद्म प्रेत चालीसा, रहत न कबहूँ दुख लबलेश।
कह भक्त ध्यान धर मन में, प्रेतराज पावन चरण में।

॥ तोहा ॥

dुष्ट दलन जग अध हरन, समन सकल भव शूल।
जयति भक्त रक्षक प्रबल, प्रेतराज सुख मूल॥
विमल वेश अंजिन सुवन, प्रेतराज बल धाम।
बसहू निरंतर मम हदय, कहत भक्त सुखराम॥
आरती श्री प्रेतराज सरकार की

दीन दुर्भन के तुम रखवाले, संकट जग के कांठ हरे।
बालाजी के सेवक जोधा, मन से नमन इन्हैं कर लीजैं।
जिनके चरण कभी ना हरे, राम काज लगि जो अवतरे।
उनकी सेवा में चित देते, अर्जी सेवक की सुन लीजैं।
बा्बा के तुम आज्ञाकारी, हाथी पर करे असवारी।
भूत जिन सब धर-धर काँधे, अर्जी बाबा से कह दीजैं।
जिन आदि सब डर के मारे, नाक रगड़ तेरे पड़े दुआरे।
मेरे संकट तुरतहि काटो, यह विनय चित्त में धरि लीजैं।
वेश राजसी शोभा पाता, ढाल कृपाल धनुष अति भाता।
मेरे आनकर शरण आवकी, नैवा पार लगा मेरी दीजैं।

श्री बालाजी चालीसा

|| दोहा ||
श्री गुरु चरण चितलाय के धरें ध्यान हनुमान।
बालाजी चालीसा लिखे दास स्नेहि कल्याण॥
विश्व विदित वर दानी संकट हरण हनुमान।
मैंहदीपुर में प्रगट भरे बालाजी भगवान।
|| चोपाई ||
जय हनुमान बालाजी देवा, प्रगट भरे यहां तीनों देवा।
प्रेतराज भैरव बलवाना, कोतवाल कप्तानी हनुमाना।
मैंहदीपुर अवतार लिया है, भक्तों का उद्दार किया है।
बालरूप ग्राहे हैं यहां पर, संकट वाले आते जहाँ पर।
डाकनी शाकनी अरु जिन्दनी, मशान चुडैल भूत भूतनी।
श्री बालाजी चालीसा

जाके भय ते सब भग जाते, स्याने भोपस यहाँ घबराते।
वैकों बन्धन सब कट जाते, दूत मिले आनन्द मनाते।
सच्चा है दरबार तिहारा, शरण पड़े सुख पावे भारा।
रूप तेज बल अतुलित धामा, सन्मुख जिनके सिय रामा।
कनक मुकुट मणि तेज प्रकाशा, सबकी होवत पूर्ण आशा।
महत गणेशपुरी गुणीले, भवे सुसेवक राम रंगीले।
अद्भुत कला दिखाई कैसी, कलयुग ज्योति जलाई जैसी।
ञँची ध्वजा पताका नभ में, स्वर्ण कलश है उनत जग में।
धर्म सत्य का डंका बाजे, सियाराम जय शंकर राजे।
अन फिराया मुगदर घोटा, भूत जिंद घर पड़े सोटा।
राम लक्ष्मन सिय हृदय कल्याणा, बाल रूप प्रगटे हनुमाना।
जय हनुमन हठीले देवा, पुरी परिवार करत हैं सेवा।
लडू चूरमा मिश्री मेवा, अर्जी दरखास्त लगाउ देवा।

श्री बालाजी चालीसा

दया करे सब विधि बालाजी, संकट हरण प्रगटे बालाजी।
जय बाबा की जन जन ऊँचारे, कोटिक जन तेरे आये द्वारे।
बाल समय रवि भक्तिहृदि लीन्हा, तिमिर मय जग कोहो तीन्हा।
देवन बिनती की अति भारी, छाँड़ दियो रवि कछ निहारी।
लांधि उदधि सिया सुधि लाये, लक्ष्मण हित संजीवन लाये।
रामानुज प्राण दिवाकर, शंकर सुवन माँ अंजनी चाकर।
कैशरी नन्दन दुख भव भंजन, रामानुज सदा सुख सन्दन।
सिया राम के प्राण पियारे, जब बाबा की भक्त ऊँचारे।
संकट दुख भंजन भगवाना, दया करहु है कृपा निधाना।
सुमर बाल रूप कल्याणा, करे मनोरथ पूर्ण काम।
अघ निधि नव निधि दातारी, भक्त जन आये बहु भारी।
मेवा अरु मिष्ठान प्रवीणा, भैंट खड़ावें धनि अरु दीना।
नृत्य करे नित न्यारे न्यारे, रिद्धि सिद्धियां जाके द्वारे।
अजी का आदेश मिलते ही, भैरव भूत पकड़ते तबही।
कोतवाल कप्तान कुपाणी, प्रेतराज संकट कल्याणी।
चौकी बसौन कटते भाई, जो जन करते हैं सेवकाई।
रामदास बाल भगवता, मेंहदीपुर प्रगटे हनुमाना।
जो जन बालाजी में आते, जय जन के पाप नषाते।
जल पावन लेकर घर जाते, निर्मल हो आनंद मनाते।
कूर कठिन संकट भग जावे, सत्य धर्म पथ राह दिखावे।
जो सत पाठ करे चालीसा, ताप प्रसन्न होय बागीसा।
कल्याण स्नेही, स्नेह से गावे, सुख समृद्धि रिश्तू सिद्धि पावे।
॥ दोषा ॥

मन्द बुद्धि मम जानके, क्षणा करो गुणगान।
संकट मोचन क्षमहु मम, दास स्नेही कल्याण॥

आरती श्री बाला जी की

अं जय हनुमत वीरा स्वामी जय हनुमत वीरा, संकट मोचन स्वामी तुम हो रणाधीरा।अं ॥
पवन-पुत्र अंजनी-सुन महिमा अति भारी, दु:ख दछिद्र मिटाओ संकट सब हरी।अं ॥
बाल समय में तुमने रस को भक्ष लियो, देवन सुतुति कीती तब ही छोड़ दियो।अं ॥
कपिल सङ्ग राम संग मेत्री करवाई, बाली बली मा राम कपिलसमि गदनी दिलवाई।अं ॥
जारि लक को ले सिय की सुधि बागर हर्षये, कारज कठीन सुधारे रघुर मन भाचे।अं ॥
शाक्ति लगी लक्षण के भारी सोच भयो, लाय संजीवन-बूढ़ी दु:ख सब दूर कियो।अं ॥
ले पातल अहिरावण जबहि पैठ गयो, ताहि मारि प्रभु लाये जय जयकार भयो।अं ॥
घटे मेंहदीपुर में शोभित दर्शन अति भारी, मंगल और शानिरिश्च मिला है जारी।अं ॥
श्री बालाजी की आरती जो कोई नर गावे, कहत इन्द्र हर्षित मन वांछित फल पावे।अं ॥
श्री साई चालीसा

पहले साई के चरणों में, अपना शीश नमाऊँ में।
कैसे शिरीं साई आए, सारा हाल सुनाऊँ में।
कौन हैं माता, घिरा कौं हैं, यह न किसी ने भी जाना।
कहाँ जनम साई ने धारा, प्रश्न पहली सा रहा बना।
कोई कहे अयोध्या के, ये रामचन्द्र भगवान हैं।
कोई कहता साई बाबा, पवन-पुत्र हनुमान हैं।
कोई कहता है मंगल मूर्ति, श्री गजानन हैं साई।
कोई कहता गोकुल-मोहन देवकी नदन हैं साई।
शंकर समझे भक्त कई तो, बाबा को भजते रहते।
कोई कहे अवतार दत्त का, पूजा साई की करते।

कुछ भी मानो उनको तुम, पर साई हैं सच्चे भगवान।
बड़े दयालु, दीनबंधु, किसने को दिया जीवन दान।
कई वर्ष पहले की घटना, तुम्हें सुनाऊँगा में बात।
किसी भाग्यशाली की, शिरीं में आई श्री बारात।
आया साथ उसी के था, बालक एक बहुत सुन्दर।
आया, आकर वहाँ बस गया, पावन शिरीं किया नगर।
कई दिनों तक रहा भटकता, भिक्षा माँगी उसने दर-दर।
और दिखायी ऐसी लीला, जग में जो हो गई अमर।
जैसे-जैसे उमर बढ़ी, बढ़ती गई वैसे ही शान।
घर-घर होने लगा नगर में, साई बाबा का गुणागान।
दिग दिगन में लगा गूँजने, फिर तो साईजी का नाम।
दीन-दुखी की रक्षा करना, यहो रहा बाबा का काम।
बाबा के चरणों में जाकर, जो कहता मैं हूँ निर्धन।
दया उसी पर होती उनकी, खुल जाते दुःख के बन्धन।
कभी किसी ने माँगी भिक्षा, दो बाबा मुझको संतान।
एवमस्तु तब कहकर साईं, देते थे उसको वरदान।
स्वयं दुःखी बाबा हो जाते, दीन-दुखी जन का लख हाल।
अन्तःकरण श्री साईं का, सागर जैसा रहा विशाल।
भक्त एक मद्रासी आया, घर का बहुत बड़ा धनवान।
माल खजाना बेहद उसका, केवल नहीं रही संतान।
लगा मनाने साईं नाथ को, बाबा मुझ पर दया करो।
ज्ञान से झङ्कूँ नैया को, तुमहीं मेरी पार करो।
कुलदीपक के बिना अंधेरा, छाया हुआ है घर में मेरे।
इसलिए आया हूँ बाबा, होकर शरणागत तेरे।

कुलदीपक के ही अभाव में, व्यथा है दौलत की माया।
आज भिक्षारी बनकर बाबा, शरण तुम्हारी में आया।
दें-दो मुझको पुत्र-दान, मैं ऋणी रहूँगा जीवन भर।
और किसी की आशा न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुम पर।
अनुनय-विनय बहुत की उसने, चरणों में धरकर के शीश।
तब प्रसन होकर बाबा ने, दिया भक्त को यह आशीष।
अल्लार भला करेगा तेरा, पुत्र जन्म हो तेरे घर।
कृपा रहेगी तुझ पर उसकी, और तेरे उस बालक पर।
अब तक नहीं किसी ने पाया, साईं की कृपा का पार।
पुत्र रल दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार।
तन-मन से जो भजे उसी का, जग में होता है उद्धव।
साँच को आँच नहीं है कोई, सदा, झूठ की होती हार।
में हूँ सदा सहारे उसके, सदा रहूँगा उसका दास।
साई जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही कम है क्या आस।
मेरा भी दिन था इक ऐसा, मिलती नहीं मुझे थी रोटी।
तन पर कपड़ा दूर रहा था, श्रेष्ठ रहि नही सी लंगोटी।
सरिता समुख होने पर भी, में व्यासा था।
दुर्दिन मेरा मेरे ऊपर, दावगनी बरसाता था।
धरती के अतिरिक्त जगत में, मेरा कुछ अवलम्ब न था।
बना भिखारी में दुनिया में, दर-दर ठोकर खाता था।
ऐसे में इक मित्र मिला जो, परम भक्त साई का था।
जंजालों से मुक्त मगर, जगती में वह भी मुझ सा था।
बाबा के दर्शन की खातिर, मिल दोनों ने किया विचार।
साई जैसे दया मूर्ति के, दर्शन को हो गए तैयार।

पावन शिर्दी नगर में जाकर, देखी मतवाली मूर्ति।
थन्य जनम हो गया कि हमने, जब देखी साई की मूर्ति।
जब से किए हैं दर्शन हमने, दुख सारा काफूर हो गया।
संकट सारे मिटे और, विपदाओं का हो अन गया।
मान और सम्मान मिला, भिक्षा में हमको सब बाबा से।
प्रतिबिंधित हो उठे जगत में, हम साई की आज़ा से।
बाबा ने सम्मान दिया है, मान दिया इस जीवन में।
इसका सम्बल ले में, हँसता जाऊँगा जीवन में।
साई की लीला का मेरे, मन पर ऐसा असर हुआ।
लगता, जगती के कण-कण में, जैसे हो वह भरा हुआ।
‘काशीराम’ बाबा का भक्त, इस शिर्दी में रहता था।
में साई का, साई मेरा, वह दुनिया से कहता था।
सिलकर स्वयं वस्त्र बेचता, ग्राम-नगर बाजारों में।
इष्कृति उसकी हदय तन्त्री थी, साई की छंकारों में।
स्त्रिया निशा थी, ये सोये, रजनी अंचल में चाँद सितारे।
नहीं सूखता रहा हाथ को हाथ, तिमिरि के मारे।
वस्त्र बेचकर लौट रहा था, हाय! हाट से ‘काशी’।
विचित्र बड़ा संयोग कि उस दिन, आता था वह एकाकी।
घर रहे में खड़े हो गए, उसे कुटिल अन्याय।
मारे काटो लौट लो इसको, इसकी ही ध्वनि पड़ी सुनाई।
लूट पीटकर उसे वहाँ से, कुटिल गये चमत्क हो।
आघातों से समर्पित हो, उसने दी थी संज्ञा खो।
बहुत देर तक पड़ा रहा वह, वहीं उसी हालत में।
जाने कब कुछ हो उठा, उसको किसी पलक में।

अनजाने ही उसके मुँह से, निकल पड़ा था साई।
जिसकी प्रतिज्ञा शहीदी में, बाबा को पड़ी सुनाई।
श्रद्धा हो उठा मानस उनका, बाबा गए विकल्प हो।
लगता जैसा घटना सारी, घटी उन्हें के समुख हो।
उमयादी से इधर उधर तब, बाबा लगे भटकने।
समुख चीजें जो भी आईं, उनको लगे पटकने।
और ध्वसकते अंगारों में, बाबा ने कर डाला।
हुए सर्णकित सभी वहाँ, लख ताण्डब नृत्य निराला।
समझ गये सब लोग कि कोई, भक्त पड़ा संकट में।
श्रद्धा खड़े थे सभी वहाँ पर, पड़े हुए विसमय में।
उसे बचाने की ही खातिर, बाबा आज विकल हैं।
उसकी ही पीढ़ा से पीड़ित, उनका अन्तस्तल है।
इतने में ही विद्यि ने, अपनी विचित्रता दिखलाई।
लख कर जिसका जनता की, श्रद्धा सरिता लहराई।
लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाड़ी एक वहाँ आई।
समुद्र अपने देखा भक्त को, साई की आँखें भर आई।
शान्त, धीर, गंभीर सिंहु सा, बाबा का अनस्तल।
आज ने जाने क्यों रह-रह, हो जाता था चंचल।
आज दया की मूर्ति स्वयं था, बना हुआ उपचारी।
धर भक्त के लिये आज था, देव बना प्रतिहारी।
आज भक्ति की विषम परीक्षा में, सफल हुआ था कार्य।
उसके ही दर्शन की खातिर, थे उमड़े नगर-निवासी।
जब भी और जहाँ भी कोई, भक्त पड़े संकट में।
उसकी रक्षा करने बाबा, जाते हैं पल्लवर में।

युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नई कहानी।
अपदग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुद अनत्यांग।
भेद-भाव से परे पुजारी, मानवता के थे साई।
जितने प्यारे हिंदू-मुस्लिम, उतने ही थे सिख ईसाई।
भेद-भाव मन्दिर-मस्जिद का तोड़-फोड़ बाबा ने डाला।
राम रहीम सभी उनके थे, कृष्ण करीम अल्लाताला।
घरटे की प्रतिहारिनी से गूंजा, मस्जिद का कोना-कोना।
मिले परस्पर हिंदू-मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन दूना।
चमकार था कितना सुन्दर, परिचय इतव काया ने दी।
और नीम कटुवाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी।
सच को सेहद दिया साई ने, सबको अनुत्तर प्यार किया।
जो कुछ जिसके भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया।
नाम सदा जो जपा करें।
पर्वत जैसा दुःख न च्यों हो, पलभर में वह दूर टरे।
साई जैसा दाता, अरे कभी नहीं देखा कोई।
जिसके केवल दर्शन से ही, सारी विषय दूर गई।
तन में साई, पत्न में साई, साई-साई भजा करो।
अपने तन की सुधि-बुधि खोकर सुधि उसकी तुम किया करो।
जब तू अपनी सुधियाँ तजकर, बाबा की सुधि किया करेगा।
और रात-दिन बाबा, बाबा, बाबा ही तू रटा करेगा।
तो बाबा को अरे! विवश हो, सुधि तेरी लेनी ही होगी।
तेरी हर इच्छा बाबा को पूरी ही करनी होगी।
जंगल जंगल भटक न पागल, और ठूंठने बाबा को।
एक जगह केवल शिरी भी, तू पायेगा बाबा को।

धन्य जगत में प्राणी है वह, जिसके बाबा को पाया।
दु:ख में, सुख में प्रहर आठ हो, साई का हो गुण गाया।
गिरें संकटों के पर्वत चाहें, या बिजली ही टूट पड़े।
साई का ले नाम सदा तुम, समुक्ष सब के रहो अंडे।
इस बूढ़े की सुन करामात, तुम हो जावोगे हैरान।
दंग रह गए सुन कर जिसको, जाने कितने चतुर सुजान।
एक बार शिरी में साधु, ढोंगी था कोई आया।
भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया।
जड़ी-बूटियाँ उन्हें दिखा कर, करने लगा वहाँ भाषण।
कहने लगा सुनो श्रोतागण, घर मेरा है वृद्धि।
औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शक्ति।
इसके सेवन करने से ही, हो जाती दु:ख से मुक्ति।
अगर मुक्त होना चाहो तुम, संकट से, बीमारी से।
तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से, हर नारी से।
लो खरीद तुम इसको इसकी, सेवन विधियाँ हैं न्यारी।
यदापि तुच्छ वस्तु है यह, गुण उसके हैं अतिशय भारी।
जो है संततिहीन यहाँ यदि, भेरी औषधि को खाये।
पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे और वह मुँह माँगा फल पाये।
औषधि मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछतायेगा।
मुझे जैसा प्राणी शायद ही, अरे यहां आ पायेगा।
दुनिया दो दिन का मेला है, मौज खौक तुम भी कर लो।
गर इससे मिलता है, सब कुछ, तुम भी इसको ले लो।
हैरानी बढ़ती जनता की, लख इसकी कार्यस्थानी।
प्रमुख वह भी मन-ही-मन था, लख लोगों की नादानी।

खबर सुनाने बाबा को यह, गया दौड़कर सेवक एक।
सुनकर भूकुटी तनी और, विस्मरण हो गया सब भी विवेक।
हुक्का मिला गया सेवक को, सत्तव पकड़ दुष्ट को लाओ।
या शिड्डी की सीमा से, कपटी को दूर भगाओ।
मेरे रहते भोली-भाली, शिड्डी की जनता को।
कौन नीच ऐसा जो, साहस करता है छलने को।
पलभर में ही ऐसे ढोंगी, कपटी नीच लुटेरे को।
महानाश के महागार्थ में, पहुँचा दूँ जीवन भर को।
तत्तिक गिला आभास मदारी, क्रूर, कूटिल, अत्याचारी को।
काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया सांई को।
पलभर में सब खेल बन्द कर, भागा सिर पर रख कर पैर।
सोच रहा था मन ही मन, भगवान नहीं है क्या अब ख़ेर।
श्री साई चालीसा

रचना है साई जैसा दानी, भिल न सकेगा जग में।
अंश इंश का साई बाबा, उसने न कुछ भी मुखिकल जग में।
स्नेह, शील, सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर।
बढ़ता इस दुनिया में जो भी, मानव-सेवा के पथ पर।
तीनी जीत लेता है जगती के, जन जन का अन्तस्तल।
उसकी एक उदासी ही जग को, कर देती है विच्छल।
जब-जब जग में भार पाप का, बढ़-बढ़ हो जाता है।
उसे मिटाने की ही खातिर, अवतारी हो जाता है।
पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के।
दूर भगा देता दुनिया के दानव को क्षण भर में।
स्नेह सुधा की धार बरसने, लगती है दुनिया में।
गले परस्पर भिलने लगते, जन-जन हैं आपस में।

श्री साई चालीसा

ऐसे ही अवतारी साई, मृत्युलोक में आकर।
समता का यह पाठ पढ़िया, सबको अपना आप मिटाकर।
नाम द्वारकाका महिजद का, रक्षा शिर्दी में दाई ने।
पाप, ताप, सन्ताप मिटाया, जो कुछ पाया साई ने।
सदा याद में मस्त राम की, बैठे रहते थे साई।
पहर आठ ही राम नाम का, भजते रहते थे साई।
सूंदी-हली ताजी बासी, चाहे या होवे पकवान।
सदा प्यार के भूखे साई की, खातिर थे सभी समां।
स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे जाते थे।
बड़े चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे।
कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग में जाते थे।
प्रमुखित मन में निरक्ष प्रकृति, छटा को बो होते थे।
रंग-बिरंगे पुष्प बाग के, मन-मन हिल-डुल करके।
श्री साई चालीसा

बीहड़ बीराने मन में भी स्नेह सलिल भर जाते थे।
ऐसी सुमधुर बेला में भी, दुःख आपद विपदा के मारे।
अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे।
सुनकर जिनकी करण कथा को, नयन कमल भर आते थे।
दे विभूति हर व्यथा, शान्ति, उनके उर में भर देते थे।
जाने क्या अदभुत, शक्ति, उस विभूति में बोही थी।
जो धारण करते मस्तक पर, दुःख सारा हर लेती थी।
धब्ब मनुज वे साक्षात दर्शन, जो बाबा साई के पाये।
धब्ब कमल कर उनके जिनसे, चरण-कमल वे परसाये।
काश निर्भय तुमको भी, साक्षात साई मिल जाता।
बरसों से उजड़ा चमन अपना, फिर से आज रख लिया।
गर पकड़ता में चरण श्रीके नहीं छोड़ता उम्र भर।
मना लेता में जरूर उनको, गर रूठते साई मुझ पर।

आरती श्री साई जी की

आरती श्री साई गुरुवर की, परमानंद सदा सुरवर की।
जा की कृपा विपुल सुखकारी, दुःख, शोक संकट, भयहरी।
शिरड़ी में अवतार रचया, चमककर से तव दिखाया।
कितने भक्त चरण पर आये, वे सुख शान्ति चिंतन पाये।
भाव धेरे जो मन में जैसा, पावत अनुभव वो ही वैसा।
गुरु की उद्दी लगावे तन को, समाधान लाभत उस मन को।
साई नाम सदा जो गावे, सो फल जग में शाश्वत पावे।
गुरुवासर करि पूजा-सेवा, उस पर कृपा करत गुरुदेव।
राम, कृष्ण, हनुमान रूप में, दे दर्शन, जानत जो मन में।
विविध धर्म के सेवक आते, दर्शन इच्छित फल पाते।
जे बोलो साई बाबा की, जे बोलो अवधूत गुरु की।
‘साईदास’ आरती को गावे, घर में बसि सुख, मंगल पावे।
श्री गिरिराज चालीसा

॥ दोहा ॥
बन्दोः वीणा वादिनी, धरी गणपति को ध्यान।
महाशक्ति राधा सहित, कृष्ण करोऽकल्याण।
सुमिरन करि सब देवगण, गुरु पितु बारस्मार।
बरनी श्रीगिरिराज यश, निज मति के अनुसार।

॥ चौथाई ॥
जय हो जय बंदित गिरिराज, ब्रज मण्डल के श्री महाराजा।
विष्णु रूप तुम हो अवतारी, सुन्दरता पै जग बलिहारी।
स्वर्ण शिखर अति शोभा पायें, सुर मुनि गण दर्शन कूं आयें।
शांत कन्दरा स्वर्ग समान, जहाँ तपस्वी धरते ध्यान।
श्रोणगिरि के तुम युवराजा, भक्तन के साथौ ही काज।

मुनि पुलस्वय जी के मन भाये, जोर विनय कर तुम कृः लाये।
मुनिवर संघ जब ब्रज में आये, लख ब्रजभूमि यहाँ ठहराये।
विष्णु धाम गोलोक सुहावन, यमुना गोवर्धन वृद्धावन।
देख देव मन में ललचाये, बास करन बहु रूप बनाये।
कोउ बानर कोउ मृग के रूपा, कोउ वृक्ष कोउ लता स्वरूपा।
आनंद लेने गोलोक धाम के, परम उपासक रूप नाम के।
हुए अंत भये अवतारी, कृष्णचन्द्र आनंद मुरारी।
महिमा तुम्हरी कृष्ण बखानी, पूजा करिबे की मन ठानी।
ब्रजवासी सब के लिये बुलाई, गोवर्धन पूजा करवाई।
पूजन कृः व्यज्ञन बनवाये, ब्रजवासी घर घर ते लाये।
ग्वाल बाल मिलि पूजा कीनी, सहस भुजा तुमने कर लीनी।
स्वयं प्रकट हो कृष्ण पूजा में, माँग माँग के भोजन पायें।
लखि नर नारी मन हरषामें, जै जै गिरिराज गुणा गामें।
देवराज मन में रिषियाए, नट करन ब्रज मेघ बुलाए।
छाया कर ब्रज लियी बचाई, एकउ बूढ़ न नीचे आई।
सात दिवस भई बरसा भारी, थके मेघ भारी जल धारी।
कृष्णचन्द्र ने नख पै धारे, नमो नमो ब्रज के पखवारे।
करि अभिमान थके सुरसाई, क्षमा माँग ज्योति गाई।
व्रति मामू में शरण तिहारी, क्षमा करो प्रभु चूक हमारी।
बार बार बिन्ती अति कौनी, सात कोस परिक्रमा दीनी।
संग सुरभि ऐरावत लाये, हाथ जोड़ कर भेंट गहाये।
अभय दान पा इन्द्र सिहाये, करि प्रणाम निज लोक सिधाये।
जो यह कथा पुनः चित लायें, अत समय सुरुपति पद पावें।
गोवर्धन है नाम तिहारी, करते भक्तन को निस्तारी।

जो नर तुम्हे दर्शन पाओं, तिनके दुःख दूर है जाें।
कुण्डन में जो करें आचमन, धन्य धन्य वह मानव जीवन।
मानसि गंगा में जो नहों, सीधे स्वर्ग लोक कूँ जावें।
दूध चढ़ा जो भोग लगावें, आधि व्याधि तेहि पास न आवें।
जल फल तुलसी पत्र पढ़वें, मन वांछित फल निश्चय पाओं।
जो नर देत दूध की धारा, भरो रहें ताकौ भण्डारा।
करें जागरण जो नर कोई, दुःख दरिद्र भय ताहि न होई।
‘श्याम’ शिलामय निज जन त्राता, भक्ति मुक्ति सरस के दाता।
पुजा हीन जो तुम कृं ध्यावें, ताकूँ पुजा प्राप्ति हैव जावें।
दंडीती परिक्रमा करहीं, ते सहजहि भवसागर तरहीं।
कलि में तुम सम देव न दूजा, सुर नर मुनि सब करते पूजा।
|| दोहा ||
जो यह चालिसा पढ़े, सुनै शुद्ध चित लाय।
सत्य सत्य यह सत्य है, गिरिवर करें सहाय।
श्रीमा करहु अपराध मम, त्राहि मामू गिरिराज।
श्याम बिहारी शरण में, गोवर्धन महाराज।

आरती श्री गिरिराज जी की
अंज जय जय जय गिरिराज, स्वामी जय जय जय गिरिराज।
संकट में तुम राखो, निज भक्तन की लाज।
इन्द्रादिक सब सुर मिल तुम्हें ध्यान धरें।
रिंशि युनिजन यश गावें, ते भवसिन्धु तरें।
सुन्दर रूप तुम्हारी श्याम सिला सोंहें।
वन उपवन लख-लख के भक्तन मन मोहें।

आरती श्री गिरिराज जी की
मध्य मानसि गढ़ा कलि के मल हरनी।
तापै दीप जलावें, उतरें वैतरणी।
नवल अप्सरा कुण्ड सुहावन-पावन सुखकारी।
वायूं राधा-कुण्ड नहावें महा पापहारी।
तुम्ही मुक्ति के दाता कलियुग के स्वामी।
दीनन के हो रक्षक प्रभु अनतमारी।
हम हैं शरण तुम्हारी, गिरिवर गिरिधारी।
देवकीनंदन कृपा करो, हे भक्तन हितकारी।
जो नर देव परिक्रमा पूजन पाठ करें।
गावें नित्य आरती पुनि नहि जनम धरें।
श्री महावीर (तीर्थकर) चालीसा

II तोहा II

श्रीश नवा अरिह्त को, सिद्धन करें प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।
सब साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन-मन्दिर में धार।
II चौपाई II

जब महावीर दयालु स्वामी, चीर प्रभु तुम जग में नाम।
वर्ध्मान है नाम तुहारा, लगे हृदय को व्यारा व्यारा।
शाति छूँव और मोहनी मूरत, शान हँसीली सोहनी सूरत।
तुमने वेश दिम्बर धारा, कर्म-श्रृंग भी तुम से हारा।
क्रोध मन अरु लोभ भगाया, महा-मोह तमसे डर खाया।

तू सर्वजन सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनिया से क्या नाता।
तुझमें नहीं राग और ह्वेश, चीर रण राग तू हितोपदेश।
तेरा नाम जगत में सच्चा, जिसको जाने बच्चा बच्चा।
भूत प्रेत तुम से भय खावें, व्यावर राश्स सब भाग जावें।
महा व्याय मारी न सतावें, महा विकारल काल डर खावें।
काला नाग होय फन-धारी, या हो शेर भयंकर भारी।
ना हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुझको करो प्रतिपाला।
अगि दायागि सुलग रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो।
नाम तुहारा सब दुख खोवे, आग एकदम ठंडी होवे।
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा।
जम्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे, तिरला के आँखों के तार।
छोड़ सब्जै झंझट संसारी, स्वामी हुए बाल-ब्रह्मचारी।
पंचम काल महा-दुखदाई, चाँदनपुर महिमा दिखलाई।
टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया।
सोच हुआ मन में ग्वाले के, पहुँचा एक फावड़ा लेके।
सारा टीला खोद बगाया, तब तुमने दर्शन दिखलाया।
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा।
ठंडा हुआ तोप का गोला, तब सब ने जयकारा बोला।
मनी ने मंदिर बनवाया, राजा ने भी दृष्टि लगाया।
बड़ी धर्मशाला बनवाई, तुमको लाने को ठहराई।
तुमने तोड़े बीसंग गाड़ी, पहिया खसका नहीं अगाड़ी।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिर तो रथ चलता ही पाया।
पहिले दिन बैशाख बदरी के, रथ जाता है तीर नदी के।

मीना गूजर सब ही आते, नाच-कूद सब चित उमगाते।
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का बहु मान बढ़ाया।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही।
मेरी है टूटी सी नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
मुझे पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हूँ प्रभु तुम्हारा चाकर।
तुম से मैं अरु कछु नहीं चाहूँ, जन्म-जन्म तेरे दर्शन पाऊँ।
चालीसे को ‘चद्र’ बनावे, बीर प्रभु को शीश नवावे।

रोमटा
नित चालीसहि बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं सतनान, नाम वंश जग में चले।
आरती श्री महावीर जी की

जय महावीर प्रभो! स्वामी जय महावीर प्रभो!

जगनाथक सुखदायक, अति गम्भीर प्रभो। ॐ ॐ

कुण्डलपुर में जनें, त्रिशला के जायें।

पिता सिद्धार्थ राजा, सुर नर हर्षाए। ॐ ॐ

दीनानाथ दयानिधि, हैं मंगलकारी।

जगहित संयम धारा, प्रभु परउपकारी। ॐ ॐ

पापाचार मिटाया, सत्यध दिखलाया।

दयाधर्म का झांडा, जग में लहराया। ॐ ॐ

अजूनमाली गौतम, श्री चन्दनबाला।

पार जगत से बेड़ा, इनका कर डाला। ॐ ॐ

पावन नाम तुम्हारा, जगतारणहारा।

निसिदिन जो नर छावे, कष्ट मिटे सारा। ॐ ॐ

करुणासागर! तेरी महिमा है न्यारी।

ज्ञानमुनि गुण गावे, चरणन बलिहारी। ॐ ॐ

श्री परशुराम चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरण सरोज छवि, निज मन मन्दिर धारि।
सुपरिण गजानन शारदा, गाहि आशिष त्रिपुरारि।
बुद्धहीन जन जानिये, अवगुणों का भण्डार।
बरणों परशुराम सुयश, निज मति के अनुसार।

॥ चीपाई ॥

जय प्रभु परशुराम सुख सागर, जय मुनीश गुण ज्ञान दिवाकर।
भूगुकल मुक्त बिकट रणधीरा, क्षत्रिय तेज मुख संत शरीरा।
जमदग्नी सुत रेणुका जाया, तेज प्रताप सकल जग छाया।
मास बैसाख सित पच्छ उदारा, तृतीया पुनर्वसु मनुहारा।
प्रहर प्रथम निशा शीत न धामा, तिथि प्रदोष व्यापि सुखधामा।
तब ऋषि कुटीर सून शिष्य जीना, रेणुका कोख़ि जनम हरि लीना।
निज घर ऊच्च यह छ। ठाटे, मिथुन राशि राहु सुख गाड़े।
तेज़-ज्ञान मिल नर तनु धारा, जमदग्नी घर ब्रह्म अवतारा।
धरा राम शिष्य पावन नामा, नाम जपत जग लह विश्रामा।
भाल त्रिपुण्ड जटा सिर सुन्दर, कांधे मुंज जनेत मनहर।
मंजु मेखला कटू मृणाला, रुद्र मला वर वक्ष विशाला।
पीत बसन सुन्दर तनु सोहें, कंध पुणीर धनुष मन मोहें।
वेद-पुराण-श्रुति-स्मृति ज्ञाना, क्रोध रूप तुम जग विख्याता।
दायें हाथ श्रीपरशु उठावा, वेद-संहिता बायें सुहावा।
विद्यावान गुण ज्ञान अपारा, शास्त्र-शास्त्र दोउ पर अधिकारा।
भुवन चारिदस अरु नवखंडा, चहुं दिशि सुयश प्रताप प्रचंडा।

एक बार गणपति के संगा, जुलो भृगुकुल कमल पतंगा।
दांत तोड़ रण कीर्ण विरामा, एक दंत गणपति भयो नामा।
कार्तवीर्य अर्जुन भृपाला, सहस्वाहु दुर्जन विकराला।
सुराऊँ लक्ष जमदगनी पांहीं, रकरहुँ निज घर ठानि मन मांहीं।
मिलि न मांगि तब कीर्ण लड़ाई, भयो पराजित जगत हंसाई।
तन खल हदय भई रिस गाड़ी, रिपुता मुनि सीं अतिसय बाढ़ी।
ऋषिवर रहे ध्यान लवलीना, तिन्ह पर शक्तिधात नृप कीहा।
लगत शक्तिजमदगनी निपारा, मनहुँ क्षत्रिकुल बाम विधारा।
पितु-बध मातु-सून सुनि भारा, भा अति क्रोध मन शोक अपारा।
कर गहि तीव्रण पाशू कराला, दुर्ग हनन कीहें तत्काला।
क्षत्रिय रुदिर पितु तर्पण कीहा, पितु-बध प्रतिशोध सुत लीहा।
इक्रोस बार भू क्षत्रिय विहिनी, छीन धरा विप्रह कहं दीनी।
श्री परशुराम चालीसा

श्री परशुराम चालीसा

|| दोहा ||

परशुराम को चारू चरित, पेटत सकल अज्ञान।
शरण पड़े को देत प्रभु, सदा सुयुक्त सर्वमान।

|| श्लोक ||

भृगुदेव कुलं भानुं, सहस्रभुर्मदनम्।
रणुका नयना नंदं, परशुवंदे विप्रधनम्।

आरती श्री परशुराम जी की

ॐ जय परशुधारी, स्वामी जय परशुधारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, श्रीपति अवतारी।
ॐ जय जयवत्रनी सुत नर-सिंह, मां रणुका जाया।
मार्त्यं भृगु वंशज, त्रिभुवन यश छाया।
ॐ जय जय कांधे सूत्र जनेऽऽ, गल रुक्मण्यां माला।
आरती श्री परशुराम जी की

चरण खड़ाऊँ शोभे, तिलक त्रिपुण्ड्र भाला। अंग जय।
ताम्र श्रयाम घन केशा, शीश जटा बांधी।
सुजन हेतु ऊँचु मधुमय, दुष्ट दलन आंधी। अंग जय।
मुख रचव तेज विराजत, रक्त वर्ण नैना।
दीन-हीन गो विप्रन, रक्षक दिन रैना। अंग जय।
कर शोभित बर परशु, निगमागम ज्वाता।
कंध चाप-शर वैणाव, ब्राह्मण कुल ज्वाता। अंग जय।
माता पिता तुम स्वामी, मीत सखा मेरे।
मेरी विरद संभारो, द्वार पड़ा में तेरे। अंग जय।
अजर-अमर श्री परशुराम की, आरती जो गावे।
‘यूर्णेन्दु’ शिव साखिक, सुख सम्पति पावे। अंग जय।

श्री श्याम चालीसा

श्री श्याम (खाटू) चालीसा

॥ तोहा ॥
श्री गुरु चरण ध्यान धर, सुपीर सचिवदान्र।
श्याम चालीसा भण्यत हैं, रच चौपाई छंद॥

॥ चौपाई ॥
श्याम श्याम भजि बारबारा, सहज ही हो भवसागर पारा।
इन सम देव न दूजा कोई, दीन दयालु न दाता होई।
भीमसुपुज अहिलवती जाया, करती भीम का पीत्र कहाया।
यह सब कथा सही कल्यात्न, तत्तिक न मानो इसमें अनत।
बर्बरीक विषु अवतारा, भक्तन हेतु मनुज तनु धारा।
वसुदेव देवकी प्यारे, परेपुरति मैया नन्द दुलारे।
मधुसूदन गोपल मुरारी, बुजिकेशौर योवर्धन धारी।
श्री श्याम चालीसा

सियाराम श्री हरि गोविंदा, दीनपाल श्री बाल मुक्नदा।
दामोदर रणछोड़ विहारी, नाथ द्वारिकाधीश खरारी।
नरहरि रूप प्रहलाद ध्यारा, खर्श्य फारि हिन्नाकुश मारा।
राधा वल्लभ ब्रजमणि कंता, गोपी वल्लभ कंस हंसता।
मनमोहन चित्तचोर कहाये, पार्थन चोरि चोरि कर खाये।
मुरलीधर यदुपति घनश्याम, कृष्ण पतितपावन अभिरामा।
मायापति लक्ष्मीपति ईंधा, पुरुषोत्तम केशव जगदीश।
विश्वपति त्रिभुवन उजियारा, दीन बन्धु भक्तन रखवारा।
प्रभु का भेद कोई न पाया, शेष महेश थके युनियारा।
नारद शारद श्रीश्वर चोरिदर, श्याम श्याम सब रस निरंतर।
करि कोविद करि सके न गिनता, नाम अपार अंशाह अन्तरा।
हर सृष्टि हर युग में भाई, ले अवतार भक्त सुखदाई।

श्री श्याम चालीसा

हदय माँहि करि देखु विचारा, श्याम भजे तो हो निस्तारा।
कोर पढ़ावत गणिका तारी, भीलनी की भक्ति बलिहारी।
सती अहिल्या गौतम नारी, भई श्राप वश शिला दुःखारी।
श्याम चरण रज नित लाई, पहुँची पतिलोक में जाई।
अजामिल अरु सदन कसाई, नाम प्रताप परम गति पाई।
जाके श्याम नाम अधारा, सुख लहि हुँख दूर हो सारा।
श्याम सुलोचन है अति सुदर, मोर मुकुट सिर तन पीताम्बर।
गल वैज्ञानिमाल सुहाई, छवि अनूप भक्तन मन भाई।
श्याम श्याम सुमिरु दिनराती, शाम दुःखरि अरु परभाती।
श्याम सारथी जिसके रथ के, रोड़े दूर होय उस पथ के।
श्याम भक्त न कहिं पर हारा, भीर परित तब श्याम पुकारा।
रसना श्याम नाम रस पी ले, जी ले श्याम नाम के हाले।
संसारी सुख भोग मिलेगा, अत श्रीयाम सुख योग मिलेगा।
श्रीयाम प्रभु हैं तन के काले, मन के गोरे भोले भाले।
श्रीयाम संत भक्तन हितकारी, रोग दोष अघ नाशे भारी।
प्रेम सहित जे नाम पुकारा, भक्त लगत श्रीयाम को प्यारा।
खाटू में है मधुरा वासी, पार ब्रह्म पूराण अविनासी।
सुधा तान भरि मुरली बजाई, चहुँ दिशि नाना जहाँ सुनि पाई।
वृद्ध बाल जेते नारी नर, मुष्ख भये सुनि वंशि के स्वर।
दोड़ दोड़ पहुँचे सब जाई, खाटू में जहाँ श्रीयाम कन्हाई।
जिसने श्रीयाम स्वरूप निहारा, भव भय से पाया छुटकारा।
॥ दीर्घा ॥
श्रीयाम सलोने साँबेरे, बबरीक तनु धार।
इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार॥

आरती श्री श्रीयाम जी की
ॐ जय श्रीयाम हरे, प्रभु जय श्रीयाम हरे।

निज भक्तन के तुमने पूराण काम करें।
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, गल पुष्पों की माला, सिर पर मुक्त धरे।
पीत बसन पीताम्बर, कुण्डल कर्ण पड़े॥
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, रत्नसंहारन राजम्, सेवक भक्त खड़े।
खेवत धूप अर्नि पर, दीपक ज्योति जरे॥
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, मोदक खिर चूरमा, सुवर्ण शाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सिर पर चंचल कुरे॥
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, ज्ञानुष, नागारा और चंडियाबल, शंख मूंड घुरे।
भक्त आरती गावें, जय जयकार करें।
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरें।
सेवक जब निज मुख से, श्रीयाम श्रीयाम उबरे॥
हरि �ॐ जय श्रीयाम हरे, श्रीयाम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे।
गावत दासमनोहर, मन वाक्षर फल पावे॥
श्री रामदेव चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु पद नमन करि, गिरा गनेश मनाय।
कर्षु रामदेव विमल यश, सुने पाप विनश्य॥
द्वार केश ने आय कर, तिया मनुज अवतार।
अजमल गेह बधावणा, जग में जय जयकार॥

॥ चौपाई ॥

जय जय रामदेव सुर सत्या, अजमल पुत्र अनोखी माया।
विष्णु रूप सुर नर के स्वामी, परम प्रतापी अत्यायी।
ले अवतार अवनि पर आये, तंत्र वंश अवतंश कहाये।
संत जनों के कारज सारे, दानव दैत्य दुष्ट संहारे।

श्री रामदेव चालीसा

॥ परच्या प्रथम पिता को दीन्हा, दृढ परीण्डा मांही कीन्हा। कुमकुम पद पोली दर्शायें, ज्योंही प्रभु पलने प्रगटायें। परच्या दूजा जननी पाया, दृढ उपाणता चरा उठाया। परच्या तीजा पुरजन पाया, चिथड़ों का घोड़ा ही साया। परच्या चौथा भैरव मारा, भक्त जनों का कघ नवारा। पंचम परच्या रत्ना पाया, पुंगल जा प्रभु फंद मुड़ाया। परच्या छठा विजयसिंह पाया, जला नगर शरणागत आया। परच्या सप्तम सुगन्ध पाया, मुवा पुत्र हंसता भग आया। परच्या आषाम बौहित पाया, जा परदेश प्रव्य बहु लाया। भवर दूबती नाव उबारी, प्रगत टेर पहुँचे अवतारी। नवमं परच्या बीरम पाया, बनियां आ जब हाल सुनाया। दसवं परच्या पा विनजारा, मिश्री बनी नमक सब खारा।
परंतु ग्यारह किरपा धारी, नमक हुआ मिश्री फिर सारी।
परंतु द्वादश ठोकर मारी, निकलन्ग नाडी सिरजी चारी।
परंतु तेरहवां पीर परि पठारया, ल्याय कटौरा कारज सारा।
चौदहवां परंतु जाभो पाया, निजसर जल खारा करवाया।
परंतु पन्द्रह फिर बलालया, राम सरोवर प्रभु खुदवाया।
परंतु सोलह हर्षु पाया, दर्श पाय अतिशय हरवाया।
परंतु सत्रह हर जी पाया, दूध धणां बकरवा के आया।
सुखी नाडी पानी कीन्हा, आत्म ज्ञान हरजी ने दीन्हां।
परंतु अठारहवां हाकिम पाया, सूते को धरती लुढ़काया।
परंतु उन्नीसवां दल जी पाया, पुत्र पाय मन में हरवाया।
परंतु बीसवां पाया सेठाणी, आये प्रभु सुन गदगद वाणी।
तुरंत सेठ सरजीवण कीन्हा, भक्त उजागर अभय वर दीन्हा।

एक्सीसवां चोर जो पाया, हो अथा करनी फल पाया।
परंतु बाईसवां मिरजों चीहां, साती तवा बेध प्रभु दीन्हां।
परंतु तेहसवां बादशाह पाया, फेर भक्त को नहीं सताया।
परंतु चौवेसवां बख्सी पाया, मुवा पुत्र पल में उठ धाया।
जब-जब जिसने सुम्सरण कीन्हां, तव-तब आ तुम्ह दर्शन दीन्हां।
भक्त तेर सुन आतुर धारे, चढ़ लीले पर जल्दी आते।
जो जन प्रभु की लीला गावें, मनोविषेत कारज फल पावें।
यह चालीसा सुने सुनावे, ताके कष्ट सकल कट जावे।
जय जय जय प्रभु लीला धारी, तेरी महिमा आपसमारी।
मैं घरेलु कथा गुण तब गावें, कहाँ बुद्धि शारद सी लावँ।
नहीं बुद्धि बन घट लव लेशा, मती अनुसार घरी चालीसा।
दास सभी शरण में तेरी, रखियो प्रभु लज्जा मेरी।
आरती श्री रामदेव जी की

अंजलि जय श्री रामदेव स्वामी जय श्री रामदेव।
पिता तुम्हारे अजमल मैया मेनादे॥ ॐ जय॥
रूप मनोहर जिसका घोड़े असवारी।
कर में सोहे भाला मुक्तामणि धारी॥ ॐ जय॥
विष्णु रूप तुम स्वामी कलियुग अवतारी।
सुरत मुनिजन ध्यावे जावे बलिहारी॥ ॐ जय॥
दुःख दलजी का तुम्हारे पल भर में दारा।
सरजीवन भाण को तुमने कर डारा॥ ॐ जय॥
नाव सेठ की तारी दानव को मारा।
पल में कीवा तुमने सरवर को खारा॥ ॐ जय॥

श्री पितर चालीसा

दोहा॥
हे पितरेश्वर आपको दे दियो आशीर्वाद,
चरणाशीश नवा दियो रखदो सिर पर हाथ।
सबसे पहले गणपत पाछे घर का देव मनावा जी,
हे पितरेश्वर दया राखियो करियो मन की चाया जी॥

चीपाई॥
पितरेश्वर करो मार्ग उजागर, चरण रज की मुक्ति सागर।
परम उपकार पितरेश्वर कीहा, मनुष्य योगिया में जनन दीनः।
मातृ-पितृ देव मनजो भावे, सोई अमित जीवन फल पावे।
जै-जै-जै पितर जी साई, पितृ ऋण बिन मुक्ति नाहिं।
चारों और प्रताप तुम्हारा, संकट में तेरा ही सहारा।
नारायण आधार सृजित का, पितरजी अंश उसी दृष्टि का।
प्रथम पूजन प्रभु आज्ञा सुनाते, भाग्य द्वारा आप ही खुलवाते।
झंडूनू ने दरबार है साजे, सब देवो संग आप विराजे।
प्रसन होत मनवांछित फल दीना, कुपित होय बुद्धि हर लीना।
पितर महिमा सबसे न्यारी, जिसका गुणगावे नर नारी।
तीन मण्ड में आप विराजे, बसु रुद्र आदित्य में साजे।
नाथ सकल संपदा तुम्हारी, में सेवक समेत सुत नारी।
छपन भोग नहीं हैं भाते, शुद्ध जल से ही तुप्त हो जाते।
तुम्हारे भजन परम हितकारी, छोटे बड़े सभी अधिकारी।
भानु उदय संग आप पुजावै, पांच अङ्गुलि जल रिझावै।
ध्वज पताका मण्ड धे है साजे, अखण्ड ज्योति में आप विराजे।
सविदायं पुरानी ज्योति तुम्हारी, धन्य हुई जन्म भूमि हमारी।
शाहीद हमारे यहाँ पुजाते, मातृ भक्ति संदेश सुनाते।

जगत पितरो सिद्धान्त हमारा,धर्म जाति का नहीं है नारा।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब पूजे पितर भाई।
हिन्दु वंश वृक्ष है हमारा, जान से ज्यादा हमको ध्यारा।
गंगा ये मसूरप्रेदश की, पितृ तर्पण अनिवार्य परिवेश की।
बंधु छोड़ना इनके चरणां, इन्हें की कृपा से मिले प्रभु शरणा।
धन्य जन्म भूमि का वो फूल है, जिसे पितृ मण्डल की मिली धूल है।
श्री पितर जी भक्ति हितकारी, सुन लीजे प्रभु अरज हमारी।
निशादिन ध्यान धरे जो कोई, ता सम भक्ति और नहीं कोई।
तुम अनाथ के नाथ सहाई, दीनन के हो तुम सदा सहाई।
चारिक वेद प्रभु के साथी, तुम भक्तन की लंज्जा राखी।
नाम तुम्हारो लेत जो कोई, ता सम धन्य और नहीं कोई।
पितारी को स्थान दो, तीरथ और स्वयं ग्राम।
श्रद्धा सुमन चढ़ें वहां, पूरण हो सब काम॥
झुंझुनूं धाम विराजे हैं, पितार हमारे महान।
दर्शन से जीवन सफल हो, पूजे सकल जहाँ॥

आरती श्री पितार जी की

जय जय पितारजी महाराज, में शरण पड़ो हूँ थारी।
शरण पड़ो हूँ थारी बाबा, शरण पड़ो हूँ थारी॥
आप ही रक्षक आप ही दाता, आप ही खौफनहों।
मैं मूरख हूँ क़छूँ नहीं जाणूँ, आप ही हो रखवारे॥ जय”
आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी।
हम सब जन हैं शरण आपकी, है ये अरज गुजारी॥ जय”
देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई॥ जय”
भक्त सभी हैं शरण आपकी, अपने सहित परिवार।
रक्षा करो आप ही सबकी, रात्रें मैं बारम्बार॥ जय”
श्री बाबा गंगाराम चालीसा

॥ दोषा द ॥
अलख निर्जन आप हैं, निरगुण सुगुण हमेशा।
नाना विधि अवतार धर, हरते जगत कलेश।
बाबा गंगारामजी, हुए विष्णु अवतार।
चमत्कार लख आपका, गृंज उठी जयकार।

॥ चौथाई ॥
गंगाराम देव हितकारी, वैश्य वंश प्रकटे अवतारी।
पूर्वजन्म फल अमित रहें, धन-धन धीत मातु भयें।
उत्तम कुल उत्तम सतसंगा, पावन नाम राम अरू गंगा।
बाबा नाम परम हितकारी, सत सत वर्ष सुमंगलकारी।

श्री बाबा गंगाराम चालीसा

॥ चौथाई ॥
बीतति हि जम्म देघ सुध नहीं, तपत तपत पुनि भयें गुसाई।
जो जन बाबा में चित लाव, तेहि परताप अमर पद पाव।
पार झुंझनू धाम तिहारे, शरणागत के संकट टारे।
धरम हेतु सब सुख बिसराये, दीन हीन लिख हदय लगाये।
एहि विधि चालीस वर्ष बिताये, अन देघ तज देघ कहाये।
देवलोक भई कंचन काया, तब जननित संदेश पठाया।
निज कुल जन को स्वण दिखावा, भावी करम जतन बतलावा।
आपन सुत को दर्शन दीं हों, धरम हेतु सब कराज कीन्तीं।
नभ वाणी जब हुई निशा में, प्रकट भई छवि पूर्व दिशा में।
ब्रह्मा विष्णु शिव सहित गणेशा, जिमि जननित प्रकटें सब ईशा।
चमत्कार एहि भांति दिखावा, अन्तरध्यान भई सब माया।
सत्य वचन सुनि करहि विचारा, मन मह गंगाराम पुकारा।
श्री बाबा गंगाराम चालीसा

169

जो जन करई मनौतिन मन में, बाबा पीर हरहिं पल ४हन में।
न्यो निज रूप दिखावहि सांचा, त्यों त्यों भक्तवृद तेहिं जांचा।
उच्च मनोरथ शृंचि आचारी, राम नाम के अटल पुजारी।
जो नित गंगाराम पुकारे, बाबा दुख से ताहि उबारे।
बाबा में जिन्ह चिन्त लगावा, ते नर लोक सकल सुख पावा।
परहित बसहि जाहि मन माही, बाबा बसहि ताहि तन माही।
धरहि ध्यान रावरो मन में, सुखसंतोष लहि न मन में।
धर्म वृक्ष जेहि तन मन सींचा, पार ब्रह्म तेहि निज में खींचा।
गंगाराम नाम जो गावे, लहि बैंकृन्थ परम पद पावे।
बाबा पीर हरहि सब भांति, जो सुमे निश्चल दिन राति।
दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरी पाप हम शरण तिहारी।
पंचदेव तुम पूर्ण प्रकाशा, सदा करो संतन मंह बासा।

170

तारण तरण गंग का पानी, गंगाराम उभय सुनिशानी।
क्रृपासिंधु तुम हो सुखवाग, सफल मनोरथ करहु कुपाकर।
झुंझुंजूं नगर बढ़ा बड़ भागी, जहं जनमें बाबा अनुरागी।
पूर्ण ब्रह्म सकल घटवासी, गंगाराम अमर अविनाशी।
ब्रह्म रूप देव अति भोला, कानन कुण्डल मुकुट अमोला।
नित्यानंद तेज सुख रासी, हरहु निशातन करहु प्रकासी।
गंगा दशहरा लागहि मेला, नगर झुंझूं घं मधु शुभ बेला।
जो नर कीर्तन करहि तुम्हारा, छवि निरिन्ध मन हरष अपारा।
प्रतिकाल ले नाम तुम्हारा, चौरासी का हो निस्तारा।
पंचदेव मन्दिर विश्वासा, दरशन हित भगतन का तांता।
जय श्री गंगाराम नाम की, भवतारण तरिष परम धाम की।
‘महावीर’ धर्म ध्यान पुनीता, विरचेज गंगाराम सुगीता।
आरती बाबा गंगाराम जी की

दोहा

सुने सुनावे प्रेम से, कोर्तन भजन सुनाम।
मन इच्छा सब कामना, पृष्ठ गंगाराम।

आरती बाबा गंगाराम जी की

जय हो गंगाराम बाबा जय हो गंगाराम।
कष्ट निवारण मंगल दायक हो सब सुख के धाम।
बाबा” सच्चे मन से ध्यान धेरे जो उनके सारे काम।
धन-वैभव वह सब सुख पाता जाने जगत तमाम।
बाबा” प्रात:काल थारी करा वन्दना ले कर थारे नाम।
चन्दन पुष्क चढ़ा थारे और करा प्रणाम।
बाबा” रोग शोक काटे थे सबका बसो झुंझू धाम।
आ मन्दिर जो दर्शन करसी पासी सुख सन्तान।
बाबा”

आरती बाबा गंगाराम जी की

देवलोक में आप विराजो सारे जग में हो महान।
जो कोई सुभिमण करे आपका हो निशचय कल्याण।
बाबा” श्रद्धा भाव जो मन में राखे धेरे आपका ध्यान।
उसकी रक्षा आप करो नित हो कृपण के धाम।
बाबा” में हां बालक थारा बाबा महान नहीं कुछ ज्ञान।
हाथ जोड़कर विनति करो में हां भोला नादान।
बाबा” सुख सम्पति के देने वाले सदा करो कल्याण।
भूल-चूक म्हारी माफ करो थे देव बड़े बलवान।
बाबा”
श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गा सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःख हरनी।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिंठू लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेन्द्र लाल भूकुटी विकराला।
रूप मातृ को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे।
तुम संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन धन दीना।
अनन्युर्ण हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला।
प्रलयकाल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हे गुण गावे, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावे।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्ध ऋषि मुनिन उबारा।

धरा रूप नरसिंह को अम्बा, परगत भई फाड़ कर खम्बा।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरे जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं।
श्रीरसिन्धु में करत विलासा, दया सिंधु दीजे मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अभिन न जात बखानी।
मातंगी धूमावती माता, भुवनेश्वरी बगला सुख दाता।
श्री भरव तारा जग तारिणी, छिन भाल भव दुःख निवारिणी।
केहरि वाहन सोह भवानी, लांगुर वीर चलत अगवानी।
कर में खपप खड़ग विराजे, जाको देख काल डर भाजे।
सोहे अस्त्र और त्रिषूला, जाते उठत शतु हिय शूला।
नाग कोटि में तुम्हीं विराजत, तिंठू लोक में डंका बाजत।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार मही अकुलानी।
रूप कराल काली को धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा।
परि गाढ़ सतन पर जब जब, भई सहाय मातू तुम तब-तब।
अंगर पुरी और सब लोका, तब महिमा सब रहे अशोका।
बाला में है ज्योति तुम्हारी, तुमें सदा पूजाये नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो जस गावे, दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे।
ध्यावे तुमें जो नर मन लाईं, जन्म मरण ताको छुटि जाई।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर आचारज तप कीन्हों, काम अरु क्रोध जीति सब लीनों।
निशि दिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहीं सुमिरो तुमको।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी।

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहीं कीन विलाम्बा।
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बि न कौन हरे दुःख मेरो।
आशा तृणा निपट सतावे, रिपु मुरख मोहि अति डरावे।
शतु नाश कीजो महारानी, सुमिरों इक चिति तुम्हें भवानी।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्ध सिद्धि दे करहु निहाला।
जब लगि जियों दया फल पाऊँ, तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ।
दुर्गा चालीसा जो गावें, सब सुख भोग परम पद पावें।
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी।

॥ द्वादश॥
शरणागत रक्षा करें, भक्ति रहे निःशंक।
में आया तेरी शरण में, मातु लीनिये अंक॥
आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निश्चि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मूगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥ जय.
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राज़े।
रक्तपुष्प की माला कंठन पर साज़े॥ जय.
केहरि वाहन राजत खड़ी खण्डर धारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत तिनके दुखहरी॥ जय.
कानन कुण्डल शोभित नासाप्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥ जय.
शुभ निशुभ विदोरे महिषासुर घाती।
धृष्ट विलोचन नैना निशादिन मदमाती॥ जय.

चण्ड-मुण्ड संहरे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहिन करे॥ जय.
ब्रह्मणि, रुद्रणि, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय.
चौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरु।
वाजत ताल मृदुङ्गा अरु बाजत डमरु॥ जय.
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय.
भुजा चार अति शोभित वरमुद्रा धारी।
मनवाढित फल गावत सेवत नर नारी॥ जय.
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥ जय.
अम्बे की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवान्न स्वामी सुख-सम्पत्ति पावे॥ जय.
श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा

दोहा
नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज में करती नहीं विलम्ब॥

चोपारे
जय जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदित भवानी।
सिंहवाहिनी जय जगमाता, जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी, जय जय सन्त असुर सुर सेवी।
महिमा अभित अपार तुम्हारी, श्रेय सहस मुख वर्णत हारी।
दीनन के दुःख हरत भवानी, नंह देखो तुम सम कोउ दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अभित जगत विख्याता।
जो जन ध्यान तुम्हारे लावै, सो तुरतहि वांछित फल पावै।
तू ही वैष्णवी तू ही सुत्रानी, तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।

रमा राधिका श्रयामा काली, तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली।
उमा माध्वी चण्डी ज्वाला, बेगी मोहि पर होहु दयाला।
तू ही हिंगलाज महारानी, तू ही शीतला अरु विज्ञानी।
दुर्गा दुर्गा विनाशिणी माता, तू ही लक्ष्मी जग सुख दाता।
तू ही जाहवी अरु उत्राणी, हेमावती अरु विनाशनी।
अर्ध भुजी चोराहिनी देवा, करत विषु शिव जाकर सेवा।
चौसटी देवी कल्याणी, गौरी मंगला सब गुण खानी।
पाटन मुर्मा दत्त कुमारी, भद्रकालि सुन विषय हमारी।
वज्र धारणी शोक नाशिणी, आय रक्षणी विन्ध्यवासिनी।
जया और विजया बैताली, मात संकटी अरु विकाराली।
नाम अनन्त तुम्हारे भवानी, बरने किम्बि मानुष अज्ञानी।
जाप कृपा माता तत्त होई, तो वह करै चहै मन जोई।
कृपा करहु मोपर महारानी, सिद्ध करिए अब यह मम बानी।
श्री विन्दुशेष्वरी चालीसा

जो नर धरे मात कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याणा।
विपति ताहि सपनेहु नहीं आवे, जो देवी का जाप करावे।
जो नर कहं ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करे शतबारा।
निश्चय ऋण मोचन होई जाई, जो नर पाठ करे मन माई।
असुति जो नर पढ़े पढ़ावे, या जग में सो अति सुख पावे।
जाको व्याधि सतावे भाई, जाप करत सब दूर पराई।
जो नर अति बदनी महं होई, बार हजार पाठ कर सोई।
निश्चय बदनी ते छुटि जाई, सत्य वचन मम मानहु भाई।
जापर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहं सुमिरे सोई।
जा कहं पुत्र होय नहं भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
पाँच वर्ष सो पाठ करावे, नौरातन में विन्य जिमावे।
निश्चय होहं प्रसन भवानी, पुत्र देहि ताकहं गुणखानी।
ध्वजा नारियल आन चढ़ावे, विधि समेत पूजन करावे।

आरती श्री विन्दुशेष्वरी देवी जी की

नित्य प्रति पाठ करे मन लाई, प्रेम सहित नहं आन उपाई।
यह श्री विन्दुशेष्वरी चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
यह जसि अचरज मानहु भाई, कृपा दृष्टि जापर हुई जाई।
जय जय जय जग मातु भवानी, कृपा करहु मोहि पर जन जानी।

आरती श्री विन्दुशेष्वरी देवी जी की

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी, तेरा पार न पाया॥ टैक॥
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तेरी भेंट चढ़ाया॥
सुवा चोली तेरा अंग विराज, केशर तिलक लगाया।
नंगे पावं तेरा अकबर जाकर, सोने का छत्र चढ़ाया॥
ऊँचे ऊँचे पर्वत बना देवालय, नीचे शहर बसाया।
सत्युग त्रेता द्वापर मध्य, कल्युग राज सवाया॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, मोहन भोग लगाया।
ध्यानू भगत मैया (तेरा) गुण गावें, मन वांछित फल पाया॥
श्री लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥
मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

॥ सौरठा ॥
यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करहूँ।
सबविधि करि सुवास, जय जननि जगदबिका॥

॥ चीराई ॥
सिद्धु सुता में सुमिरों तोहै, ज्ञान बुद्धि विद्या देह मोही।
तुम समान नहीं कोई उपकारी, सब विधि पुरवहु आस हमारी।
जय जय जय जननी जगदब्बा, सबकी तुम ही हो अवलम्बा।
तुम हो सब घट घट के वासी, विनती यही हमारी खासी।

श्री लक्ष्मी चालीसा

॥ नवं ॥
जग जननी जय सिद्धुकुमारी, दीनन की तुम हो हितकारी।
विनवो निव सुमहहि महारानी, कृपा करो जग जननि भवानी।
केहि विधि स्तुति करिन तिहारी, सुधि लीजि अपराध बिसारी।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी, जग जननी विनती सुन मोरी।
ज्ञान बुद्धि सब सुख का दाता, संकट हरो हमारी माता।
क्षीर सिद्धु जब विषु मशायो, चौदह रत सिद्धु में पायो।
चौदह रत में तुम सुखारसी, सेवा कियो प्रभु बन दासी।
जो जो जनम प्रभु जहां लीना, रूप बदल तहें सेवा कीहा।
स्वयं विषु जब नर तनु धारा, लीनेंउत अवधुपुरी अवतारा।
तब तुम प्रगट जानकपुर माहं, सेवा कियो हृदय पुलकाहं।
अपनायो तोहि अन्तर्यामी, विशाल विदित त्रिभुवन के स्वामी।
तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आती, कहैं लाँ महिमा कहां बखानी।
मन क्रम वचन करै सेवकाई, मन इच्छित वांछित फल पाई।
श्री लक्ष्मी चालीसा

तज में कपोट और चतुर्गाएं, पूजहि विविध भाँति मनलाई।
और हाल में कहीं बुढ़ाई, जो यह पाठ करे वह मन लाई।
ताके कोई कष्ठ न होई, मन इत्चित पावे फल सोई।
श्राहि श्राहि जय दुःख निवारिणि, ताप भव बंधन हारिणि।
जो यह पढ़े और पढ़वें, ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।
ताके कोई न रोग सतावै, अनु श्रादिध धन सम्पति पावै।
पुनःहीन अरु संपत्तिहीना, अन्ध बधिर कोड़ी अति दीना।
विप्र बोलाय के पाठ करावे, शंका दिल में कभी न लावै।
पाठ करावै दिन चालीसा, तापर कृपा करें गौरीसा।
सुख सम्पति बहुत सो पावै, कभी नहीं काहु की आवै।
बारह मास करै सो पूजा, तेहि सम धन्य और नहीं दूजा।
प्रतिदिन पाठ करे मनमाही, उन सम कोई जग में कहुँ नाहीं।
बहु विविध क्या में करैं बड़हाई, लेव परीक्षा ध्यान लगाई।

श्री लक्ष्मी चालीसा

करि विश्वास करै ब्रत नेमा, होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।
जय जय जय लक्ष्मी भवानी, सब में व्यापित हो गुणाखानी।
तुमहारे तेज प्रबल जग माही, तुम समकोट धयालु कहूँ नाही।
मोहि अनाथ की सुध अब लीजे, संकट कालों भक्ति मोहि दीजे।
भूल चूक करि क्षमा हमारी, दर्शन दीजे दशा निहारी।
कहिं प्रकार में करैं बड़हाई, ज्ञान बुद्धि मोहि नहीं अधिकाई।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी, तुमहि अछूत दुःख सहते भारी।
नाही मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में, सब जानत हों अपने मन में।
रूप चतुर्भुज करके धारणा, कष्ट मोर अब करहु निवारण।

|| तोहा ||
श्राहि श्राहि दुःख हारिणि, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुमरन का नाश।
रामदास धारि ध्यान निद्रा, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास श्री, करहु दया की कोर।
श्री महालक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥
जय जय श्री महालक्ष्मी कर्म तव ध्यान।
सिद्ध काज मम कीजिए निज शिशु सेवक जान॥

॥ चोरां॥
नमो महा लक्ष्मी जय माता, तेरे नाम जगत विख्याता।
आदि शक्ति हो माता भवानी, पूजन सब नर मुनि ज्ञानी।
जगत पालिन सब सुख करनी, निज जनहित भण्डारन भरनी।
श्वेत कमल दल पर तव आसन, माता सुशोभित है पद्मासन।
श्वेताम्बर अरु श्वेता भूषण, श्वेताहि श्वेत सुसप्निजत पुष्पन।
श्रीश छत्र अति रूप विशाला, गल सोहे मुक्तन की माला।
सुदर सोहे कुंचित केशा, विमल नयन अरु अनुपम भेषा।
कमलनाल समभूज तवचारि, सुरनर मुनिजनित सुखकारी।

अद्भुत छटा मात तववानी, सकलविश्व कीहो सुखखानी।
शातिस्वभाव मूदुलवत भवानी, सकल विश्वको हो सुखखानी।
महालक्ष्मी धन्य हो माई, बंच तत्व में सृष्टि रचाई।
जीव चराचर तुम उपजाए, पशु पक्षी नर नारि बनाए।
क्षितितल अगणित वृक्ष जमाए, अमितरंग फल फूल सुहाए।
छवि बिलोक सुरमुनि नरारी, करे सदा तव जय-जय कारी।
सुपरि ओ नरपत सब ध्यावं, तेरे समुख श्रीश नवावं।
चारहु वेदन तव वश गाया, महिमा अगम पार नहीं पाया।
जापर करहु मातु तुम दाया, सोई जम धन्य कहाया।
पल में राजाहि रंक बनाओं, रंक राव कर बिलम न लाओं।
जिन घर करहु मातुम बासा, उनका यश हो विश्व प्रकाश।
जो ध्यावं सो बहु सुख पावं, विमुख रहै हो तुरुच उठावं।
महालक्ष्मी जन सुख दाईं, ध्यांजु तुरंको श्रीश नवाईं।
निजजन जानिमोहि अपनाओ, सुरक्षित सप्त दे दुख नसाओ।
आ० श्री-श्री जयसुखकी खानी, रिद्धसिद्ध देव माता जनजानी।
आ०ह्री-आ०ह्री सब व्याधिहटाओ, जनउन बिमल दृष्टिदशाओ।
आ०कली-आ०कली श्रद्धु क्षयकै, जनहित माता अभ्य वरदीज।
आ० जयजयति जयजननी, सकल काज भक्तन के सरनी।
आ० नमो-नमो भवनिधि तारनी, तरण भव प्रेर से पार उतारनी।
मुहु मात यह विनय हमारी, पुरवहु आशन करहु अबारी।
ऋणी दुखी जो तुमको ध्यावै, सो प्राणी सुख सम्पति पावै।
रोग प्रसिद्ध जो ध्यावै कोई, ताकी निर्मल काया होई।
विष्णु प्रिया जय-जय महाराणी, महिमा अपित न जय बखानी।
पुत्रहीन जो ध्यान लगावै, पाये सुत अतिह हुलसावै।
ग्राहि ग्राहि श्राणागत तेरी, करहु माता अब नेक न देरी।
आवहु मात विलङ्क न कीजै, हुदय निवास भक्त बर दीजै।

आरां जय तप का नहीं भेवा, पार करौ भवनिधि वन खेबा।
बिनाओं बार-बार कर जोरी, पूरण आशा करहु अब मेरी।
जानि दास मम संकट तारी, सकल व्याधि से मोहि उबारी।
जो तब सुरूति रहें लव लाई, सो जग भववे सुयश बढ़ई।
छायो यश तेरा संसारा, पवात रेश शाम्भु नहीं पासा।
गोविंद निश्चिन्द शरण तिहारी, करहु पूरण अभिलाष हमारी।
॥ तोहः ॥

महालक्ष्मी चालीसा पढ़ि सुनै चित लाई।
ताहि पदार्थ मिले अब कह वेद अस गाय।

आरती श्री लक्ष्मी (महालक्ष्मी) जी की
जय लक्ष्मी माता, जय लक्ष्मी माता।
तुमको निश दिन सेवत, हर विश्व विधाता॥ जय॥
आरती श्री लक्ष्मी जी की

ब्रह्माणी कमला तू ही है जग माता।
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ जय॥
दुर्गा रूप निंदाजन, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋविषि सिद्धि धन पाता॥ जय॥
तू ही है पाताल बसनी, तू ही है शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक, जग निधि में त्राता॥ जय॥
जिस घर थारा वासा, जेहि में गुण आता।
कर न सके सोई करले, मन नहीं धड़काता॥ जय॥
तुम बिन यज्ञ न होवे, वक्त्र न होन राता।
खान पान को तैयार, तुम बिन गुण दाता॥ जय॥
शुभ गुण सुन्दर मुक्ति, श्रीर निधि जाता।
मनचुतुर्दश ताको, कोई नहीं पाता॥ जय॥
यह आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता।
उर आनंद अति उम्में, पाप उतर जाता॥ जय॥

श्री सरस्वती चालीसा

॥ दोहा ॥
जनक जननी पुदम दुर्ज, निज मस्तक पर धारि।
बद्री नारद सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि॥
पूर्ण जगत में व्याप तब, महिमा अभिध अनंतु।
रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हनु॥
॥ चौपाई ॥
जय श्रीशक्ति बुद्धि बलरासी, जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी।
जय जय जय बीमाकर धारि, करती सदा सुह्मस सवारी।
रूप चारुभुजधारी माता, सकल विश्व अन्दर विख्याता।
जग में पाप बुद्धि जब होती, तबही धर्म तो फोकी ज्योति।
तबही मातु का निज अवतारा, पाप हीन करती महि तारा।
बाल्मीकि जी थे हत्यारा, तब प्रसाद जाने संसारा।
रामचरित जो रचे बनाई, आदि कवि पदवी को पाई।
कालिदास जो भये विघ्नाता, तेरी कृपा दृष्टि से माता।
तुलसी सूर आदि विद्वाना, भये और जो ज्ञानी नाना।
तिन्ह न और रहें अवलंबा, केवल कृपा आपकी आम्बा।
करहू कृपा सोई मातु भवानी, दुःखित दीन नज दासहि जानी।
पुत्र करई अपराध बहूता, तेहि न धरा चित सुन्दर माता।
राखु लाज जननि अब मेरी, विनय करू भूति बहुतेरी।
मैं अनाथ तेरी अवलंबा, कृपा करऊ जय जय जगदंबा।
मधु कैटभ जो अति बलवाना, बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना।
समर हजार पाँच में घोरा, फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा।
मातु सहाय कीह तेहि काला, बुद्धि विपरीत भई खलहाला।
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी, पुरवहु मातु मनोरथ मेरी।

चंड मुण्ड जो थे विघ्नाता, छण महु संहारें तेहिमाता।
रक्तबीज से समरथ पापी, सुरमुनि हदय धरा सब काँपी।
काटेउस सिर जिम कदली खंभा, बार बार बनऊंगे जगदंबा।
जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा, छण में वधे ताहि तू आम्बा।
भरत-मातु बुद्धि फेरें जाई, रामचन्द्र बनवास कराई।
एहिविधि रावन वध तू कीहा, सुर न नूति सबको खुर दीनहा।
को समरथ तव यश गुन गाना, निगम अनादि अनंत बरখाना।
विष्णु रुद्र अज सकहिन मारी, जिनकी हो तुम रक्षाकारी।
रक्त दनिका और शताश्री, नाम अपार है दानव भक्षी।
दुर्गम काज धरा पर कीहा, दुर्गा नाम सकल जग लीनहा।
दुर्गा आदि हरसी तू माता, कृपा करहू जब जब सुखदाता।
नृप कोपित को मारन चाहे, कानन में धेरे मृग नाह।
सागर मध्य पोत के भंजे, अति तूफान नहीं कोऊ संगे।
भूत प्रेत बाधा या दुःख में, हो दरिद्र अथवा संकट में।
नाम जपे मंगल सब होई, संशय इसमें करके न कोई।
पुत्रहीन जो आतुर भाई, सबै छाँड़ पूजे एहि माई।
कै चाँद नित यह चालीसा, होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा।
धूमधिक नवेंद्र चढ़ावैं, संकट रहित अवश्य हो जावै।
भक्ति मातू की कैँ हमेशा, निकट न आवै ताहि कलेशा।
बंदी पाठ करे सत बारा, बंदी पाश दूर हो सारा।
रामसागर अधि हेतु भवानी, कोजै कृपा दास निज जानी।

॥ लोहा ॥

मातू सूर्य कान्ति तव, अथकार मम रूप।
दूबन से रक्षा करहु, परँ न में भव कृप॥
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातू।
राम सागर अधि को आश्रय तू ही ददातु॥

आरती श्री सरस्वती जी की

आरती करतु सरस्वती मातू, हमारी हो भव भय हारी हो।
हंस वाहन पदमसन तेरा, शुभ वस्त्र अनुपम है तेरा।
रावण का मन कैसे फेरा, वर मांगत वन गया सबेरा।
यह सब कृपा सिधारी, उपकारी हो मातू हमारी हो।
तमोज्जन नाशाक तुम रच हो, हम अमरजन विकास करती हो।
मंगल भवन मातू सरस्वती हो, बहुमूलक वाचाल करती हो।
विद्या देते बाली वीणा, धारी हो मातू हमारी।
तुहारी कृपा गणनायक, लायक विष्णु भये जग के पालक।
अभ्य भक्तय सृष्टि ही कारण, भये शारु संसार ही घालक।
बंदो आदि भवानी जग, सुखकारी हो मातू हमारी।
सदबुद्धि विद्याबाल मोहि दीजै, तुम अज्ञान हटा रख लीजै।
जनभूमि हित अर्पण कीजै, कर्मवीर भसमहि कर दीजे।
ऐसी विनय हमारी भवभय, हरी, मातू हमारी हो, आरती करतु सरस्वती मातू॥
श्री गायत्री चालीसा

॥ दोहा ॥
हाँ, श्रीं कलं मेघा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड।
शांति क्षांति, तांगृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड॥
जगत जननी, मंगल करनी, गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा स्वाहा पूरन काम॥

॥ चीपाई ॥
भूभुजऽ: स्वः अङ युत जननी, गायत्री नित कलिमल दहनी।
अक्षर चौदीस परम पुनीता, इसमें बसे शास्त्र, श्रुति, गीता।
शास्त्रवात सतोगुणी सतरूप, सत्य सनातन सुधा अनूप।
हंसानुङ्ख श्वेताम्बर धारी, स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक, पुष्प, कमण्डलु, माला, शुभ वर्ण तनु नवन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई, सुख उपजत दुःख-दुसमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तर छाया, निराकार की अदभुत माया।
तुम्हारी शरण गही जो कोई, तै सकल संकट सों सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपी तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हारी महिमा पार न पावें, जो शारद शतमुख गुण गावें।
चार बेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महामत्र जितने जग माहीं, कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुभिरत हिय में ज्ञान प्रकाश, आलस पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननी भवानी, कालशात्री वरदा कल्याणी।
ब्रह्म विष्णु रुद्र सुर जेते, तुम सों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननिहं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जय जय जय त्रिपद प्रभ्यारी।
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।
तुम्ही जान कछू रहे न शोषा, तुम्ही पाय कछू रहे न क्लेशा।
जानत तुम्ही तुम्ही हैजाई, पारस परसी कुधातु सुहाई।
तुम्हारी शक्ति दिपए सब ठाई, माता तुम सब ठार समाई।
ग्रह नक्षत्र बग्राण धनेरे, सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक, पोषक, नाशक, त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी, मम सन तैर पातकी भारी।
जा पर कृपा तुम्हारी होई, ताप कृपा करे सब कोई।
जो बुद्धि ते बुद्धि बल पावे, रोगी रोग रहित है जावें।
दारिद मिटे, कटे सब पीरा, नारी दुःख है भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिता भारी, नासे गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुननति पावें, सुख सम्पति युत मोद मनावें।
भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।

जो सद्वा सुमरे चित लाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर वर सुहाग लहे कुमारी, विधावा रहें सत्यवत धारी।
जयत जयत मगंदं भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।
जो सद्वरू सों दीक्षा पावें, सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करें सुरुचि बड़ भागी, लहे मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता, सब समस्त गायत्री माता।
ऋषि, मृति, यति, तपस्वी, योगी, आरत, अर्थी, चिन्तत, भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवै, सो सो मन वाचित फल पावें।
बल, बुद्धि, विद्या, श्रील स्वभाऊ, धन, वैभव, यश, तेज, उषाऊ।
सकल बड़े उपजें सुख नाना, जो यह पाठ करै धरी ध्याना।

|| तोहा ||

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करें जो कोय।
ताप कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होि।
आरती श्री गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
अदि शक्ति तुम अलख, निरंजन जग पालन करौ, दुःख, शोक, भय, कलेश, कलह, दारिद्र, दैव धर्म।
ब्रह्माकृतिः, प्राणम पालिन, जगद्वात्रु आये, भव भय हारी, जन हिंकारी, सुभव जागरुकः।
भय हारिः, भव तारिण अभंधे, अज आँक राशी, अविकारी, अधरी, अविचलत, अमले अविकारी।
कामधेनु, सत, चित्त आन्दा, जग गद्गा गीता, सविता की श्रावती शक्ति, तुम सावित्री सीता।
९४, यजु, साम, अधर्म प्राणिनी प्राण महामहें, कुण्डलिनी सहस्रार सुपुन्ना शोभा गुण गरिये।
स्वाहा, स्वाहा, शैली, ब्रह्माणी, राधा, रुद्रणी, जय सतरुप, वाणि, विद्या, कमला, कल्याणी।
जननी हम हूँ दीप-हिंदु दुःख-दारिंद्र के घेरे, यद्यपि कुटिल, कपटी, कपूरत, तऊ बालक हूँ तेरे।
स्तोत्र सनि करणामयी माता, चरण शरण दीप, बिलकुल रहे हम शिरु सुत तेरे, दया दृष्टि की।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, हेंस हरे, शुद्ध बूढ़ा, निष्काश, हृदय मन को पवित्र करिये।
तुम समर्थ सब भूति तारणि तुष्टी-पुष्टि त्राता, सत्यमार्ग पर हमें चलाओ जो है सुख दाता।
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।

श्री काली चालीसा

|| दोहा ||

जय काली जगदम्ब जय, हरनि ओघ अघ पुंज।
वास करु निज दास के, निशादिन हृदय-निकुंज।
जयति कपाली कालिका, कंकाली सुख दान।
कृपा करु वरदायिनी, निज सेवक अनुमान।

|| चौपाइ ||

जय, जय, जय काली कंकाली, जय कपालिनी, जयति कालिन।
शंकर प्रिया, अपर्णा, अम्बा, जय कपर्दिनी, जय जगदम्ब।
आर्या, हला, अभिका, माया, कात्यायनी उमा जगजाया।
गिरिजा मैरी दुर्गा चण्डी, दक्षाणायिनी श्रावणी प्रचंडी।
पार्वती मंगला भवानी, विष्णुकारिणी सति मृदानी।
श्री काली चालीसा

सर्वंगला शैल नन्दिनी, हेमवति तुम जगत चन्दिनी।
ब्रह्मचारिणी कालरात्रि जय, महारात्रि जय मोहरात्रि जय।
तुम जिःमूरति रोहिणी कालिका, कृष्णाण्डा कार्तिकी चण्डिका।
तारा भुवनेश्वरी अनन्या, तुम्हीं छित्रमप्ता शुचिध्वन्या।
धूमावती चोड़की माता, बगला मातृंगी विश्वाता।
तुम भेरवी मातृ तुम कमला, रक्तदनिका कौरति अमला।
शापक्षरी कौशिकी भीमा, महातमा आग जग की सीमा।
चन्द्रघण्टिका तुम सावित्री, ब्रह्मचारिणी मां गायत्री।
रूढ्रिणी तुम कृष्ण पिंगला, अग्रिज्वाल तुम सर्वंगला।
मेधस्वना तपस्विनी योगीनी, सहस्त्राक्षी तुम अग्रज भोगीनी।
जलोदरी सरस्वती दाक्षिणी, नदिरंगश्वरी अजेय लाक्षिनी।
पुष्प तुष्प धृति स्पृति शिव दूती, कामाक्षी लज्जा आहूती।
महोदरी कामाक्षी हारिणी, विनायकी श्रुति महा शाक्तिनी।

अजाकर्ममोही ब्रह्मणी, धात्री वाराही शर्वाणी।
स्तंद मातृ तुम सिंह वाहिनी, मातृ सुभ्रत्र रहु दाहिनी।
नाम रूप गुण अभित तुम्हारे, शोष शारदा बरणत हारे।
तेन छवि श्रावास्त्र तव माता, नाम कालिका जग विख्याता।
अश्वदश तब भुजा मनोहर, तिनमाँ अस्त्र विराजत सिंद।
शंख चक्र अरु गदा सुहावन, परिघ भुवण्डी घण्टा पावन।
शूल बज धनुराण उठाये, निघितिर कुल सब मारि गिराये।
श्रुंध निरंभ दैत्य संहरे, रक्तबीज के प्राण निकारे।
चौंथी योगीनी नाचत संगा, मनुपात कीहूँ रण गंगा।
कटि किंकिणी मदुर नूपुर धुनि, दैत्यवंश कांपत जेहि सुनि-सुन।
कर खापर विशूल भयकारी, अहे सदा सतत सुखकारी।
श्रव आरुढ़ नृत्य तुम साजा, बजत युद्ध भेरी के बाजा।
रक्त पान अरिदल को कीहा, प्राण तजेज जो तुम्हि न चौन्हा।
लपलपाति जिझा तव माता, भक्तन सुख दुःखन दुःख दाता। लसत भाल सेंधर को टीको, बिखेरे केश रूप अति नीको। मुडमाल गल अतिशय सोहत, भुजामाल किंकण मनमोहतं। प्रलय नृत्य तुम करहु भवानी, जगद्वा कह वेद बस्खानी। तुम मशान वासिनी कराला, भजत तुरत काठइ भवजाला। बावन शक्ति पीठ तव सुन्दर, जहाँ विराजत विविध रूप धर। विन्धवासिनी कहुं बड़ाई, कहै कालिका रूप सुहाई। शाकम्भरी बनी कह ज्वाला, महिष्यासुर मर्दिनी कराला। कामाख्या तव नाम मनोहर, पुजवहि मनकामना हुतर। चंड मुड वध छिन महर करेउ, देवन के उर आनद भरेउ। सर्व व्यापिनी तुम माँ तारा, अरिदल दलन लेउ अवतार। खलबल मध्य सुन्दर डूँकारी, अगजग व्यापक देह तुमहारी। तुम विराट रूपा गुणवानी, विन्दु स्वरूपा तुम महारानी।

उत्पत्ति स्थिति लय तुम्हें कारण, करहु दास के दोष निवारण। माँ उर वास करहु तुम अंबा, सदा दीन जन की अवलंबा। तुम्हारो ध्यान धैरे जो कोई, ता कहैं भीति करहु नहीं होई। विश्वरूप तुम आदि भवानी, महिमा वेद पुराण बस्खानी। अति अपार तव नाम प्रभाव, जपत न सहन रंग दुःख दाव। महाकालिका जय कल्याणी, जयति सदा सेवक सुखदानी। तुम अनन्त आदिद्वम विभूषण, कीजिये कृपा क्षमिये सर दृषण। दास जानि निज दय दिखावहु, सुत अनुषाळित सहित अपनावहु। जननी तुम सेवक प्रति पाली, करहु कृपा सब विधि माँ काली। पाठ करे चालीसा जोई, तापर कृपा तुमहारी होई।

॥ दोहा ॥

जय तारा, जय देशिणा, कलावती सुखमूल।
शरणागत ‘भक्त’ है, रहहु सदा अनुकूल॥
आरती श्री काली जी की
अम्बे तू है जगदम्बे काली जय दुःख खण्डर बाली, तेरे ही गुन गायें भारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
माता तेरे भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ी माँ करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से बलशाली अष्ट भूजाओं बाली।
दुःखियों के दुःख को निवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
मां बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता।
पूजा कपूर सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।
सब पर करणा दरसाने बाली अमृत बरसाने बाली।
दुःखियों के दुःख को निवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
नहीं मांगते धन और दीलंत ना चाही ना चोना।
हम तो मांगते तेरे मन का एक छोटा सा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने बाली लाज बचाने बाली,
सतियों के भत्त को संवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

श्री महाकाली चालीसा

॥ दोहा ॥
जय जय सीताराम के मध्यवासिनी अम्ब।
देहु दर्श जगदम्ब अब, करो न मातु विलम्ब॥
जय तारा जय कालिका जय दश विद्या वृद्ध।
काली चालीसा रचत एक सिद्धि कवि हिंद॥
प्रातः काल उठ जो पड़े, दुपहरिया या शाम।
दु:ख दारिद्रता दूर ही सिद्धि होय सब काम॥

॥ चौथा ॥
जय काली कंकाल मालिनी, जय मंगला महा कपालिनी।
रक्तबीज बधकारिणि माता, सदा भक्त जननकी सुखदाता।
शिरो मालिका भूषित अंगे, जय काली जय मद्य पतंगे।
हर हृदयारविन्द सुविलासिनि, जय जगद्म्भा सकल दुःख नाशिनि।
हृि कालि श्री महाकालि, क्रीं कल्याणि दक्षिणाकालि।
जय कलावती जय विद्यावती, जय तारा सुनद्री भक्ति।
देहु सुबुझ्द हर्दू सब संकट, होि भक्त के आगे परगत।
जय ॐ कारे जय हुंकारे, महा शक्ति जय अपरापरे।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनि, सदा भक्त जन के भयनाशिनि।
अब जगद्म्भ न देस लगावह, दुःख दरिद्रता मोर हटावह।
जयति कराल कालिका माता, कालानल समान दातिगाता।
जयशंकरी सुंदेि सनाति, कोिि सिंद्रि कवि मातु पुराति।
कपर्दिनी कलि कल्य विभोसिि, जय विकसित नव नलिनबिलोचिि।
आन्द कारणि आन्द निधानि, देहुमातु मोिि निर्मल ज्ञानि।
करुणामृत सागर कृपायिि, होि दुःि जनपर अब निर्देशिि।

सकल जीव तोहि परम पियारार, सकल विश्व तोरे आधारार।
प्रलय काल में नरतन कारणि, जय जननी सब जगकी पालनि।
महोदरी महेश्वरी माया, हिमांगिरि सुता विश्व की छाया।
स्वछन्द रद मारद धुनि माहि, गजत तुमहि और कोउ नाहि।
स्फूरति मणिगणकार प्रति, तारागण तू व्यूँ विताने।
श्री धारे सन्तन हितकारिणी, अरि पाणि अति दुष्ट विद्वारिणी।
धूप विलोचिि प्राण विमोचिि, शुभ निशुभ मथिि वरसोचिि।
सहस भुजि सरोह मालिनी, चामुण्डे मरगठ की वासिनी।
खण्डर मथि सुशोिि साजी, मारेहु माँ महिषासुर पाजी।
अभि अम्बिका चण्ड चण्डका, सब एके तुम आदि कालिक।
अजा एकरुपा बहुरुपा, अकथ चरित्र तव शक्ति अनुपा।
कलक्ति के दक्षिण द्वारे, मूर्ति तोर महेशि आपरे।
कादम्बरी पानत्र श्यामा, जय मातंगी काम के धामा।
कमलासन वासिनी कमलायनि, जय श्यामा जय जय श्यामायनि।
मातंगी जय जयति प्रकृति हे, जयति भक्ति उर कुमृति सुमृति हे।
कोटिभ्रष्ट शिव विष्णु कामदा, जयति अहिःसा धर्म जन्मदा।
जल थल नरभमंडल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य आलापिनी।
झलन सत्कु रपिन नादिनि, जय सतस्वती वीणा वादिनी।
अं हृं हृं करिं चामुण्डाये विच्चे, कलित कण्ठ शोभित नर्मुण्डा।
जय ब्रह्माण्ड सिध्दि कवि माता, कामाख्या और काली माता।
हिंगलाज विन्याचल वासिनी, अदुहासिनी अरु अघन नाशिनी।
कितनी स्तुति करिं अक्षण्डे, तू ब्रह्माण्डे शक्तितजितचंडे।
करहु कुपा सबपे जगदंबा, रहहि निशंक तोर अवलम्बा।
चतुर्धजै काली तुम श्यामा, रूप तुम्हार महा अभिरामा।

खँग और खण्डर कर सोहत, सुर नर मुनि सबको मन मोहत।
तुम्हरी कुपा पावे जो कोई, रोग शोक नहि ताकहँ होई।
जो यह पाठ करे चालीसा, तापर कुपा करहि गौरीशा।

|| तोहा ||

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगद्म्ब।
सदा भक्तजन केरि दुःख हर्ष मातू अवलम्ब।

आरती श्री महाकाली जी की

‘मंगल’ की सेवा, सुन मेरी देवा, हाथ जोड़, तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारि, ध्वजा, नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट ढंगे।
सुन जगद्म्बे, कर न विलास, संतन के भण्डार ढंगे।
संतन-प्रतिपालि, सदा खुशहाली, मैया जै काली कल्याण करे।
बुद्धि विधाता, तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परै।
जब-जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करौ॥
बार-बार तै सब जग मोहयो, तत्त्वणि रूप अनूप धेरै।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करौ।
सत्तन सुखदाई सदा सहाई, सत्त खड़े जयकार करौ॥
ब्रह्माविष्णु महेश सहस्रफळ लिए, भेंट देन तेरे द्वार खड़े।
अतल सिंहसन बैठी मेरी माता, सिर सोने का छत्र फिरौ।
बार शानिन्चर कुंकुम बरणो, जब लूंकड़ पर हुकुम करौ॥
खड़े खण्डन त्रिशूल हाथ लिए, रक्त बीज को भस्म करौ।
श्रुंध निशुंभ को क्षण में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।
‘आदित’ वारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे॥
कुपित होय के दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करौ।
जब तुम देखी दण्ड रूप हो, पल में संकट दूर करौ।

सौम्य रवभाव धरयो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करौ॥
सात बार बीती महिमा बरनी, सब गुण कौन बख़ान करौ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करौ।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धेरौ॥
ब्रह्मा वेद थड़े तेरे द्वारे, शिव शंकर ध्यान धेरौ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चंवर कुंबे दुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करौ॥
संतन प्रतिपालि सदा खुशहाली, मैया जय काली कल्याण करौ॥
श्री शीतला चालीसा

॥ दोहा ॥
जय-जय माता शीतला, तुमहिं धैर जो ध्यान।
होय सितल हस्य, विकसै बुद्धि बलज्ञान।
घट-घट वासी शीतला, शीतल प्रभा तुम्हारा।
शीतल छड़ियां में छूलई, मद्य पलना डार।

॥ चोपाई ॥
जय-जय-जय शीतला भवानी, जय जग जननि सकल गुणखानी।
गृह-गृह शक्ति तुम्हारी राजित, पूर्ण शरदचंद्र समसाजित।
विस्फोटक से जलत शरीरा, शीतल करत हरत सब पीरा।
मातु शीतला तब शुभनामा, सबके गाढ़े आवही कामा।

श्री शीतला चालीसा

॥ शोकहरी शंकरी भवानी, बाल-प्राणरक्षी सुख दानी।
शुचि मार्जनी कलश कराराजेः, मस्तक तेज सूर्य समराजेः।
चौसठ योगिन संग में गावें, वीणा ताल मृदुंग बजावें।
नृत्य नाथ भेदे दिखावें, सहज शेष शिव पार न पावें।
धन्य-धन्य धात्री महारानी, सुरनर मुनि तब सुयश बखानी।
ज्वाला रूप महा बलकरी, दैत्य एक विस्फोटक भारी।
घर-घर प्रविष्ट कोई न रक्षत, रोग रूप धारी बालक भक्षत।
हाहाकार मच्छो जगभारी, सक्यो न जब संकट टारी।
तब मैथ धारि अद्भुत रूप, करमें लिये मार्जनी सूपा।
विस्फोटकहि पकड़ि कर लिन्दौ, मुसल प्रहार बहुविधि कीन्हो।
बहुत प्रकार वह विनती कीन्हा, मैथ नहीं भल में कछु चीन्हा।
अवनि अ मातु, काहुगृह जड़हैं, जहाँ अपवित्र सकल दुःख हरिएँ।
भभकत तन, शीतल है जहैं, विस्फोटक भयपर नसिहैं।
श्री शीतलहि भजे कल्याना, वचन सत्य भाषे भगवाना।
विस्फोटक भय जिहि गुह भई, भजे देवि कहि यही उपाई।
कलश शीतला का सजवावै, द्विज से विधिवत पाठ करावै।
तुम्हीं शीतला, जग की माता, तुम्हीं पिता जग की सुखदाता।
तुम्हीं जगद्वारी सुखसेवी, नमो नमामि शीतले देवी।
नमो सुक्खकरणी दुःखहरणी, नमो-नमो जगतारणी तरणी।
नमो नमो त्रलोक्य विद्विनी, दुःखदारिष्ठादिक निकृष्टनी।
श्री शीतला, श्रेष्ठा, महाला, रूपाद्द्वृत्ती मातु मंदला।
हो तुम दिगम्बर तनुधारी, शोभित पंचनाम असवारी।
रासभ, खर बेशाख सुनदन, गर्दभ दुर्वाकंद निकृष्टन।
सुमिरत संग शीतला माई, जाहि सकल दुख दूर परिअर।

गलका, गलगन्दादि जुहोई, ताकर मंत्र न औषधि कोई।
एक मातु जी का आराधन, और नहिं कोई है साधन।
निश्चय मातु शरण जो आवै, निर्भय मन इच्छित फल पावै।
कोरी, निर्मल काया धारै, अन्धा, दूर-निज दृष्टि निहारै।
विष्ठ नारि पुत्र को पावै, जन्म दरिद्र धनी होई आवै।
मातु शीतला के गुण गावत, लखा मूक को छन्द बनावत।
यामें कोई करे जनि शक्ता, जग में मैया का ही डंका।
भनत ‘रामसुन्दर’ प्रभुदासा, तत्र प्रयाग से पूरव पासा।
पूरी तिकवी मोर मोर निवासा, ककरा गंगा तत दुर्वासा।
अथ विलम्ब में तोहि पुकारत, मातु कृपा को बाट निहारत।
पड़ा क्षर तव आस लगाई, रक्षा करहु शीतला माई।
आरती श्री शीतला माता जी की

जय शीतला माता, मैया जय शीतला माता,
आदि ज्योति महारानी सब फल की दाता।। जय""
रत्न सिंहसन शोभित, श्वेत छत्र भाता,
श्रीदिवश्री दिवालियों से चंद्र डोलायें, जगमग छवि छाता।। जय""
विष्णु सेवत ठाड़े, सेवें शिव धाता,
वेद पुराण वरणत, पार नहीं पाता।। जय"
इन्द्र मूर्ति बजावत, चन्द्र रीढ़ा हाथा,
सूरज ताल बजावै नारद मुनि गाता।। जय"
घंटा शंख शहनाई बाजे मन भाता,
कै भक्त जन आरती लिख लिख हर्षता।। जय"
ब्रह्म रूप वरदानी तुही तीन काल ज्ञाता,
भक्तन को सुख देती मातृ पिता भाता।। जय"

आरती श्री शीतला माता जी की

जो जन ध्यान लगावे प्रेम शक्ति पाता,
सकल मनोरथ पावे भवनिधि तर जाता।। जय"
रोगों से जो पीड़ित कोई शरण तेरी आता,
कोड़े पावे निर्मल काया अवघ नेत्र पाता।। जय"
बांझ पुरो को पावे दारिद्र कट जाता,
ताको भजै जो नाहीं सिर धुनि पछताता।। जय"
शीतल करती जन की तू ही है जग त्याता,
उत्पत्ति बाला बिनान तू सब की माता।। जय"
दास नारायण कर जोरी माता,
भक्ति आपनी दीवाने और न कुछ माता।। जय""
श्री राधा चालीसा

॥ दोहा ॥
श्री राधे वृषभानुजा, भक्तिन प्राणाधार।
वृन्दावनविनियोग विहारिणि, प्रणवों बारंबार॥
जैसी तैसी रावरी, कृष्ण प्रिया सुखधाम।
चरण शरण निज दीजिये, सुन्दर सुखद ललाम॥
॥ चौपाई ॥
जय वृषभानु कुंवरी श्री श्रावणा, कीर्ति नंदिनि शोभा धामा।
नित्य विहारिणि श्रावण अधारा, अभित मोद मंगल दातारा।
रास विलासिनि रस विस्तारिनि, सहचरि सुभग युथ मन भावनि।
नित्य किशोरी राधा गोरी, श्रावण प्राणधन अति जिज्ञ भोरी।
करुणा सागर हिय उमगिनि, ललितादिक संख्यन की संगिनि।

दिन कर कन्या कूल विहारिणि, कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनि।
नित्य श्रावण तुमरी गुण गावें, राधा राधा कहि हर्षावें।
मुरली में नित नाम उचारे, तुव कारण प्रिया वृषभानु दुलारी।
नवल किशोरी अति छवि धामा, द्रुति लघु लगै कोटि रति कामा।
गौरांगी शशिनिंदक बड़ना, सुभग चपल अनियरे नयना।
जावक युग युग पंकज चरना, नूपर धुनि प्रीतम मन हर्ना।
संतत सहचरि सेवा करहें, महा मोद मंगल मन भरहें।
रसिकन जीवन प्राण अधारा, राधा नाम सकल सुख सारा।
अगम अगोचर नित्य स्वरूपा, ध्यान धरत निघादिन ब्रज भूपा।
उपजेत जासु अंश गुण खानि, कोटिन उमा रमा ब्रह्मानी।
नित्यधाम गोलक विहारिणि, जन रक्षक दुख दोष नसावनि।
शिव अज मुनि सनकादिक नारद, पार न पायें शोष अरु शारद।
राधा शुभ गुण रूप उजारी, निरख्त प्रसन होत बनवारी।
ब्रज जीवन धन राधा रानी, महिमा अमितन जाय बरखानी।
प्रीतम संग देई गलबाहरी, बिहरत नित्य वृद्धावन माँही।
राधा कृष्ण कृष्ण कहें राधा, एक रूप दोह प्रीति अगाधा।
श्री राधा मोहन मन हरसी, जन सुख दायक प्रफुलित बदनी।
कोटिक रुप धरे नंद नंदा, दर्शं करन हित गोकुल चन्दा।
रास के लिए करि तुमें रिखावें, मान करी जब अति दुख पावें।
प्रफुलित होत दर्शं जब पावें, विविध भाँति नित बिनय सुनावें।
वृद्धारण्य बिहारिनि श्रीमाणा, नाम लेत पूरण सब कामा।
कोटिद यज़ तपस्या करहूँ, विविध नेम ब्रह्म हिन्म में धरहू।
तऊ न श्रीमान भक्ततहि अपनावें, जब लगि राधा नाम न गावें।
वृद्धाविनि स्वामिनी राधा, लीला बपु तब अमित अगाधा।
स्वयं कृष्ण पावें नहीं पारा, और तुमें को जानन हारा।

श्री राधा रस प्रीति अभेदा, सारद गान करत नित वेदा।
राधा त्यागि कृष्ण को भेजिहैं, ते सपनेहूँ जग जलधि न तसिहैं।
कीरति कूँवरि लाड़िली राधा, सुमिरत सकल मिटभहि भव बाधा।
नाम अमलगल मूल नसवाव, त्रिविध ताप हर हरि मन भावन।
राधा नाम लेइ जो कोई, सहजहि दामोदर बस होई।
राधा नाम परम सुखदाई, भजतहि कुपा करहि यदुराई।
यशुपति नदन पीछे फिरिहैं, जो कोउ राधा नाम सुमिरिहैं।
रास बिहारिनि श्रीमाणा प्यारी, करहु कुपा बरसाने बारी।
वृद्धावन है शारण तिहारी, जय जय जय वृषभानु दुलारी।

॥ दोहा ॥
श्रीराधास्वेत्वरी, रसिकेश्वर घनस्याम।
करहुँ निरंतर बास में, श्रीवृद्धावन धाम॥
आरती श्री राधा जी की

आरती श्री वृषभानुसुता की, मंजुल मूर्ति मोहन ममता की।
त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनिः, विमल विवेकविराग विकासिनि।
पावन प्रभु पद प्रीति प्रकाशिनि, सुन्दरतम छबि सुन्दरता की।
मुनि मन मोहन मोहन मोहिनि, मधुर मनोहर मूर्ति सोहिनि।
अविरलप्रेम अमिय रस दोहिनि, प्रिय अति सदा सखी ललिता की।
संतत सेव्य सत मुनि जनकी, आकर अमित दिव्यगुन गनकी।
आकर्षणी कृष्ण तन मन की, अति अमूल्य सम्पति समता की।
कृष्णात्मिका कृष्ण सहचारिणि, चिन्मयवृक्ष विपन विहारिणि।
जगज्जननं जग दुःखिनवारिणि, आदि अनादि शक्ति विभुता की।

श्री तुलसी चालीसा

II दोहा II

श्री तुलसी महारानी०, कर्षा विनय सिरनय०।
जो मम हो संकट विकट, दीजै मात नशय।

II चोपाई II

नमो नमो तुलसी महारानी, महिमा अमित न जाय बखानी।
दियो विष्णु तुमको सनमाना, जग में छायो सुयश महाना।
विष्णुप्रिया जय जयतिभवानि, तिहू लोक की हो सुखानी।
भगवत पूजा कर जो कोई, बिना तुम्हारे सफल न होई।
जिन घर तव नहीं होय निवासा, उस पर कराहि विष्णु नहीं बासा।
करे सदा जो तब नित सुमिरन, तेहिके काज होय सब पूरन।
कातिक मास महात्म तुझ्हार, ताको जानत सब संसार।
तव पूजन जो करैं कुंवारी, पावे सुन्दर वर सुकृमारी।
कर जो पूजा नित्यप्रति नारी, सुख सम्पति से होय सुखारी।
वृद्धा नारी करैं जो पूजन, मिलें भक्ति होवें पुलकित मन।
श्रद्धा से पूजैं जो कोई, भवनिधि से तर जावैं सोई।
कथा भागवत यज्ञ करावैं, तुम बिन नहीं सफलता पावैं।
छायो तब प्रताप जगभारी, ध्यावत तुमही सकल चित्तधारी।
तुम्ही मात यंत्र तंत्र में, सकल काज सिधि होवें क्षण में।
आयधि रूप आप हो माता, सब जग में तव यश विख्याता।
देव रिश्व मुनि ओ तपधारी, करत सदां तवे जय जयकारी।
वेद पुराण तव यश गाया, महिमा अगम पार नहीं पाया।

नमो नमो जे जे सुखकारनि, नमो नमो जे दुःखनिवारनि।
नमो नमो सुखसम्पति देनी, नमो नमो अघ काटन छेनी।
नमो नमो भक्तन दुःख हरनी, नमो नमो दुष्टन मद छेनी।
नमो नमो भव पार उतारनि, नमो नमो परलोक सुधारनि।
नमो नमो निज भक्त उचारनि, नमो नमो जनकाज संवारनि।
नमो-नमो जय कुमति नशावनि, नमो नमो सब सुख उपजावनि।
जयति जयति जय तुलसीमाई, ध्याई तुमधे श्रीश जवाई।
जिजजन जानो मोहि अपनाओ, विगड़े कारज आप बनाओ।
करह विनत में मात तुझारी, पूरण आशा करहु हमारी।
शरण चरण कर जोरि मनाँ, निशादिन तेरे ही गुण गाँव।
करह मात यह अब मोपर दाया, निर्मल होय सकल प्रमकाया।
मांगू मात यह बर दीजैँ, सकल मनोरथ पूर्ण कोजैँ।
श्री तुलसी चालीसा

जानूं नहीं कुछ नेम अचारा, छमहू नात अपराध हमारा।
बारह मास करै जो पूजा, ता सम जग में और न दूजा।
प्रथमहि गंगा जल मंगवावे, फिर सुन्दर स्नान करावे।
चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ावे, धूप दीप नैवेद्य लगावे।
करे आचमन गंगा जल से, ध्यान करे हृदय निर्मल से।
पाठ करे फिर चालीसा की, अस्तुति करे तार तुलसा की।
यह विधि पूजा करे हमेशा, ताके तन नहीं रहे कलेशा।
करे मास कार्तिक का साधन, सोवे नित पवित्र सिध हुईं जाह्न।
है यह कथा महा सुखदाईं, पढ़ै मुनि सो भव तर जाई।

।। दोहा ।।

यह श्री तुलसी चालीसा पाठ करे जो कोय।
गोविन्द सो फल पावही जो मन इच्छा होय।

आरती श्री तुलसी जी की

जय जय तुलसी माता, सब जग की सुख दाता। जय।
सब योगों के ऊपर, सब लोगों के ऊपर।
रुज से रक्षा करके भव त्राता। जय।
बटु पुत्री है श्यामा सुर बल्ली है ग्राम्य।
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो नर तर जाता। जय।
हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित।
पतित जनों की तारिणी तुम हो विख्यात। जय।
लेकर जनम विजन में आई दिय भवन में।
मानवलोक तुहीं से सुख संपत्ति पाता। जय।
हरि को तुम अति प्यारी श्याम वरुण कुमारी।
प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता। जय।
श्री वैष्णो देवी चालीसा

|| दोहा ||
गरुड़ बाहिनी वैष्णोवी त्रिकुटा पर्वत धाम।
काली, लक्ष्मी, सरस्वती शक्ति तुम्हें प्रणाम॥

|| चोंधाई ||
नमो: नमो: वैष्णो वरदानी, कलि काल में शुभ कल्याणी।
मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारी, पिंडी रूप में हो अवतारी।
देवी देवता अंश दियो है, रत्नकर घर जन्म लियो हैं।
करी तपस्या राम को पाँच, त्रेता की शक्ति कहलावँ।
कहा राम मणि पर्वत जाओ, कलियुग की देवी कहलाओ।
विष्णु रूप से कल्की बनकर, लूंगा शक्ति रूप बदलकर।
तब तक त्रिकुटा धाती जाओ, गुफा अंधेरी जाकर पाओ।
काली-लक्ष्मी-सरस्वती माँ, करेंगी शोषण-पार्वती माँ॥

श्री वैष्णो देवी चालीसा

|| चोंधाई ||
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारे, हनुमत, भैरों प्रहरी प्यारे।
रिद्धि, सिद्धि चंद्र दुलावें, कलियुग-वासी पूजन आवें।
पा सुपारी ध्वज नारियल, चरणामृत चरणों का निर्माण।
दिया फलित वर माँ मुस्काई, करन तपस्या पर्वत आई।
कलि कालकी भड़की ज्वाला, इंक दिन अपना रूप निकाला।
कन्या बन नगरोटा आई, योगी भैरों दिया दिखाई।
रूप देख सुन्दर ललचाया, पीछे-पीछे भागा आया।
कन्याओं के साथ मिली माँ, कौल-कंदीली तभी चली माँ।
देवा माई दर्शन दीना, पवन रूप हो गई प्रवीणा।
नवरात्रों में लीला रचाई, भक्त श्रीधर के घर आई।
योगिन को भण्डारा दीना, सवने रुचिकर भोजन कीना।
मांस, मदिरा भैरों मांगी, रूप पवन कर इच्छा त्यागी।
बाण मारकर गंगा निकाली, पर्वत भागी हो मतवाली।
चरण रखें आ एक शिला जब, चरण-पादुका नाम पड़ा तब।
पीछे भैरों था बलकारी, छोटी गुफा में जाय पदार्थी।
नौ माह तक किया निवासा, चली फोड़कर किया प्रकाशा।
आद्या शक्ति-ब्रह्म कुमारी, कहन्त था आद कुंवारी।
गुफा द्वार पहुंची मुखकाई, लांगुर वीर ने आज्ञा पाई।
भागा-भागा भैरों आया, रक्षा हित निज शास्त्र चलाया।
पड़ा शीश जा पर्वत ऊपर, किया श्रम जा दिया उसे वर।
अपने संग में पुजवांगी, भैरों घाटी बनवांगी।
पहले भेस दर्शन होगा, पीछे तेरा सुमन होगा।
बैठ गई माँ पिंडी होकर, चरणों में बहता जल झर-झर।
चौंसठ योगिनी-भैरों बरवन, सप्तद्वारिष आ करते सुमन।
घंटा ध्वनि पर्वत पर बाजे, गुफा निराली सुनर लागे।
भक्त श्रीधर पूजन कीना, भक्ति सेवा का वर लीना।

सेवक ध्यानूँ तुमको ध्याया, ध्वजा व चोला आन चढ़ाया।
सिंह सदा दर पहरा देता, पंजा शेर का दुःख हर लेता।
जंबू द्वीप महाराज मनाया, सर सोने का छत्र चढ़ाया।
हीरे की मूरत संग ध्यारी, जगे अकंड इक जोत तुम्हारी।
आशिवन चेत्र नवराते आऊँ, पिंडी रानी दर्शन पाऊँ।
सेवक ‘शर्मा’ शरण तिहारी, हरे वैष्णो विपत हमारी।
|| तोड़ा ||

कलियुग में महिमा तेरी, है माँ अप्रमार।
धर्म की हानि हो रही, प्रगट हो अवतार।

आरती वैष्णो देवी जी की
हे मात मेरी, हे मात मेरी, कैसी यह देर लगई है दुर्गे। हैं। भक्षासागर में गिरा पड़ा हूँ, काम आदि ग्रह में घिरा पड़ा हूँ।
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूँ। हैं।
न मुझमें बल है न मुझमें विद्या, न मुझमें भक्ति न मुझमें शक्ति।
शरण तुम्हारी मिरा पड़ा हूँ। हे... न कोई मेरा कुटुम्ब साधी, न दी मेरा साधी शरीर साधी।
आप ही उबारे पकड़ के बाँही। हे... चरण कमल को नौका बनकर, मैं पार हूँ खुशी मनकर।
यमदूतों को मारे भरकार। हे... सदा ही तेरे गुणों को गाऊँ, सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊँ।
नित प्रति तेरे गुणों को गाऊँ। हे... न मैं किसी को न कोई मेरा, छाया है चारों तरफ अंधेरा।
पकड़ के ज्योति दिखा दो रास्ता। हे... शरण पड़े हैं हम तुम्हारी, करो यह नैया पार हमारी।
कैसी यह देर लगाई है दुर्ग। हे...

श्री संतोषी माँ चालीसा

॥ तौहा ॥
श्री गणपति पद नाय सिर, धरि हिय शारदा ध्यान।
संतोषी माँ की करूँ, कीर्ति सकल बखान।

॥ चौपाई ॥
जय संतोषी माँ जग जननी, खल मति दुष्ट दैत्य दल हननी।
गणपति देव तुम्हारे ताता, रिद्वि सिद्धि कहलावहं माता।
माता-पिता की रहो दुलारी, कीर्ति केहि विधि कहूँ तुम्हारी।
क्रीट मुकुट सिर अनुपम भारी, कानन कुण्डल को छवि नयारी।
सोहल अंग छटा छवि प्यारी, सुन्दर चीर सुनहरी धारी।
आप चतुर्भुज सुप्रस विशाला, धारण करहु गले वन माला।
निकट है गौ अभित दुलारी, करहु मयूर आप असवारी।
पालन पॉशण तुम्हीं करत, क्षण भंगुर में प्राण हरता।
ब्रह्मा विष्णु तुमें नित ध्यावें, शेष महेश सदा मन लावें।
मनोकामना पूरण करनी, पाप काटनी भव भय तरनी।
चित लगाय तुम्हें जो ध्याता, सो नर सुख सम्पत्ति है पाता।
बन्धु नारी तुमहीं जो ध्यावें, पुत्र पुष्प लता सम वह पावें।
पति वियोगी अति व्याकुलनारी, तुम वियोग अति व्याकुलवारी।
कन्या जो कोई तुमको ध्यावे, अपना मन वांछित वर पावें।
श्रीलाल गुणवान हो मैया, अपने जन की नाव खिवेया।
विद्वेश पूरक व्रत जो कोई करहीं, ताहि अमित सुख सम्पति भरहीं।
गुड़ और चना भोग तोहि भावे, सेवा करे सो आनन्द पावें।
श्रद्धा युक्त ध्यान जो धरहीं, सो नर निशचय भव सों तहहीं।
उदापन जो करहि तुम्हारा, ताको सहज करहु निस्तारा।
श्री संतोषी माँ चालीसा

नारी सुहागिन व्रत जो करती, सुख सम्पत्ति सांगों गोदी भरती।
जो सुमित जैसी मन भावा, सो नर वैसो ही फल पावा।
सात शुक जो व्रत मन धारे, उके पूर्ण मनोरथ सारे।
सेवा करहि भक्ति चुद जोई, उके दूर दरिन्द्र दुख होई।
जो जन शरण माता तेरी आवें, तुके क्षण में काज बनावें।
जय जय जय अम्बे कल्याणी, कृपा करौ मोरी महारानी।
जो कोई पढ़े माता चालीसा, तापे करहि कृपा जगदीशा।
निन प्रति पाठ करै इक बारा, सो नर रहै तुम्हारा प्यारा।
नाम लेत ब्याधा सब भागे, रोग दोष कबूँ नहीं लागे।
॥ दोहा ॥
संतोषी माँ के सदा बनदूँ पण निश्चित वास।
पूर्ण मनोरथ हों सकल मात विरो मात्रास॥

आरती श्री संतोषी माँ जी की

जय संतोषी माता मेवा जय संतोषी माता। अपने जन को सुख सम्पत्ति दाता। जय.
सुन्दर बीर सुनहरी माँ धारण कीहो। दीरा पन्ना दमके तन शृंगार लीहौ। जय.
गैरु लाल छटा छवि बदन कमल सोह। मन ईंतत करणामयी त्रिभुवन मन मोहे। जय.
स्वर्ण सिंहासन बैठी चौंच हुरे प्यारे। धूप, दीप, नैवेद्य, मधुमेया भोग धरे न्यारे। जय.
गुड अफ चना धरम प्रय तामें संतोष कियो। संतोषी कहलाईं भक्ति तैभव दियो। जय.
शुक्रवार प्रया मानत आज दिवस सोह।। भक्ति मंडलीं छाईं काठा सुनह मोही। जय.
मंदिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई।। विनय करे हम बालक चरान सिर नाइ।। जय.
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीज।। जो मन बसै हमारे इच्छा फल दीज।। जय.
श्री अन्नपूर्णा चालीसा

|| दोहा ||
विष्वेष्वर-पदपदम की रज-निज शीश-लगाय।
अन्नपूर्णा! तव सुयश बरनाइं कवि-मंतिलाई।

|| चौपाई ||
नित्य अन्नद करिणि माता, वर-अरु अभय भाव प्रख्याता।
जय! संदर्भ सिंधु जग-जननी, अखिल पाप हर भव-भय हरनी।
श्रेष्ठ बदन पर श्रेष्ठ बसन पुनि, संतन तुव पद सेवत ऋषिपुनि।
काशी पुरंधीवरी माता, माहेश्वरी सकल जग-त्राता।
बृहभारुठ नाम रुद्राणी, विश्व विहारिण जय! कल्याणी।
पदितेवता सुतीत शिरोमनि, पदवी प्राप्त कीह गिरि-नंदिनी।
पति-विछोह दुःख सहि नहि पावा, योग अधिन तब बदन जरावा।

देह तजत शिव-चरण सनेह, राखेहु जाते हिमरंगिरी-गोहू।
प्रकटी गिरिजा नाम धरायो, आति आनंद भवन मँह छायो।
नारद ने तव तोहि भरसाय्यो, ब्याह करान हित पाठ पढ़याय्यो।
ब्रह्मा-वरुण-कुबेर-गनाये, देवराज आदिक कहि गाय।
सब देवण को सुजस बखानी, मतिपलटन की मन मँह ठानी।
अचल रहिं तुम प्रण पर धन्या, कीहि सिंह मिमाचल कन्या।
निज की तव नारद घबराये, तब प्रण-पूरण मंत्र पढ़ाये।
करन हेतु तप तोहि उपदेशेँ, संत-बचन तुम सत्य परेखेहु।
गगनगिरा सुनि टरी न टरे, ब्रह्मा, तब तुव पाः पढ़ारे।
कहें पुत्रि वर माँगु अनुपा, देहु आज तुव मति अनुरुपा।
तुम तप कीह अलोकिक भारी, कछू उठायेहु अति सुकुमारी।
अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों, है सौगंध नहिं छल तोसों।
करत वेद विद ब्रह्मा जानहु, वचन मोर यह सांचो मानहु।
तज संकोच कहहु निज इच्छा, देहें में मन मानी भिक्षा।
सुनि ब्रह्मा को मधुरी बानी, मुखसों कछु मुसुकायि भवानी।
बोली तुम का कहहु विधाता, तुम तो जगकें स्वर्गाधाता।
मम कामना गुप्त नहीं तोसों, कहवावा चाहहु का मोसों।
इज्ज यज्ञ मह भरती बारा, श्रंभुनाथ पुनि होहि हमारा।
सो अब मिलहि मोहि मनभाय, कहि तथास्तु विधि धाम सिधायि।
तब गिरिजा शंकर तब भयो, फल कामना संश्य गयो।
चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाश, तब आनन मह तरं निवासा।
माला पुत्रक अंकुश सोहि, करमह अपर पाश मन मोहे।
अनपूर्ण! सदपूर्ण, अज-अनवद्य अनन्त अपूर्ण।
कृपा सगरी क्षयमंकरी माँ, भव-विभूति आनंद भरी माँ।

कमल बिलोचन विलसित बाले, देवि कालिके! चण्ड कराले।
तुम केलास माहि है गिरिजा, विलसी आनंदसाध सिंधुजा।
स्वर्ग-महालक्ष्मी कहलायि, मत्य-लोक लक्ष्मी पदपायि।
विलसी सब माँ सर्व सर्पा, सेवत तोहि अमर पुर-भूपा।
जो पढ़िहि यह तुव चालीसा, फल पढ़िहि शुभ साहि ईसा।
प्रात समय जो जन मन लायो, पढ़िहि भक्ति सुरूचि अधिकायो।
स्त्री-कलच रसि भ्रुट्र-पुट्र युत, अरमेश्य लाभ लहि अदभुत।
राज विमुखको राज दिवावें, जस तेरो जन-सुजस बढ़वें।
पाठ महा मुद मंगल दाता, भक्त मनो वांछित निधिपाता।
॥ दोहा ॥

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावहिंगे माठ।
तिनके कारज सिद्ध सब साहि काशी नाथ॥
आरती श्री अनन्तपूर्णा देवी जी की
बारम्बार प्रणाम मैया बारम्बार प्रणाम।
जो नहीं ध्यावे तुमें अभिके कहाँ उसे विश्राम।
अनन्तपूर्णा देवी नाम तिहारे लेते होत सब काम॥
प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर, कालान्तर तक नाम।
सुर सुरों की रचना करती, कहाँ कृप्ण कहाँ राम॥
चूम्हि चरण चतुर चतुरानन चारु चक्रधारणां॥
चाँद चूड़ि चतुरानन चाकर शोभा लखिहि ललाम॥
देवी देव दयनीय दशा में दया दया तव नाम॥
श्रीं हैं, श्रीं श्रीं श्रीं ऐं विद्या श्रीं करीं कमल काम॥
कान्तिभाषार्थियी कांति शांतिमयी वर देतु निष्काम॥

श्री पार्वती चालीसा

॥ दोहा ॥
जय गंगी तनवे दक्षजे शंभु प्रिये गुणावनि।
गणपतिज जननी पारवती अवे! शक्ति! भवानि॥

॥ चोपाई ॥
ब्रह्मा भेद न तुमहरो पावे, पंच बदन नित तुमको ध्यावे।
छंदमुख कहीं न सकत यश तेरो, सहस्रबद्र श्रम करत घनेरो।
तेएँ पार न पावत माता, स्थित रक्षा लय हित सजाता।
अधर प्रवाल सदृश अरुणारे, अति कमनीय नयन कज़रो।
ललित ललाट विलेपित केशर, कुंकुम अक्षत शोभा मनहर।
कनक बसन कंचुकी सजाएँ, कठि मेखला दिव्य लहराए।
कंठ मदार हार की शोभा, जाहि देखि सहजहि मन लोभा।
श्री पार्वती चालीसा

२४७

बालारूण अनन्त छबि धारी, आभूषण की शोभा प्यारी।
नाना रन जटित सिंहासन, तापर राजति हरि चतुराणन।
इन्द्रादिक परिवार पूजित, जग मृग नाग चक्र रव कृजित।
गिर कैलास निवासिनी जय जय, कोटिक प्रभा विकासिन जय जय।
त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तिहारी, अणु अणु महे तुम्हारी उजियारी।
हैं महेश प्राणेश! तुम्हारे, त्रिभुवन के जो नित रखवारे।
उनसे पति तुम प्रात ज़िक्र जब, सुकृत पुरातन उदित भए तब।
बूढ़ा बेल सवारी जिनकी, महिमा का गायब कोउ तिनकी।
सदा प्रभुशान बिहारी शंकर, आभूषण है भुजंग भवंकर।
कण्ठ हलाहल को छबि छायी, नीलकण्ठ की पदबी पायी।
देव मन के हित अस कीनों, विष ले आपु तिनहि अमि दीनों।
ताकी तुम पली छवि धारिण, दूरित विदारिण मंगल कारिण।

२४८

देखि परम सौन्दर्य सिरहारी, त्रिभुवन चिकित बनावन हरी।
भय भीता सो माता गंगा, लक्ष्मण भय हैं सलिल तरंग।
सौंत समान शांभु वहआयी, विषु पदार्ज्ञ छोड़ि सो धारी।
तेजिखों कमल बदन मुर्जायो, लखित सवर शिव श्रीरं चढ़यो।
नितिमानं करी बरदायिणी, अभय भक्त कर नित अनपायिन।
अविकल पाप त्रयताप निकहिति, महेश्वरी हिमालय निदिन।
काशी पूरी सदा मन भायी, सिद्ध पीठ तेहि आपु बनायी।
भगवती प्रतितिधि भिक्षा दात्री, कृपा प्रमोद सनेह विधात्री।
रियुशय कारिण जय जय आवे, वाचा सिद्ध करि अवलबे।
गौरी उमा शंकरी काली, अनयूत जग प्रतिपाली।
सब जन की ईश्वरी भगवती, पतिप्राणा परमेश्वरी सती।
तुमने कठिन तपस्या कीनी, नारद सों जब शिखा लीनी।
अनन्ती न नीर न वायु अहारा, अस्थि मात्रतत्त्व भयायु तुम्हारा।
पत्र घास को खाये न भायु, उमा नाम तब तुम्ने पायु।
तत्त्व बिलोकक रिष्व सात पथारे, लगे जिगावन डिगी न हारे।
तब तव जय जय जय उच्चारेत, सप्तरीश निज गेह सिधारेत।
सुर दिव्धि विष्णु पास तब आए, वर देने के वचन सुनाए।
मांगे उमा वर पति तुम तिनसों, चाहत जग जिबुवन विधि जिनसों।
एवंस्तु कहि ते दोऊ गए, सुफल मनोरथ तुम्ने लाए।
करि विवाह शिव सों हे भामा, पुनः कहाई हर की बामा।
जो पढ़ैहे जन यह चालीसा, धन जन सुख देखैहे तेहि ईसा।

॥ दोहा ॥
कूट चंद्रिका सुभग शिर जयति जयति सुख खानि।
पार्वती निज भक्त हित रहसु सदा वरदानि॥

आरती श्री पार्वती जी की
जय पार्वती माता, जय पार्वती माता, ब्रह्म सनातन देवी शुभकल की दाता।
अरिकुलपदर्म बिनासनी जय सेवकत्राता, जगजीवन जगदंबा हर हर गुण गाता।
सिंह का बाहन साजे कुण्डल हैं साधा, देवबंधु जस गा वत नृत्य करत ता था।
सत्युग रूप शील अतिसुदर नाम सती कहलाता, हेमांचल घर जनम संख्या संग राता।
श्रुम्भ निरुम्भ किंदरे हेमांचल स्थाता, सहस्र भूज तनु धरिके चक्र लियो हाथा।
सुमित्र सुहृति है जनमी शिवसंग रंगराता, नन्दी भृंगी बीन लहि है हाथन मदमाता।
देवन अरज करत तब चित को लाता, गावत दे दे ताली मन में रंगराता।
श्री प्रताप आरती मैथा की जो कोई गाता, सदा सुखी नित रहहता सुख सम्यक्ते पाता।

||
श्री बगलामुखी चालीसा

॥ दोहा ॥
सिर नवाइं बगलामुखी, लिखिँ चालीसा आज।
कृपा कार्य मोपर सदा, पूर्ण हो मम काज॥

॥ चौथा ॥
जय जय जय श्री बगला माता, आदिशंकित सब जग की त्राता।
बगला सम तब आनन माता, ऐहि ते भयुं नाम विख्याता।
शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी, अस्तुति करहि देव नर-नारी।
पीतवसन तन पर तव राजे, हाथस्त हिप्प गदा विराजे।
तीन नयन गल चम्पक माला, अमित तेज प्रकट है भाला।
रत्न-जड़ित सिंहासन सोहे, शोभा निरित सकल जन मोहे।
आसन पीतवर्ण महरणी, भक्तन की तुम हो चरदानी।

पीताभ्युषण पीतहि चन्दन, सुर नर नाग करत सब वन्दन।
एहि विभी ध्यान हृदय में राखि, वेद पुराण सत्त अस भाखि।
अब पूजा विभी करैं प्रकाश, जाकि किये होत दुख-नाश।
प्रथमहि पीत ध्वजा फहरावे, पीतवसन देवी पहरावे।
कुकुम अक्षत मोदक बेसन, अबि गुलाल सुपारी चन्दन।
मस्तिष्क हरिद्रा अर फल पाना, सबहि चढ़े पहरी उर ध्याना।
धूप दीप कप्पूर की बाति, प्रेम-सहित तब करे आती।
अस्तुति करे हाथ दोउ जोरे, पुरवहु मातु मनोरथ मोरे।
मातु भगति तब सब सुख खानी, करहु कृपा मोपर जनजानी।
त्रिविध ताप सब दुःख नशावहु, तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़वहु।
बार-बार में बिनवारे तोहि, अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं।
पृज्ञानात में हवन करावे, सो नर प्रनवारित फल पावे।
सर्पं हों मरारे जो कोई, ताके वश सचराचर होई।
श्री बगलामुखी चालीसा

तिल तण्डुल संग श्रीर मिरावे, भक्ति प्रेम से हवन कराई।
दुःख दरिद्र व्यापे नहीं सोई, निशचय सुख-संपति सब होई।
फूल अशोक हवन जो करई, ताके गृह सुख-समपति भरई।
फल सेमर का होम करीजे, निशचय वाको रिपु सब छीजे।
गगुल पृत्त होम मे जो कोई, तेहि के वश में राजा होई।
गगुल तिल संग होम करावे, ताको सकल बध कट जावे।
बीजाक्षर का पाठ जो कराइ, बीजमन तुम्हरो उच्चराइ।
एक मास निशि जो कर जावा, तेहि कर मिटत सकल सन्ताप।
घर की शुद्ध भूमि जहैं होई, साधक जाप करै तहैं सोई।
सोइ इचित फल निशचय पावे, यामे नहीं कछू संशय लावै।
अध्वरा तीर नदी के जाई, साधक जाप करै मन लाई।
दस सहस्र जाप करै जो कोई, सकल काज तेहिकर सिधि होई।
जाप करै जो लक्ष्मी बारा, ताकर होय सुयश विस्तार।

श्री बगलामुखी चालीसा

जो तव नाम जपै मन लाई, अल्पकाल महैं रिपुहिं नसाई।
सप्तरात्रि जो जापहि नामा, वाको पूरन हो सब कामा।
नव दिन जाप करे जो कोई, व्याधि सहित ताकर तन होई।
ध्यान करै जो बोध्या नारी, पावे पुनाणिक फल चारी।
प्रातः सार्य अरु मध्याना, धरे ध्यान होवे कल्याना।
कहै लगी महिमा कहैं तिहारी, नाम सदा शुभ मंगलकारी।
पाठ करै जो नित्य चालीसा, तेहि पर कृपा कराइ गोरीशा।

लोहा।

सन्तशरण को तनय हैं, कुलपति मिश्र सुनाम।
हरिद्वार मण्डल बसूँ, धाम हरिपुर ग्राम।
उन्नीस सो पिचानबे चनू की, श्रावण शुक्ला मास।
चालीसा रचना कियैं, तव चरण पूछै दास।

॥ लोहा॥
आरती श्री बगलामुखी जी की

इय इय इय बगलामुखी माता, आरति करहुं तुम्हारी। तेक।।
पीत वसन तन पर तव सोहे, कुणडल की छौबी न्यायी।जय-जय।।
कर-कलालों में मुदुग धारी, अस्तुति करहि सकल नर-नारी।जय-जय।।
चम्पक माल गले लहरावे, सुर नर मुनि जय जयति उचायी।जय-जय।।
त्रिविध ताप मिटि जात सकल सब, भक्ति सदा तव है सुखस्वारी।जय-जय।।
पालत हरत सृजत तुम जग को, सब जीवन की हो रखावारी।जय-जय।।
मोह निशा में भ्रमत सकल जन, करहु हदय महें, तुम उजियारी।जय-जय।।
तिमिर नशावहु ज्ञान बहावहु, अम्बे तुम्ही हो असुरारी।जय-जय।।
संतन को सुख देत सदा ही, सब जन की तुम प्राण पियारी।जय-जय।।
तव चरणन जो ध्यान लगावे, ताको हो सब भव-भवहारी।जय-जय।।
प्रेम सहित जो करहि आरति, ते नर मोक्षधाम अधिकारी।जय-जय।।
दोहा—बगलामुखी की आरति, पड़ै सुनै जो कोई।

विनती कुलविनि मिश्र की, सुख-समृद्ध सब होय।।

श्री गंगा चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय जय जग पावनी जयति देवसरि गंग।
जय शिव जटा निवासस्नी अनुपम तुंग तरंग॥

॥ चौपाई ॥

जय जग जननि हरण अघ खानी, आनन्द करनि गंग महारानी।
जय भागीरथि सुरसरि माता, कलिमल मूल दलनि विख्याता।
जय जय जय हंसु सुता अघ हरनी, भूषम की माता जग जननी।
धवल कमल दल मम तनु साजे, लर्क शत श्रद्धा चन्द्र छवि लाजे।
वाहन मरक शिमला शुचि सोहे, अमिय कलश कर लर्क मन मोहे।
जाधूत रल कंचन आभूषण, हिय मणि हर, हरणितम दूषण।
जग पावनि त्रय ताप नसावनि, तरल तरंग तंग मन भावनि।
श्री गंगा चालीसा

जो गणपति अति पूज्य प्रधाना, तिहँ ते प्रथम गंगा असनाना। ब्रह्म कमण्डल वासिनि देवी, श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी। साठ सहत्र सुग्री सुत तारयो, गंगा सागर तीरथ धारयो। अगम तरंग उठयो मन भावन, लरिख तीरथ हरिद्वार सुहावन। तीरथ राज प्रयाग अश्रूंदट, धरयो मातु पुनि काशी करवट। धनि धनि सुरसरि स्वर्ग की सीढ़ि, तारणि अमित्त पितृ पद पीढ़ि। भागीरथ तप कियो अपारा, दियो ब्रह्म तब सुरसरि धारा। जब जग जननी चलयो हराई, शंभु जटा मह रहो समाई। वर्ष पर्यन्त गंगा महारानी, रहियो मंकु जटा भुलानी। मुनि भागीरथ शंभुहि ध्यायो, तब इंक बूढ़ जटा से पायो। तात मातु भई त्रय धारा, मृत्यु लोक, नभ अरु पातारा। गई पाताल प्रभावति नामा, मन्दाकिनी गई गगन ललंगमा। मृत्यु लोक जाहवी सुहावन, कलिमल हरिण अगम जग पावनि।

श्री गंगा चालीसा

धनि मड़या तव महिमा भारी, धर्म धुरि कलि कलुष कुठारी। मातु प्रभावति धनि मन्दाकिनी, धनि सुरसरि सकल भयनासिनी। पान करत निमल गंगा जल, पावत मन इचछित अननत फल। पूरब जन्म पुण्य जब जागत, तबहि ध्यान गंगा भंह लागत। जई पयु उतावहि, तड़ जगि अश्वमेध फल पावहि। महा पुतित जिन कादु न तारे, तति तारे इक नाम तिहारे। श्वत योजनहू से जो ध्यावहि, निशचत विषु लोक पद पावहि। नाम भजत अगणित अघ नाशी, विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशी। जिमि धन मूल धर्म अरु दाना, धर्म मूल गंगाजल पाना। तव गुण गुणान करत दुख भाजत, गृह गृह सम्पति सुपरि विराजत। गंगाहि नेम सहित नित ध्यावत, दुर्जनहू सजन पद पावत। बुद्धिहीन विद्या बल पावः, रोगी रोग मुक्त है जावे। गंगा गंगा जो नर कहहीं, भूखे नंगे कवरुँ न रहहैं।
श्री गंगा चालीसा

निकसत ही मुख गंगा माईं, श्रवण दांबि यम चलहि पराई।
महां अधिन अधमन कहें तारे, भए नर्क के बन दिवारे।
जो नर जपे गंगा शत नामा, सकल सिद्ध पूरण है कामा।
सब सुख भोग परम पद पावहि, आवागमन रहित है जावहि।
धनि मड़या सुरसर सुखदेनी, धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी।
ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा, सुनदरदास गंगा कर दासा।
जो यह पढ़े गंगा चालीसा, मिलै भक्ति अविरल वागीसा।

|| दोहा ||

नित नव सुख सम्पति लहीं, धरें, गंगा का ध्यान।
अनं समय सुपुर्ण बसे, सादर बैठि विमान।
सम्पत्ति भूज नथ दिशि, राम जन्म दिन चैत्र।
पूरण चालीसा कियो, हरि भक्तन हित नैण।

आरती श्री गंगा जी की

ॐ गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पढ़े जो तेरी, सो नर तर जाता।
पुत्र सगर के तारे सब जग की ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।
एक ही बार जो तेरी शरणगति आता।
यम की त्रास मिटाकर, परम गति पाता।
आरती मातु तुम्हारी जो जन नित गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता।
ॐ जय गंगे माता।
श्री नर्मदा चालीसा

॥ दोहा ॥
देवि पूजिता नर्मदा, महिमा बड़ी अपार।
चालीसा वर्णन करत, कवि अरु भक्त उदार॥
इनकी सेवा से सदा, मिटते पाप महान।
तट पर कर जप दान नर, पाते हैं नित ज्ञान॥

॥ चौपाई ॥
जय-जय-जय नर्मदा भवानी, तुम्हारी महिमा सब जग जानी।
अमरकंठ से निकली माता, सर्व सिद्धि नव निधि की दाता।
कन्या रूप सकल गुण खानी, जब प्रकटी नर्मदा भवानी।
सप्तमी सूर्य मकर रविवारा, अश्वनि माघ मास अवतारा।

श्री नर्मदा चालीसा

॥ लघु ॥
वाहन मकर आपको साजें, कमल पुष्प पर आप विराजें।
ब्रह्म हरि हर तुमको ध्यावें, तब ही मनवाण्डित फल पावें।
दर्शन करत पाप कटी जाते, कोटि भक्त गण नित्य नहाते।
जो नर तुमको नित ही ध्यावें, वह नर प्रभु लोक को जावें।
मगरमच्छ तुम में सुख पावें, अन्तिम समय परमपद पावें।
मस्तक मुकुट सदा ही साजें, पांव पैंजनी नित ही राजें।
कल-कल ध्यान करती हो माता, पाप ताप हरती हो माता।
पूर्व से पश्चिम की ओरा, बहरी माता नाचत मोरा।
शौनक ऋषि तुम्हारी गुण गावें, सूर्य आदि तुम्हारी यश गावें।
शिव गणेश भी तेरे गुण गावें, सकल देव गण तुमको ध्यावें।
कोटि तीर्थ नर्मदा किनारे, ये सब कहलाते दुःख हारे।
मनोकामना पूरा करती, सर्व दुःख माँ नित ही हरती।
कनखल में गंगा की महिमा, कुरुक्षेत्र में सरसुति महिमा।
पर नर्मदा ग्राम जंगल में, नित रहती माता मंगल में।
एक बार करके असनाना, तरत पीढ़ी है नर नाना।
मेकल कन्या तुम ही रेवा, तुम्हारी भजन करें नित देवा।
जला शंकरी नाम तुम्हारा, तुमने कोटि जनों को तारा।
समस्द्वरा नर्मदा तुम हो, पाप मोचनी रेवा तुम हो।
तुम महिमा कहि नहीं जाई, करत न बनती मातु बड़ाई।
जल प्रताप तुमें अति माता, जो रमणीय तथा सुख दाता।
चाल सरिणी सम है तुम्हारी, महिमा अति अपार है तुम्हारी।
तुम में पड़ी अस्थि भी भारी, छुवत पाशान होत वर वारी।
यमुना में जो मनुज नहाता, सात दिनों में वह फल पाता।
सरसुति तीन दिनों में देतीं, गंगा तुरत बाद ही देतीं।
पर रेवा का दर्शन करके, मानव फल पाता मन भर के।
तुम्हारी महिमा है अति भारी, जिसको गाते हैं नर-नारी।

जो नर तुम में नित्य नहाता, रूढ लोक में पूजा जाता।
जड़ी बूटियां तत पर राजें, मोहक दृश्य सदा ही साजें।
वायु सुगतित चतारी तीरा, जो हरती नर तन की पीरा।
घाट-घाट की महिमा भारी, कवि भी गा नहीं सकते सारी।
नहीं जानूँ में तुम्हारी पूजा, और सहारा नहीं बह दूजा।
हो प्रसन्न ऊपर मम माता, तुम ही मातु मोक्ष की दाता।
जो मानव यह नित है पढ़ता, उसका मान सदा ही बढ़ता।
जो शत बार इसे है गाता, वह विद्या धन दौलत पाता。
अगणित बार पढ़े जो कोई, पूरण मनोकामना होई।
सबके उर में बसत नर्मदा, यहां वहां सर्वत्र नर्मदा।

॥ तोहाँ ॥
भक्ति भाव उर आनि के, जो करता है जाप।
माता जी की कृपा से, दूर होत सन्ताप॥
आरती श्री नर्मदा जी की

ॐ जय जगदानन्दी, मैया जय आनंद कन्दी।
ब्रह्मा हरिहर शंकर रेवा शिव हरि शंकर संत्री पालनी। ॐ जय
देवी नारद शारद तुम वरदायक, अभिनव पदचंद्री।
सुर नर मुनि जन सेवत, सुर नर मुनि शारद पदवनी। ॐ जय
देवी धूमक वाहन जात वीणा वादयनी।
झूमकत झूमकत झूमकत झनन झनन रमती राजनी। ॐ जय
देवी वाजत ताल मृदुगा सुरमण्डल रामती।
तोड़ीतान तोड़ीतान तोड़ीतान तुर्क तुर्क तुर्क रामती सुरवनी। ॐ जय
देवी सकल भुवन पर आप विराजत निशादिन आनंदी।
गावत गंगा शंकर, सेवत रेवा शंकर तुम भव मेंतनी। ॐ जय
मैया जी को कंचन थाला विराजत अगर कपूर बाती।
अमरकंट में विराजत, घाटन घाट कोटी रतन जोती। ॐ जय
मैया जी की आरती निशादिन पढ़ि गावें, हो रेवा जुग जुग नर गावें।
भजत शिवानंद स्वामी जपत हरि मन वाचित फल पावें। ॐ जय

श्री शारदा चालीसा

॥ दोहा ॥
मृदुति स्वयंभू शारदा, मैहर आन विराज।
माला, पुतलक, धारिणी, वीणा कर में साज॥

॥ चोपाई ॥
जय जय जय शारदा महारानी, आदि श्रीक मं जग कल्याणी।
रूप चतुर्भुज तुम्हरो माता, तीन लोक महं तुम विख्याता।
दो सहस्र वसीहि अनुमाना, प्रगट भई शारद जग जाना।
मैहर नगर विश्व विख्याता, जहाँ बैठी शारद जग माता।
नित्य परवत शारदा वासा, मैहर नगरी धर्म प्रकाशा।
शारद इन्द्र सम बदन तुम्हारो, रूप चतुर्भुज अतिशय ध्याने।
कोटि सूर्य सम तन हुति पावन, राज हंस तुम्हारो शचि वाहन।
श्री शारदा चालीसा

कानन कुण्डल लोल सुहावहि, उरमणि भाल अनूप दिखावहि।
बीणा पुस्तक अभय धारिणि, जगत्मातु तुम जग विहारिणि।
ब्रह्म सुता अखंड अनूपा, शारद गुण गावत सुरभूपा।
हरिहर कराहि शारदा बदन, ब्रह्म कुबेर कराहि अभिनन्दन।
शारद रूप चण्डी अवतारा, चण्ड-मुण्ड असुरन संहारा।
महिषा सुर बध कौनि भवानि, दुर्गा बन शारद कल्याणि।
धरा रूप शारद भई चण्डी, रक्त बीज काटा रण मुण्डी।
तुलसी सूर्य आदि विद्याना, शारद सुयश सदैव बखाना।
कालिदास भए अति विखयाता, तुम्हारी दया शारदा माता।
वाल्मीक नारद मुनि देवा, मुनि-मुनि कराहि शारदा सेवा।
चरण-शरण देवहु जग माया, सब जग व्यापिह शारद माया।
अणु-परमाणु शारदा वासा, परम शक्तिमय परम प्रकाशा।
हे शारद तुम ब्रह्म स्वरूपा, शिव विरंचि पूजहि नर भूपा।

ब्रह्म शक्ति नहि एकउ भेदा, शारद के गुण गावहि बेदा।
जय जय बदनि विश्व स्वरूपा, निर्गुण-समुगुण शारदहि रूपा।
सुमिरहु शारद नाम अखंडा, व्यापि नहि कलिकाल प्रचंडा।
सूर्य चन्द्र नभ मण्डल तारे, शारद कृपा चमकते सारे।
उद्धव स्थिति प्रलय कारिणि, बनुङ शारद जगत तारिणि।
दुःख दरिद्र सब जाहि नसाई, तुम्हारी कृपा शारदा माई।
परम पुनीति जगत अधारा, मातु शारदा ज्ञान तुम्हारा।
विद्या बुद्धि मिलहि सुखदानि, जय जय जय शारदा भवानि।
शारदे पूजन जो जन करहि, निर्चर ते भव सागर तारी।
शारद कृपा मिलहि शुचि ज्ञाना, होई सकल विधि अति कल्याणा।
ज्ञ में विवेय महा दुःख दाई, भजहूँ शारदा अति सुख पाई।
परम प्रकाश शारदा तोरा, दिव्य किरण देवहुँ मम ओरा।
परमानंद मगन मन होई, मातु शारदा सुमिरहु जोई।
श्री शारदा चालीसा

चित्र शान्त होवाहि जप ध्याना, भज्जुँ शारदा होवाहि झाना।
रचना रचित शारदा केरी, पाठ करहि भव छटई पेरी।
सत-सत् नमन पढ़िवे धरिध्याना, शारद मातु करहि कल्याणा।
शारद महिमा को जग जाना, नेति-नेति कह वेद बखाना।
सत-सत् नमन शारदा तोरा, कृपा दृष्टि कीजे मम ओरा।
जो जन सेवा करहि तुम्हारी, तिन कहं कतहुं नाहि दुःखिन्नारी।
जो यह पाठ करै चालीसा, मातु शारदा देहुं आशीषा।

॥ द्वेषा ॥

बन्दूँ शारद चरण रज, भक्ति ज्ञान मोहि देहुँ।
सकल अविद्या दूर कर, सदा बसहु उरगोहुँ।
जय-जय माई शारदा, मेहर तेरी धाम।
शरण मातु मोहि लीजिए, तोहि भजहुं निष्काम॥

आरती श्री शारदा जी की

भुवन विराजी शारदा, महिमा अपरम्पर।
भक्तों के कल्याण को धरो मात अवतार॥
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाउँ
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाउँ-१
नित गाउँ मैया नित गाउँ-२
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाउँ-२
श्रद्धा को दीया प्रीत की बाती असुगुन तेल चढ़ाऊँ
श्रद्धा को दीया प्रीत की बाती असुगुन तेल चढ़ाऊँ।
दर्श तोरे पाऊँ
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाउँ-३
मन की माला आँख के मोती भाव के फूल चढ़ाऊँ
मन की माला आँख के मोती भाव के फूल चढ़ाऊँ।
दर्श तोरे पाऊँ
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाउँ-३
बल को भोग स्वांस दिन राती कंधे से विनय सुनाऊँ
बल को भोगे दर्श तोरे पाॅं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं त-3
tप को हार कर्ण को टीका ध्यान की ध्वजा चढ़ाॅं
tप को हार कर्ण को टीका ध्यान की ध्वजा चढ़ाॅं। दर्श तोरे पाॅं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं त-3
माँ के भजन साधु सतन को आरती रोज सुनाओँ
माँ के भजन साधु सतन को आरती रोज सुनाओ। दर्श तोरे पाॅं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं त-3
सुमर-सुमर माँ के जस गावें चरनन शीश नवाओँ
सुमर-सुमर माँ के जस गावें चरनन शीश नवाओ। दर्श तोरे पाॅं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं
मैया शारदा तोरे दरबार आरती नित गाऊं

श्री शाक्मभरी चालीसा

॥ दोहा ॥
बन्दू माँ शाक्मभरी चरणगुरु का धरकर ध्यान।
शाक्मभरी माँ चालीसा का कोरे प्रश्न।
आनन्दमयी जगद्विका-अनन्त रूप भण्डार।
माँ शाक्मभरी की कृपा बनी रहे हर बार॥

॥ वीणाई ॥
शाक्मभरी माँ अति सुखकारी, पूर्ण ब्रह्म सदा दुःख हारी।
कारण करण जगत की दाता, आनन्द चेतन विश्व विधाता।
अमर जोत है मात तुम्हारी, तुम ही सदा भगतन हिंदकारी।
महिमा अभित अथाह अर्पणा, ब्रह्म हरि हर मात अर्पणा।
श्री शाक्मभरी चालीसा

ज्ञान राशि हो दीन दयाली, शरणागत घर भरती खुशहाली।
नारायणी तुम ब्रह्म प्रकाशी, जल-थल-नभ हो अविनाशी।
कमल कानिपण शान्ति अनपा, जोतमन मयादा जोत स्वरुपा।
जब-जब भक्तों नें हैं ध्याई, जोत अपनी प्रकट हो आई।
प्यारी बहन के संग विराजे, मात शांताक्षी संग ही साजे।
भीम भर्यकर रूप कराली, तीसरी बहन की जोत निराली।
चौथी बहिन भ्रामरी तेरी, अदभुत चंचल चित चितेरी।
सम्पुंख भरव बीर खड़ा हैं, दानव दल से खूब लड़ा है।
शिव शंकर प्रभु भोले भण्डारी, सदा शाक्मभरी माँ का चेता।
हाथ ध्वजा हनुमान विराजे, युद्ध भूमि में माँ संग साजे।
काल रात्रि धरे कराली, बहिन मात की अति विकराली।
दश विद्या नव दुर्गा आदि, ध्याते तुम्हें परमार्थ वादि।

श्री शाक्मभरी चालीसा

अष्ट सिद्धि गणपति जी दाता, बाल रूप शरणागत माता।
माँ भण्डारे के रखवारी, प्रथम पूजने के अधिकारी।
जग की एक भ्रमण की कारण, शिव शक्ति हो दुष्ट विदारण।
भूरा नेब लौक़ा दूजा, जिसकी होती पहली पूजा।
बली बजरंगी तेरा चेता, चले संग यश गाता तेरा।
पाँच कोस की खोल तुम्हारी, तेरी लीला अति विस्तारी।
रक्त दत्तिका तुम्हारी बनी हो, रक्त पान कर असुर हनी हो।
रक्त बीज का नाश किया था, छिन्न मस्तिका रूप लिया था।
सिद्ध योगिनी सहस्या राजे, सात कुण्ड में आप विराजे।
रूप मराल का तुमने धारा, भोजन दे दे जन जन तारा।
शोक पात से मुनि जन तारे, शोक पात जन हुँख निवारे।
भद्र काली कम्पलेखवर आई, कान शिवा भगत सुखदाई।
श्री शाक्म्बरी चालीसा

भोग भण्डारा हलवा पूरी, ध्वजा नारियल तिलक सिंदुरी।
लाल चुनरी लगती प्यारी, ये ही भेट ले दुख निवारी।
अंधे को तुम नयन दिखाती, कोड़ी काया सफल बनाती।
बाँझन के घर बाल खिलाती, निर्धन को धन खूब दिलाती।
सुख दे दे भगत को तारे, साधु सजन काज संवारे।
भूमण्डल से जोत प्रकाशी, शाक्म्बरी माँ दुःख की नाशी।
मधुर मधुर मुस्कान तुम्हारी, जमा जम पहचान हमारी।
चरण कमल तेरे बलिहारी, जै जै जै जग जननी तुम्हारी।
कान्ता चालीसा अति सुखकारी, संकट दुःख दुर्गति सब दरी।
जो कोई जन चालीसा गावे, मात कृपा अति सुख पावे।
जो कोई जन चालीसा गावे, मात कृपा अति सुख पावे।
कान्ता प्रसाद जगाधरी वासी, भाव शाक्म्बरी तत्व प्रकाशी।

श्री शाक्म्बरी चालीसा

बार बार कहें कर जोरी, विनती सुन शाक्म्बरी मोरी।
में सेवक हूँ दास तुम्हारा, जननी करना भव निलंबा।
यह सो बार पाठ करे कोई, मातु कृपा अधिकारी सोई।
संकट कष्ट को मात निवारे, शोक मोह शत्रु न संहारे।
निर्धन धन सुख सम्पत्ति पावे, श्रद्धा भक्ति से चालीसा गावे।
नौ रात्रों तक दीप जगावे, सपरिवार मगन हो गावे।
प्रेम से पाठ करे मन लाई, कान्ता शाक्म्बरी अति सुखदाई।
॥ दोहा ॥

dुर्गा सुर संहारणि, करणि जग के काज।
शाक्म्बरी जननी शिवें रखना मेरी लाज।
युग युग तक व्रत तेरा, करे भक्त उद्भार।
वो ही तेरा लाड़ला, आवे तेरे द्वार॥
आरती श्री शाकम्भरी देवी जी की
हरि ॐ श्री शाकम्भर अम्बा जी की आरती कीजो अदृश्य रूप हृदय धर लीजो, शताष्ट्री दयालु की आरती कीजो। तुम परिपूर्ण आदि भवानी माँ, सब घट तुम आप बखानी माँ। शाकम्भर अम्बा जी की आरती कीजो तुम्हाँ हो शाकम्भरी, तुम ही हो शताष्ट्री माँ, शिव मूर्ति माया, तुम ही हो प्रकाश जी माँ। श्री शाकम्भर नित जो नर-नारी अम्बे आरती गावे माँ, इच्छा पूरण कीजो, शाकम्भरी दर्शन पावे माँ। श्री शाकम्भर जो नर आरती पढ़े पढ़वे माँ, जो नर आरती सुने सुनावे माँ।
बसे बैंकुण्ठ शाकम्भर दर्शन पावे। श्री शाकम्भर।

श्री ललिता चालीसा
Jayñati jñayñi jay lalitē mātā, tab guṇ mahimā ha viññātā. tū sunde, trinīśvē trī puṣṭi śvē, suṁ nā mūni te rē pad sāvē. tū kālīyāni kṣīt niyārīni, tū sukh dārīni, vīrād hārīni. mōh vināśīni dētō naśīni, bhakt bhāvinī jyotī prakāśīni. āadī ṣaṁkā śri vīrīṇa rūpa, chakr śvāmīni dēh anūpā. hṛday niyāsīni bhakt tārīṇī, nāna kṣīt vīyātī dāl hārīṇī. dāś vīrīṇa ha rūpa tuṣhāra, śri chandesvarī! cāmīṣ āyāra. dhūmā, bāgala, bāṛī, tārā, bhuṅkeśvīri, kāmāla, viśārā. bōndā, cīnāmāsta, mātānī, lalitē! ṣaṁkā tuṃhāri sāṅgī. lalitē tuṃ hō jyotītī bāla, bhakt jñānān kā kām māṅhāla. bhārī sāṅkēt jāb-jāb āyē, unāsē tuṃnē bhakt bāchāyē. jījāne kṛṣṇa tuṃhāri pāi, uskēi sab vīdhē sē bo āiō.
श्री ललिता चालीसा

संकट दूर करो माँ भारी, भक्त जनों को आस तुम्हारी। त्रिपुरे शरीरी, शैलजा, भवानी, जय जय जय शिव की महारानी। योग सिद्धि पावें सब योगी, भोगें भोग, महा सुख भोगी। कुपा तुम्हारी पाके माता, जीवन सुखमय है बन जाता। दुःखियों को तुमने अपनाया, महामूढ़ जो शरण न आया। तुमने जिसकी ओर निहारा, मिली उसे सम्पत्ति, सुख सारा। आदि शक्ति जय त्रिपुर-प्यारी, महाशक्ति जय जय, भवयारी। कुल योगिनी, कुण्डलिनी रूपा, तीला ललिते करें अनूपा। महा महेश्वरी, महा शक्ति दे, त्रिपुर-सुन्दरी सदा भक्ति दे। महा महानदे, कल्याणी, मूकों को देती हो लाणी। इच्छा-ज्ञान-क्रिया का भागी, होता तब सेवा अनुरागी। जो ललिते तेवा गुण गावे, उसे न कोई कष्ट सतावे। सर्व मंगले ज्वाला-मालिनी, तुम हो सर्व शक्ति संचालिनी।

आया माँ जो शरण तुम्हारी, विपद हरी उसी की सरारी। नामा-कर्षणी, चित्ता-कर्षणी, सर्व-मोहिनी सब सुख-वर्षणी। महिमा तब सब जग विश्वाता, तुम हो दयामयी जगमाता। 'सब सौभाग्य-दायिनी ललिता, तुम हो सुखदा करुणा कलिता। आनंद, सुख, सम्पत्ति देती हो, कष्ट भयानक हर लेती हो। मन से जो जन तुमको ध्यावे, वह तुरन्त मनवांछित पावे। लक्ष्मी, दुर्गा, तुम हो काली, तुम्हीं शरदा चक्र-कपाली। मूलाधार निवासिनी जय जय, महस्त गामिनी माँ जय जय। छः चक्रों को भेदने चाली, करती हो सबकी रक्षाली। योगी भोगी को धी कामी, सब हें सेवक सब अनुगमी। सबको पार लगाती हो माँ, सब पर दया दिखाती हो माँ। हेमावती, उमा, ब्रह्माणी, भण्डासुर का, हदय विदारिणी। सर्व चिपत हर, सर्वाधारे, तुमने कुटिल कुपंप्री तारे।
चन्द्र-धारणी, नैमिषवासिनी, कृपा करो ललिते अद्यान्तिनी।
भक्त जनों को दरस दिखाओ, संशय भय सब शीघ्र मिटाओ।
जो कोई पढ़े ललिता चालीसा, होवे सुख आनन्द अधीसा।
जिस पर कोई संकट आवे, पाठ करे संकट मिट जावे।
ध्यान लगा पढ़े इक्किस बारा, पूर्ण मनोरथ होवे सारा।
पुत्र-हीन सत्तात सुख पावे, निर्धन धनी बने गुण गावे।
इस विधि पाठ करे जो कोई, दुःख बन्धन छूटे सुख होई।
जितेन्द्र चन्द्र भारतीय बतावें, पढ़े चालीसा तो सुख पावें।
सबसे लघु उपाय यह जानो, सिद्ध होय मन में जो ठानो।
ललिता करे हृदय में बासा, सिद्धि देत ललिता चालीसा।

|| तोहा ||
ललिते पाँ अब कृपा करो, सिद्ध करो सब काम।
श्रद्धा से सिर नाय कर, करते तुम्हें प्रणाम।

आरति श्री ललिता जी की

जय शरण वरण नमो नम:।
श्री मातेश्वरि जय त्रिपुरेश्वरि राजेश्वरि जय नमो नम:।
करुणामयी सकल अघ हारिणि अमृत वर्षिणि नमो नम:।।
जय शरण वरण नमो नम: श्री मातेश्वरि जय त्रिपुरेश्वरि।
अषुभ विनाशिनि, सब सुख दायिनि खळदल नाशिनि नमो नम:।।
भण्डासुर वधकारिणि जय माँ करुणा कलिते नमो नम:।।
जय शरण वरण नमो नम: श्री मातेश्वरि जय त्रिपुरेश्वरि।
भव भय हारिणि कष्ट निवारिणि शरणागति दो नमो नम:।।
शिव भामिनि साधक मन हारिणि आदि शक्ति जय नमो नम:।।
जय शरण वरण नमो नम: जय त्रिपुर सुदरि नमो नम:।।
जय राजेश्वरि जय नमो नम: जय ललिते माता नमो नम:।।
श्री मातेश्वरि जय त्रिपुरेश्वरि राजेश्वरि जय नमो नम:।।

जय शरण वरण नमो नम:।।
श्री राणी सती चालीसा

|| दोहा ||
श्री गुरु पद पंकज नमन, दृष्टि भाव सुधार।
राणी सती सुबिन्दुल यश, बरणाँ मति अनुसार।
कामक्रोध मद लोभ में, भरम रहो संसार।
शरण गाहि करुणामयी, सुख सम्पति संचार।

|| चीपाई ||
नमो नमो श्री सती भवान, जग विख्यात सभी मन मानी।
नमो नमो संकटकृ हरनी, मन वांछित पूरण सब करनी।
नमो नमो जय जय जयदेवी, भक्तन काज न होय विलंब।
नमो नमो जय-जय जय तारिणी, सेवक जन के काज सुधारिणी।

श्री राणी सती चालीसा

|| देवी ||
दिव्य रूप सिर चूंदर सोहे, जगमगात कुष्णल मन मोहे।
माँ निश्चिन्दुर सुकाजर ठीकी, गज मुक्ता नथ सुन्दर नीकी।
गल बैजनी माल बिराजें, सोलह माज बदन पे साजें।
ध्यान भायु गुरुसमर्जी को, महम डोकवा जम सती को।
तनाधन दास पतिवर पाये, आनंद मंगल होत सवाये।
जालौराम पुजत व्री होके, बंश पवित्र किया कुल दोके।
पति देव रण माँ झुझारे, सती रूप हो श्रदु संहरे।
पति संग ले सदृ गति पाई, सुर मन हर्ष सुमन बससाई।
ध्यान ध्यान उस रणा जी को, सुपुरल हुवा कर दरस सती को।
विक्रम तेरा सौ बावनकू, मंगिसर बदी नौमी मंगलकू।
नगर झुझार प्रगटी माता, जग विख्यात सुमंगल दाता।
दूप देश के यात्री आवे, धूप दीप नैवेद्य चढावे।
उछाड़–उछाड़ते हैं आनंद से, पूजा तन मन धन श्री फल से।
जात जड़ूला रात जगावे, बाँसल गोती सभी मनावे।
पूजन पाठ पठन द्विज करते, वेद ध्वनि मु म वे उच्चरते।
नाना भूते–भूति पकवाना, विप्रजनों को न्यूत जिमाना।
श्रद्धा भक्ति सहित हरणते, सेवक मन वाँछित फल वाते।
जय जय कार करे नर नारी, श्री राणी सती की बलिहारी।
द्वार कौट नित नौबत बाजे, होत शृंगार साज अति साजे।
रत सिंहासन झलके नीको, पल–पल छिन–छिन ध्यान सती को।
भात्र कुण्ड माक्स दिन लीला, भरता मेला रंग रंगीला।
भक्त सुजन की सकड़ भीड़ है, दर्शन के हित नहीं छोड़ है।
अटल भूवन में ज्योति तिवारी, तेज पुंज जग माँय उज्ज्वारी।
आदि शक्ति में मिली न्यूति है, देश देश में भव भूति है।

नाना विधि सो पूजा करते, निश दिन ध्यान तिहारा धरते।
कस्त निवारणी, दु:ख नाशिनी, करुणामयी झुँझूनू वासिनी।
प्रथम सती नारायणी नामों, खाद्व और हुई इसी धामा।
तिहूँ लोक में कीति छाई, श्री राणी सती की फिरी दुहाई।
सुबह शाम आरती उतारे, नौबत घण्टा ध्वनि टूँकारे।
राग छतियों बाजा बाजे, तेरहुँ मण्ड सुन्दर अति साजे।
ग्राहि ग्राहि में शरण आपके, पूजा मन की आश दास की।
पुजा को एक भरोसो तेरे, आन सुधारे कारज मेरे।
पूजा जप तप नेम न जानूँ, निर्मल महिमा नित्य बखानूँ।
भक्तन की आपति हर लेनी, पुजा पी वर सम्पति देनी।
पढ़े यह चालीसा जो शतनारा, होय सिद्ध मन माँह विचारा।
‘गोपीराम’ (मैं) शरण ली धारी, क्षमा करो सब चूक हमारी।
दुख आपद विपदा हरण, जग जीवन आधार।
बिगड़ी बात सुधारिये, सब अपराध बिसार।

आरती श्री राणीसती जी की
जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्ब सती जी।
अपने भक्तजनों की दूर करो विपत्ती। हरि।
अपने अनुत्सर्ज न्यौत्तिं अक्षणियं मंदिर चंडुकंकूभा।
दुर्रजन दलन खड़ग की, विश्वुसम गृहिता। हरि।
मरकत मणि मंदिर अति मंजुल, शोभा लिख न बड़े।
ललित ध्वजा चंडुँ ओर, कंचन कलश धेरे। हरि।
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदुंग धुरे।
किना गायन करते, वेद ध्वनि उचरे। हरि।

संत मातृका करें आरति, सुरगम ध्यान धरे।
विविध प्रकार के च्युजन, श्री फल भेंट धरे। हरि।
संकट विकट विद्विशा, नाशनी हो कुमत।
सेवक जन हदय पतले, मृदुल करन सुमत। हरि।
अमल कमल दल लोचनी, मौचनी त्रय ताप।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता। हरि।
श्री राणीसती मैयाजी की आरति, जो कोई नर गावे।
पदनसिद्ध नवनिधि, मनवाणियत फल पावे। हरि।

रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार (उ. प्र.)
फोन : (0133) 426297, 426195